अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

♦ संपादक ♦
डॉ. महेन्द्र कर्णावट

वर्ष : 54 ■ अंक 24 ■ 16-31 अक्टूबर, 2009

❑ निर्माण करें आध्यात्मिक परिवार का	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
❑ दशहरा के दस शुभ चिह्न	*डॉ. सरोज कुमार वर्मा*	6
❑ सामाजीकरण के वाहक हमारे त्यौहार	*डॉ. पवन कुमार खरे*	8
❑ मंदिर में नमाज अदा कर खोलते हैं रोजा	*अणुव्रत डेस्क*	12
❑ दीपोत्सव का उद्देश्य	*अशोक सहजानन्द*	15
❑ अध्यात्म और विज्ञान का समागम	*दयानन्द भार्गव*	17
❑ पांच की जान बचाई - मुकेश तंवर	*रजनीकांत शुक्ल*	18
❑ स्वस्थ जीवन और आहार संतुलन	*मुनि किशनलाल*	20

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

■ *सदस्यता शुल्क :*
- **एक प्रति :** बारह रु.
- **वार्षिक :** 300 रु.
- **त्रैवार्षिक :** 700 रु.
- **दस वर्षीय :** 2000 रु.

■ *विज्ञापन सहयोग:*
- **मुख पृष्ठ रंगीन 4 :** 10,000 रु.
- **मुखपृष्ठ रंगीन 2-3 :** 8,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ पूरा :** 3,000 रु.
- **साधारण पृष्ठ आधा :** 2,000 रु.

■ *शुल्क भेजने का पता :*

अणुव्रत महासमिति, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-2 (भारत)
- **फोन:** 23233345, 23239963
- **फैक्स:** (011) 23239963
- **E-mail :** anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
- **Website :** anuvratinfo.org

■ स्तंभ

❑ संपादकीय	2
❑ राष्ट्र चिंतन	5
❑ कविता	7, 10, 11, 12, 13, 14
❑ झाँकी है हिन्दुस्तान की	16
❑ प्रेरणा	19
❑ अणुव्रत आंदोलन	23-40

❑ संपादकीय ❑

संयम ही जीवन है

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहनसिंह के इस वक्तव्य ने भारतीय राजनीति में भूचाल ला दिया "बड़े लोगों द्वारा बड़े स्तर पर जो भ्रष्टाचार हो रहा है उसे रोकना आवश्यक है।" बड़े पैमाने पर हो रहे भ्रष्टाचार ने हमारे विकास क्रम में दीमक लगा दी है इसे प्रधानमंत्री सार्वजनिक रूप से स्वीकार करें, ऐसा बहुत वर्षों बाद हुआ है।

भ्रष्टाचार पर प्रहार के साथ ही कांग्रेस का यह आह्वान कि खर्च में कमी करो, सादगी को अपनाओ एवं संयम स्वीकारो ने भारतीय राजनेताओं को यह भी सोचने के लिए बाध्य किया है कि जिस देश में नैतिक मूल्य नहीं हो क्या उसका सर्वांगीण विकास संभव है?

सभी राजनैतिक दल एवं राजनेता सिद्धांतों की बात करते हैं, स्वयं को ईमानदार और राष्ट्रभक्त बतलाते हैं फिर भी देश में नैतिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है और भ्रष्टाचाररूपी दलदल की खाई प्रतिदिन बढ़ती जा रही है इसका अर्थ क्या है?

राजनीति की इसी उठापटक के बीच स्वस्थ होने के उपरांत मैं 17 सितंबर को अणुव्रत भवन दिल्ली पहुंचा। बारह दिवसीय इस प्रवास में अणुव्रत भवन दिल्ली में ही तिरूपुर से आगत कमलेश भादानी एवं अहमदाबाद से समागत निर्मल जैन (सुराणा) से हुई मुलाकात और बातचीत ने मेरे कान खड़े कर दिये। **निर्मल सुराणा कहते हैं जो व्यक्ति झूठ बोलता है, बेईमानी करता है वह गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ का अनुयायी हो ही नहीं सकता। अर्थयुग में एक व्यापारी इस तरह की बात कहें, तो चौंक उठना स्वाभाविक है।** सुराणाजी आगे कहते हैं महेन्द्र भाई! हमने व्यापार में अपनी साख बनाई है। हमारे ग्राहक यह कहते हैं कि यह गांठ निर्मल जैन के यहां से आई है इसलिए इसकी जांच करने की जरूरत ही नहीं है। यही हमारी पहचान है, जो हमारे स्व. पिताश्री भंवरलाल सुराणा लाडनूं ने हमें विरासत में दी है। हमें खुशी है कि हम पिताश्री की विरासत के सहारे अपना व्यापार कर रहे हैं। पिताश्री के जीवन में कभी रुपये-पैसे का योग नहीं बना, उन्होंने बहुत कष्ट सहे लेकिन अपने गुरू के प्रति उनकी श्रद्धा अडिग रही। सदैव सत्य पथ पर चले और हमें भी सत्य मार्ग पर चलने के संस्कार दिये, जिसके सहारे आज हम वहां से यहां तक पहुंचे हैं।

अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति के सदस्य कमलेश भादानी अपने जीवन पृष्ठों को खोलते हुए कहते हैं तिरूपुर के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का मेरे पास फोन आया और कहा आज हमारी चाय-पार्टी है, अतः अंग्रेजी शराब की कुछ बोतल भिजवा देना। मैंने फोन पर तत्काल मना कर दिया मैं यह नहीं कर सकता। पुलिस अधिकारी पुनः बोला कमलेश क्या कह रहे हो! मैंने जोर से फोन पर बोला मैं यह नहीं कर सकता। अपनी गर्दन कटा सकता हूं, पर किसी को शराब नहीं पिला सकता। तुम्हें जो करना हो कर लेना। मेरे इस जवाब ने पुलिस अधिकारी को सोचने पर मजबूर कर दिया। दो दिन बाद आकर उसने मेरे से क्षमा मांगी। आज वह मेरा निकटस्थ मित्र है।

राजनीतिक बयानबाजी का असर कितना होगा हम सभी जानते हैं। मनमोहन सिंह मंत्रिमंडल के अनेक मंत्रियों पर भ्रष्टाचार एवं फिजूलखर्ची के गंभीर आरोप हैं। क्या वे लोग जिनकी नस-नस में अनैतिकता समा गई है भ्रष्टाचार को छोड़ सदाचार की तरफ बढ़ सकेंगे? फिलहाल तो ऐसा नहीं लग रहा है। इसके विपरीत अपने धर्मगुरु का उपदेश सुन कुछेक व्यक्ति इस दलदल से बाहर निकल नैतिकता को जीवन में उतार रहे हैं, यह शुभ संकेत है। निर्मल सुराणा एवं कमलेश भादानी के जीवन पृष्ठों को इसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए और धर्म के मंच से नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा का सामूहिक प्रयास होना चाहिये। सभी धर्म नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा के पक्ष में एक साथ खड़े होंगे तो उसका सकारात्मक परिणाम निश्चित आयेगा।

कौन कहता है कि आसमां में छेद नहीं होता
एक पत्थर तो उछाल कर देखो यारों।

◆ **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

निर्माण करें आध्यात्मिक परिवार का

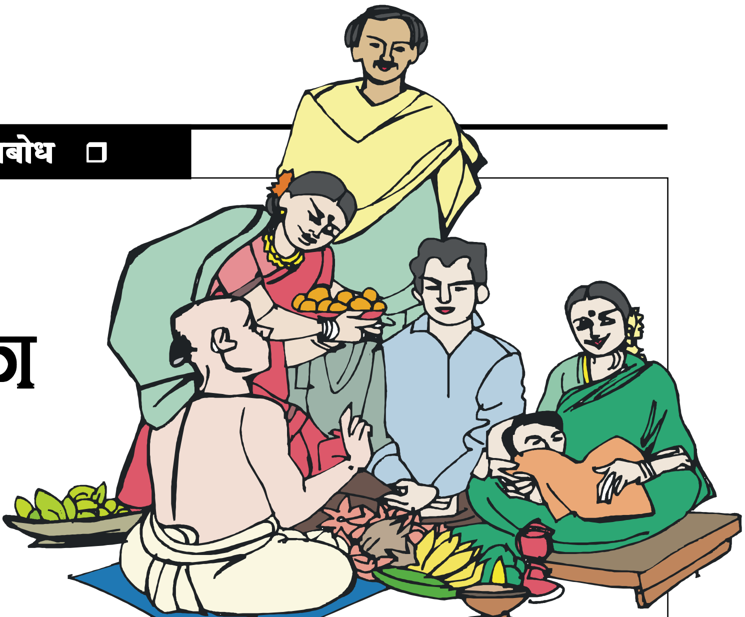

● आचार्य महाप्रज्ञ ●

प्राचीन काल की बात है। एक राजा आखेट खेलने जंगल में गया। घने जंगल में पहुंचकर राजा ने देखा-एक तेजस्वी साधु वृक्ष के नीचे आसन लगाए ध्यान-मग्न बैठा है। राजा साधु के निकट गया, प्रणाम कर पूछा 'महाराज! हिंसक पशुओं से भरे इस भयानक जंगल में आप अकेले कैसे? क्या आपको डर नहीं लगता?'

'मैं अकेला कहां हूं? मेरा परिवार मेरे साथ है।' ध्यानी साधु ने कहा।

राजा ने आसपास नजर दौड़ाई, लेकिन वहां कोई दूसरा दिखाई नहीं पड़ा। फिर पूछा 'कहां है आपका परिवार? यहां तो कोई भी दिखाई नहीं देता।'

साधु ने उसी धीर-गंभीर वाणी में कहा 'राजन्! हर चीज दिखाई नहीं देती। कुछ दृश्य है तो बहुत कुछ अदृश्य।'

राजा ने कहा 'महात्मन! मैं आपका आशय समझा नहीं। कृपया अपने परिवार का परिचय दें।'

साधु ने कहा धैर्य मेरा पिता है, क्षमा मेरी जननी है, शांति मेरी सहचरी और संगिनी है। सत्य मेरा पुत्र है, दया मेरी भगिनी है, दिशाएं मेरा वस्त्र हैं और ज्ञान मेरा आहार है। राजन्! जिसके ये स्वजन हैं, कुटुम्बीजन हैं, उसे किस बात का भय?

धैर्य यस्य पिता क्षमा च जननी शांतिश्चिरं गेहिनी

सत्यं सूनुरयं दया च भगिनी भ्राता मनःसंयमः।

श या भूमितलं दिशोक्रपि वसनं ज्ञानमृतं भोजनम्

एते यस्य कुटुंबिनो बद सखे! कस्माद् भयं योगिनः।।

यह एक सुंदर मार्गदर्शन है। हर व्यक्ति के लिए दो परिवार चाहिए। एक परिवार से काम नहीं चलता। पिता परिवार का मुखिया होता है, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से एक पिता और होना चाहिए और वह है धैर्य एक लौकिक पिता और दूसरा आध्यात्मिक पिता। लौकिक पिता वह है, जो जन्मदाता है। आध्यात्मिक पिता है धैर्य

व्यक्ति को बचाने वाला इस दुनिया में कोई तत्त्व है तो वह धैर्य है। जल्दबाजी ठीक नहीं होती। आपत्तिकाल में भी धैर्य रखने की सीख दी गई है। विपत्तिकाल में आदमी का धैर्य जवाब दे जाता है, बुद्धि और विवेक कुंठित हो जाते हैं अक्ल काम नहीं करती। उस समय आदमी बिना कुछ सोचे, जो मन में आता है, कर लेता है। यह उसके लिए हर तरह से नुकसानदायक होता है। जिसमें धैर्य नहीं होता, वह न तो समय की प्रतीक्षा करता है, न किसी दूसरे की प्रतीक्षा करता है, मनचाहा कर लेता है।

महाकवि भारवि ने अपने जीवन के अंतिम क्षण में अपने पुत्र से कहा 'कवि होने के कारण मेरे पास कोई बहुत बड़ी संपदा नहीं है। जाते समय एक श्लोक तुम्हें दे रहा हूं। जब कभी तुम्हें जरूरत पड़े, एक लाख रुपये में इसे बेच देना। ध्यान रहे इससे कम में मत बेचना।' वह समय ऐसा था, जब भारतवर्ष में संस्कृत-प्राकृत भाषा और उसके काव्य का मूल्य हुआ करता था। राजा भोज संस्कृत कवियों की रचनाओं से प्रसन्न होकर कभी-कभी उन्हें रत्नों से तोल दिया करते थे।

मैंने स्वयं कालूगणी का युग देखा। उस समय भी संस्कृत के कवियों का अपना महत्व होता था। गुरुदेव तुलसी और दूसरे साधु संस्कृत कवियों में शामिल थे। उस समय कोई अपनी नई रचना सुनाता तो अक्सर कहता 'अब सुनो, मैं लाख रुपये का एक श्लोक सुनाता हूं। रुपया तो नहीं था, किन्तु उस समय उस श्लोक का मूल्य एक लाख रुपये होता था। महाकवि भारवि ने वह श्लोक पुत्र को देते हुए कहा 'इसे एक लाख से कम में मत बेचना।'

कालचक्र का योग, महाकवि के पुत्र की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई कोई उपाय सूझ नहीं रहा था। तभी पिता द्वारा दिये गए उस श्लोक की स्मृति आई लेकिन श्लोक के एक लाख दे कौन? ग्राहक कहां मिले? उस समय साप्ताहिक बाजार की प्रथा थी। सप्ताह में एक दिन बहुत बड़ा बाजार लगता। तरह-तरह की चीजों को लेकर व्यापारी आते। अपना माल बेचते। संध्या के समय बाजार बंद होता। यह नियम था कि जिसकी जो चीज बिक नहीं पाती, उसे नगरसेठ खरीद लेता। भारवि-पुत्र भी अपने पिता द्वारा रचित उस श्लोक को लेकर बाजार में गया। दिन भर बैठा रहा। ग्राहक श्लोक को देखते, मूल्य पूछते और एक लाख रुपया मूल्य सुनते ही उठकर चले जाते। शाम हो आई,

श्लोक नहीं बिका। नियम के अनुसार वह श्लोक नगरसेठ ने खरीद लिया। उस श्लोक को उसने मंडित कर अपने कमरे की दीवार पर लगा दिया।

कालान्तर में नगरसेठ की आर्थिक स्थिति भी यथावत न रह सकी। धनार्जन के लिए उसने दूसरे देश में व्यापार करने का निश्चय किया। उस समय व्यापारिक काम के लिए यात्रा इस तरह नहीं होती थी कि दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा तीन घंटे में मुम्बई पहुंच गए। उस समय यात्रा महीनों की नहीं, वर्षों की होती थी। दूर जाने, कमाने और वहां से आने में पूरा दशक लग जाता। इस बीच पत्र-व्यवहार आदि नहीं के बराबर होता था। मात्र संदेश भेजे जाते थे, वह भी अगर कोई दूसरा देश में जाने या आने वाला होता।

दस वर्ष की कमाई के बाद सेठ ने घर लौटने का निश्चय किया। प्रलंब यात्रा के बाद जब वह गांव में पहुंचा तब रात हो चुकी थी। उस समय प्रकाश की बहुत सुविधाएं नहीं थी। घने अंधकार में डूबी अपनी हवेली के द्वार पर आया। दरबान ने दरवाजा खोला। सेठ हवेली में दाखिल हुआ। अपने कमरे के सामने गया। उस समय उसने जो दृश्य देखा, उसके शरीर में मानो आग लग गई

उसने अंधेरे में विस्फरित आंखों से देखा एक शैय्या पर दो व्यक्ति सो रहे हैं। एक तो उसकी पत्नी, जिसे तत्काल पहचान लिया, दूसरा एक किशोर, जिसे वह पहचान नहीं सका। सेठ का दिमाग घूम गया। उसने सोचा दीर्घकाल तक उसकी अनुपस्थिति ने पत्नी को दुश्चरित्र बना दिया। अब वह हर रात्रि को इसी तरह दूसरे की अंकशायिनी बनती है। भृकुटी तन गई, नेत्र लाल हो गए। तत्काल हाथ कमर बंधी तलवार पर गया।

क्रोधावश सेठ ने जैसे ही कक्ष में प्रवेश किया, उसका ध्यान दीवार पर मढ़े इस श्लोक पर चला गया

सहसा विदधीत न क्रियाम्
अविवेकः परमापदां पदम्।

सेठ ने तलवार सहित उठा हुआ हाथ नीचे कर लिया। आवाज देकर पत्नी को जगाया। पत्नी जगी, पति को देखकर बहुत प्रसन्न हुईं लेकिन पति के चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही वह सहम गईं इतना ज्यादा नाराजगी का भाव। आखिर हुआ क्या?

पत्नी कुछ पूछती, इससे पूर्व ही सेठ की रोषपूर्ण आवाज सुनाई दी 'यह साथ में सोया हुआ कौन है?'

'स्वामी! आपका पुत्र! और कौन हो सकता है? आप गए थे तो पांच वर्ष का था, अब पन्द्रह का हो गया है, किन्तु सोता है अभी भी मेरी ही गोद में।

पत्नी के यह कहते ही सेठ का सारा क्रोध समाप्त हो गया। उसने दृष्टि ऊपर उठाकर कहा 'इस श्लोक ने आज स्वयं के हाथों से होने वाले महान अनर्थ से मुझे बचाया है। यह श्लोक एक लाख का नहीं, बल्कि एक करोड़ से भी अधिक मूल्य का है।' धैर्य के महत्व को इस कहानी से समझा जा सकता है।

क्षमा को जननी कहा गया। धरती या धरित्री को क्षमा कहा जाता है। वह मां की तरह अपनी संतानों का लालन-पालन करती है। मुनि के लिए दशवैकालिक सूत्र में कहा गया 'पुढवि समो मुणी हवेज्जा।' संस्कृत कोश में भूमि या पृथ्वी का नाम क्षमा है। उपनिषद में कहा गया माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' भूमि माता है और मैं पृथ्वी का बेटा हूं। धरती जैसा सहनशील दूसरा कौन हो सकता है?

इस तरह लौकिक और आध्यात्मिक इन दो परिवारों के साथ जो जीता है, वह कभी भयभीत नहीं हो सकता। यह युग भय का युग है। हर आदमी डरा हुआ है। यह डर कई तरह का है। सत्ता और ऊंचे पद पर है तो पद से हटा दिये जाने का भय। व्यापारी है तो आयकर, बिक्रीकर छापे का डर। सरकारी कर्मचारी है तो अधिकारी के रुष्ट हो जाने का डर। सब अपने-अपने कारणों से भयभीत हैं। धन को सुख देने वाला कहा गया है, किन्तु यह दुःख भी बहुत देता है।

वर्तमान की समस्या यह है कि हमारा जितना ध्यान पदार्थ पर जा रहा है, उतना ध्यान चेतना पर नहीं है। भौतिकवाद इतना हावी हो गया कि व्यक्ति दुःख पाता हुआ भी पदार्थ को छोड़ नहीं पा रहा है। चेतना, आत्मा-ये सब संकट से बचाने वाले तत्त्व हैं। इसलिए भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का एक संतुलन बने, यह आवश्यक है।

किसी धनी आदमी से पूछ लो क्या तुम सुखी हो? वह दिल पर हाथ रखकर अपनी व्यथा बयान कर देगा कि वह कितना दुःखी है? भय तनाव का सबसे बड़ा कारण है। जो क्षमाशील है, वह कभी भयभीत नहीं होता और उसे किसी तरह का तनाव भी नहीं होता।

शांति मेरी सहचरी है। वह छाया की तरह निरंतर मेरे साथ है। मैं निरंतर शांति और आनंद का अनुभव करता हूं। तनाव शब्द मेरे जीवन के शब्दकोश में ही नहीं है।

संन्यासी ने कहा सत्य मेरा पुत्र है। मैंने जीवन की सचाई को समझा है। मैंने यह अनुभव किया है इस दुनिया में कोई किसी को त्राण नहीं देता। अपनी आत्मा की प्राण त्राण बनती है।

दया और अहिंसा मेरी भगिनी है। मैं दया और अहिंसा धर्म का निरंतर संरक्षण करता हूं। मनसा, वाचा, कर्मणा किसी प्राणी को कष्ट देने की भावना भी नहीं उभरती। सबके साथ मैत्री और आत्मतुला की भावना का अनुशीलन करता हूं।

मेरा भाई है मन का संयम। भारतीय साहित्य और विशेषकर संस्कृत साहित्य में 'बंधु' और 'भ्राता' शब्द को बहुत महत्व दिया गया है। आचार्य हेमचन्द्र आदि आचार्यों ने महापुरुष और तीर्थंकरों के लिए लिखा 'त्वं बंधुरबन्धूनाम्।' आप उनके बंधु हैं, जिनके कोई भाई नहीं है। सहयोग करने में भाई से बड़ा कोई नहीं। भाई को 'भुजा' कहा गया है। भाई के चले जाने पर अक्सर लोग कहते सुने जाते हैं 'मेरा तो हाथ ही कट गया।' हर परिस्थिति में भाई का बड़ा सहारा होता है।

मन के संयम को भाई माना गया है। समस्या पैदा करने वाला है मन का

असंयम। इंद्रियां भी समस्या पैदा करती हैं लेकिन मन समस्या पैदा करने में उनसे भी कहीं आगे है। जिसने मन का संयम करना सीख लिया, इंद्रियों और मन की मांग में विवेक करना सीख लिया, वह कभी भयभीत नहीं होता।

यह आध्यात्मिक परिवार हर किसी को नहीं मिलता, किन्तु जिसे मिलता है, उसे फिर चारों ओर से अभय का कवच प्राप्त हो जाता है।

आपके सामने प्रश्न है आपने अपना आध्यात्मिक परिवार बनाया या नहीं? अगर आध्यात्मिक परिवार आपने बनाया है तो फिर आपको किसी चीज का डर नहीं होना चाहिए, बिना प्रस्ताव के आप जी सकेंगे। आध्यात्मिक परिवार नहीं बनाया, केवल लौकिक परिवार के भरोसे रह रहे हैं तो फिर आप निश्चिंत नहीं रह सकते। किसी के द्वारा कभी भी आपको धोखा दिया जा सकता है। आज के युग में लौकिक भाई, पत्नी, पुत्र किसी का भी भरोसा नहीं किया जा सकता। ये सब समय के साथी हैं। समय खराब आया तो एक-एक कर सभी साथ छोड़ देंगे। इसलिए हर समझदार व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह केवल लौकिक के भरोसे न रहे, अपना आध्यात्मिक परिवार भी बनाए। दायां या बायां दोनों पक्ष मजबूत हैं तो आदमी शक्तिशाली होता है। दोनों में से एक भी पक्ष कमजोर हुआ तो शक्ति कमजोर हो जाएगी।

वे सदा सुखी रहते हैं, जिन्होंने अपना आध्यात्मिक परिवार बनाया है। आप इस सचाई का अनुशीलन करें और आज से ही अपना आध्यात्मिक परिवार बनाना शुरू कर दें। वर्तमान की समस्या यह है कि हमारा जितना ध्यान पदार्थ पर जा रहा है, उतना ध्यान चेतना पर नहीं है। भौतिकवाद इतना हावी हो गया कि व्यक्ति दुःख पाता हुआ भी पदार्थ को छोड़ नहीं पा रहा है। चेतना, आत्मा-ये सब संकट से बचाने वाले तत्त्व हैं। इसलिए भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का एक संतुलन बने, यह आवश्यक है।

लौकिक चीजों का वियोग आदमी को संत्रस्त करता है, फिर भी व्यक्ति उसमें लिप्त हो रहा है, अपना आध्यात्मिक परिवार नहीं बना रहा है। यदि आध्यात्मिक परिवार विकसित होता तो पत्नी या पुत्र के चले जाने पर आर्त्तध्यान नहीं होता। तिजोरी से लाखों रुपये और जवाहरात लूट जाने पर आंसू नहीं बहाता। दृश्य और अदृश्य की अद्‌भुत माया है। माल-खजाना सामने है, इसलिए उसके चले जाने का दुःख है, किन्तु हर दिन हमारी आयु का एक-एक क्षण कोई चुरा रहा है, इसका दुःख नहीं है। हमारी वृत्तियों पर लोभ-लालसा, अहंकार जैसे विषैले जंतु अपना अड्डा जमाए बैठे हैं, हमसे मनचाहा करवा रहे हैं, क्या यह विमर्शनीय स्थिति नहीं है?

जिस व्यक्ति की आध्यात्मिक चेतना जाग जाती है, उसकी सारी दुनिया बदल जाती है। वह न कभी भयभीत होता है, न कभी शोक और मोह करता है। लौकिक और अलौकिक-दोनों परिवारों के साथ जीने वाला कभी अशांत नहीं बनता। वह शांति और सुख के स्रोत को उपलब्ध कर लेता है।

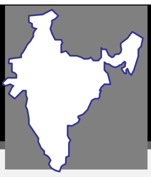

राष्ट्र चिन्तन

◆ मुफ्त इलाज करना होगा

गरीब जनता निःशुल्क इलाज के अपने अधिकार से मोटे तौर पर वंचित हैं। स्वास्थ्य का अधिकार हर नागरिक का मूलभूत अधिकार है। न सिर्फ सरकार, बल्कि हर आदमी या संगठन को यह सुनिश्चित करना चाहिए। दिल्ली के अपोलो अस्पताल ने तो गरीबों का निःशुल्क इलाज नहीं करके पूरा मखौल उड़ाया है।

22 सितंबर, 2009 — **दिल्ली उच्च न्यायालय**

◆ दया याचिका पर शीघ्र निर्णय हो

फांसी की सजा पाए लोगों की दया याचिका पर बहुत ज्यादा देरी किए बिना फैसला करना सरकार का कर्त्तव्य है। दया याचिकाओं पर कदम आगे बढ़ाने में सरकार की नाकामी उन लोगों के प्रति नाइंसाफी जैसी है, जिनकी फांसी की सजा उम्रकैद में तब्दील हो सकती है। अगर फांसी की सजा पर अमल या दया याचिकाओं के निपटारे में सरकार की ओर से काफी देरी हो तो कैदी को अपनी फांसी की सजा को उम्रकैद में तब्दील कराने का अधिकार है, नहीं तो यह अनुच्छेद 21 'स्वतंत्रता के अधिकार' का उल्लंघन होगा।

20 सितंबर 2009 — **उच्चतम न्यायालय**

◆ दूसरी बेटी गोद ले सकेंगे

एक बेटी के होते अब दूसरी बेटी भी गोद ली जा सकेगी। एक बेटी के होते हुए दूसरी बेटी गोद लेने की चाह रख रहे हिन्दुओं की राह में अब हिन्दू पर्सनल लॉ नहीं आएगा। इस कानून में अभी तक समान लिंग में गोद की मनाही थी। यह व्यवस्था गलत है। गोद लेना जीने के अधिकार से जुड़ा है।

19 सितंबर 2009 — **मुम्बई उच्च न्यायालय**

◆ कड़ी सजा जरूरी

देशद्रोहियों के लिए कड़ी सजा जरूरी है। ऐसे मामलों में अगर सख्त सजा नहीं दी गई तो मुम्बई हमले के बाद कोई भी नागरिक अपने को सुरक्षित नहीं पाएगा। आतंकी गतिविधि न सिर्फ हमारे देश में बल्कि पूरे विश्व में फैल रही है, जो एक चेतावनी है। ऐसे में अदालत का कर्त्तव्य बनता है कि वह आरोपियों को सजा दे।

19 सितंबर 2009 — **तीस हजारी कोर्ट दिल्ली**

रावण दहन एवं भीड़ का फोटो

दशहरा के दस शुभ चिह्न

● डॉ. सरोज कुमार वर्मा ●

दशहरा भारतीय संस्कृति का विशिष्ट पर्व है। यह असत्य पर सत्य की, अधर्म पर धर्म की, अनीति पर नीति की तथा अन्याय पर न्याय की जीत का पर्व है। इसी दिन श्रीराम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। उसके दस सिरों का भेदन किया था। इसीलिए इसे दशहरा कहा जाता है। वैसे दशहरा का अर्थ 'दस प्रकार के मनोविकारों को नष्ट कर दस प्रकार के शुभ चिह्नों को धारण करना' होता है। ये दस शुभ चिह्न निम्नलिखित हैं

1. अपराजिता देवी की पूजा : दशहरा के दिन अपराजिता देवी की पूजा की जाती है। यह पूजा दोपहर बाद की जाती है। गांव के उत्तर-पूर्व दिशा में किसी साफ-स्वच्छ स्थान पर गोबर से लीप-पोत कर आठ कोणों वाला एक चक्र बनाया जाता है। फिर इस अष्टकोण चक्र के दायें जया और बायें विजया नामक देवियों का आह्वान किया जाता है। तत्पश्चात् इन देवियों की पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि अपराजिता देवी की पूजा करने से कभी पराजय का मुख नहीं देखना पड़ता है।

2. सीमा का अतिक्रमण : अपराजिता देवी की पूजा के बाद अपने गांव-शहर अथवा राज्य की सीमा का अतिक्रमण किया जाता है। यह विजय का प्रतीक होता है।

3. शमी वृक्ष की पूजा : सीमा का अतिक्रमण करने के पश्चात् गांव के उत्तर-पूर्व दिशा में शमी वृक्ष की पूजा की जाती है। विधिवत रूप से की जाने वाली इस पूजा में पहले शमी के वृक्ष के नीचे सफेद कपड़ा बिछाया जाता है, फिर उसके ऊपर चावल का अष्टदल कमल चक्र बनाकर कलश की स्थापना की जाती है, तत्पश्चात् आचमन, प्राणायाम तथा स्वस्ति वाचन पूर्वक संकल्प करके गणेश, नवग्रह तथा षोड्श माता की पूजा की जाती है। पूजा के बाद शमी वृक्ष की जड़ में चावल रखकर सोने के तंतुओं से परिवेष्ठित कर उस वृक्ष की परिक्रमा की जाती है तथा कल्याण के लिए शमी की प्रार्थना की जाती है। भगवान श्रीराम ने भी दशहरा के दिन लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व शमी वृक्ष की पूजा की थी, जिससे प्रसन्न होकर शमी ने उन्हें विजयी होने का आशीर्वाद दिया था। धनुर्धारी अर्जुन ने भी अपने अज्ञातवास के दौरान अपने दिव्य अस्त्रों की सुरक्षा का भार शमी के वृक्ष को ही दिया था।

4. नीलकंठ पक्षी का दर्शन : दशहरा के दिन नीलकंठ पक्षी का दर्शन किया जाता है और यह दर्शन शुभ माना जाता है। ऐसा विश्वास है कि यदि इस दिन नीलकंठ पक्षी दिखलाई पड़ गया तो फिर साल भर सभी कार्यों में सफलता मिलती रहती है।

5. खंजन पक्षी का दर्शन : दशहरा के दिन खंजन पक्षी का दर्शन भी शुभ होता है। पुराने जमाने में इस दिन राजा अपने गोशाला में दस दीये जलाकर गोशाला की परिक्रमा करने के बाद गायों से अपने परिवार, अपनी प्रजा और

अपनी सेना के कल्याण के लिए प्रार्थना करता था। तत्पश्चात् वह खंजन पक्षी के दर्शन के लिए निकलता था।

6. दसभुजा दुर्गा की पूजा : दशहरा दस दिनों से चली आ रही दस बाहों वाली दुर्गा की शक्ति पूजा की पूर्णाहुति का दिन होता है। इसलिये यह दिन अधिक मंगलकारी माना जाता है। भारत में बंगाल की शक्तिपूजा विशिष्ट है। इसलिये सारे देश में इसी प्रकार से दसभुजा दुर्गा की पूजा की जाती है। यह दिन रावण-वध के कारण भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

7. अस्त्र-शस्त्रों की पूजा : दशहरा अस्त्र-शस्त्रों की पूजा के लिए भी विशिष्ट दिन होता है। पूर्वकाल में वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद जब युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्र निकाले जाते थे तो उनकी विधिवत पूजा दशहरा के दिन ही होती थी। यह परंपरा अभी तक जारी है। इसीलिए आज भी सेना में शस्त्रों की पूजा दशहरा के दिन ही होती है। ऐसा विश्वास है कि दशहरा के दिन अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करने से युद्ध में सदा जीत मिलती है।

8. नये अन्न-वस्त्रों का धारणः दशहरा के दिन उस ऋतु में होने वाले नये अन्न का भोजन तथा नये वस्त्रों का धारण मंगलमय माना जाता है। इस दिन अपनी मातृभूमि के कल्याण की कामना की जाती है।

9. नीराजन तथा रणांगन की व्यवस्था : दशहरा के दिन सेना में नीराजन तथा रणांगन की व्यवस्था की जाती है। नीराजन के अंतर्गत अपनी सेना की पूजा उसके विजय के लिए की जाती है तथा रणांगन के अंतर्गत रण-क्षेत्र में प्रवेश कर युद्ध का काल्पनिक दृश्य निर्मित किया जाता है। सेना कारी एक भाग शत्रु बन जाता है, जिसे युद्ध में पराजित कर अपनी जीत हासिल की जाती है।

10. नया निर्माण, नया व्यापार तथा विदेश-यात्रा : दशहरा के दिन नये घरों के निर्माण-कार्य का प्रारंभ, नये व्यापार की शुरुआत तथा विदेश की यात्रा शुभ मानी जाती है। मान्यता है कि इस दिन ये सब करने से अपने काम में लगातार उन्नति और सफलता मिलती रहती है।

यद्यपि समय के अनुसार लगभग सभी पुरानी परंपराओं में परिवर्तन होता जा रहा है, और इसी परिवर्तन के क्रम में दशहरा के दस शुभ-चिह्नों की महत्ता भी घटती जा रही है, तथापि अधिकांश लोग अब भी इन शुभ चिह्नों में विश्वास करते हैं और इसके मुताबिक कार्य करने का प्रयास करते हैं।

06, व्याख्याता आवास,
खबड़ा रोड़, विश्वविद्यालय परिसर,
मुजफ्फरपुर – 842001 (बिहार)

मानव-मन का मधुर मिलन

• मोहन उपाध्याय •

क स्वर मिलकर ही संगीत अमर बन जायेगा,
मन का मधुर मिलन ही जीवन सरस बनायेगा।

जायेगी जिस दिन मानव-मन में मंगल भावना,
समय आनंद छायेगा जिसकी रहती कामना।

व को जीवन से करना अधिक-अधिक ही प्यार है,
ोंकि प्रेम ही करता हमें दिव्य शक्ति-संचार है।

बके सुख में सुखी क्योंकि हम एक साज के तार हैं,
ारों का दुःख देख हमें भी होता कष्ट अपार है।

उठती बढ़ती चढ़ती लहरें रहतीं ज्यों गतिमान हैं,
जीवन में उन्नति करना ही जीवन का सम्मान है।

दीपक से दीपक जलता है, बढ़ता तेज महान है,
प्रेम और सहयोग रहा तो सबका ही उत्थान है।

26/117, क्रिश्चियनगंज, विकासपुरी, अजमेर – 305001 (राजस्थान)

सामाजीकरण के वाहक हमारे त्यौहार

• डॉ. पवन कुमार खरे •

संघर्षमय संसार की कटु स्मृतियों को क्षणभर में भुला देने के लिए, मानव इधर-उधर मृग-मरीचिका में भटकता है। सुख और शांति की पिपाशा को शांत करने के लिए मानव ने नये-नये आयोजन किये। जीवन के कांटे भरे मार्गों को सुगम और सरल बनाने के लिए हमने नये-नये आविष्कार किये। जीवन के उत्पीड़न, शोक, चिंता और दुःख को भुलाकर मानव मुस्कुरा सके और एक साथ बैठकर हंस सके। इन्हीं सब प्रवृत्तियों ने मिलकर हमारे त्यौहारों को जन्म दिया है।

वर्तमान संदर्भ में जब हम पर्व एवं त्यौहारों को मनाने की दृष्टि से देखते हैं तो हम देखते हैं कि पर्व एवं त्यौहार दोनों हमारे राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्र की स्मिता को अक्षुण्ण रखने में मील के पत्थर का काम करते हैं। हमारी सामाजिक एकता, मानवीय प्रेम, सौहार्द और सामाजिक मूल्यों की रखवाली इन्हीं पर्व एवं त्यौहारों के द्वारा संभव हो पाती है।

पर्व और त्यौहार जन-जन के हृदय में मानवीय मूल्यों की प्राण-प्रतिष्ठा करते हैं। कोई भी त्यौहार हम मनाते हैं, उस त्यौहार के पीछे जीवन को सुखमय बनाने वाले मूल्य छिपे रहते हैं। ये मूल्य त्यौहारों को मनाते समय आनंद देते हुए हमारे अंदर स्वतः ही प्रवेश करते चले जाते हैं। विजयादशमी, होली, दीपावली, रक्षाबंधन, ईद, क्रिसमस कोई भी त्यौहार हम मनायें, हर त्यौहार हमारे अंतर्मन में अच्छाइयों को लाता है। दीपावली का त्यौहार घर की साफ-सफाई करते हुए दीपक जलाने का त्यौहार है। इस दिन भगवान श्रीराम रावण का वध करके अयोध्या लौटकर आये थे। अयोध्यावासियों ने राम का राजतिलक करके खुशियां मनाई थी। रामराज्य की स्थापना हुई थी। राम-राज्य की स्थापना होते ही अयोध्यावासियों के दैहिक, दैविक, भौतिक सभी प्रकार के दुःख समाप्त हो गये थे। अयोध्या का सारा समाज शोकरहित होकर हर्षित हो गया था।

विजयदशमी के दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध किया था। बुराई का प्रतीक माना जाने वाला रावण श्रीराम के हाथों मारा गया। रावण के मरते ही राक्षसी प्रवृत्तियां भागने लगी थी। उस समय राक्षसी प्रवृत्तियों के नाश होते ही देवीय प्रवृत्तियां जागने लगी थी। सारी लंका में और अयोध्या में रावण वध की खबर फैलते ही राक्षसी मूल्य समाप्त होते चले गये। मानवीय मूल्य प्रखर होते चले गये। कहने का मतलब यह है कि कोई भी त्योहार हम अच्छे गुणों को अपनाने हेतु और बुरी आदतों को त्याग देने हेतु ही मनाते हैं।

ईद के त्यौहार के अवसर पर जब सभी लोग अपने आपसी मतभेद भुलाकर गले मिलते हैं और सामूहिक समाज के द्वारा अल्लाह के सामने झुककर इबादत करते हैं तो इससे समाज में भाईचारा और प्रेम की भावना जाग्रत होती है। इसी प्रकार ईसाई धर्म के अनुयायी ईशु मसीह का जन्म उत्सव, गुड फ्राइडे का त्यौहार विभिन्न पकवान बनाकर, प्रार्थना करके, नये-नये वस्त्र धारण करके मनाते हैं।

दक्षिण भारत में पोंगल पर्व, होली पर्व पंजाब में लोहड़ी पर्व, फसलों के संबंध में खुशियां मनाने हेतु सभी मिलकर मनाते हैं। इस प्रकार त्यौहारों द्वारा समाजीकरण का सशस्त्रीकरण होता है। सभी लोग अपने दुःखों को छोड़कर अपनी शक्ति को साफ-सफाई, पकवान बनाने, नये-नये वस्त्र खरीदने में लगाते हैं। इससे नीरसता का अंत होता है मानव, दुःखों से उबरता है और ईष्ट की आराधना में लिप्त होता है। जिससे उसे अपने परिवार के प्रति, समाज के प्रति एवं राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों का भी बोध होता है।

त्यौहार और पर्व हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के अभिन्न अंग होते हैं। इनके बिना हम सामाजिक एकता और राष्ट्र की एकता को स्थिर नहीं रख सकते। हर त्यौहार को मानवीय प्रेम और सद्भाव का जनक माना जाता है। चाहे ईद का पर्व हो, चाहे दीवाली का पर्व हो, चाहे क्रिसमस का हो, उसके अंदर छिपे प्रेम और सद्भाव के मूल्य हमारी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देते हैं। गणतंत्र दिवस का पर्व हमारे संविधान का पर्व है। इस दिन हमारा संविधान लागू हो गया था। संविधान में स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा हमारी एकता को मजबूत करने के लिए रखे विचार हैं, जो हमारे महान संविधान निर्माताओं डॉ. भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बहुत दूरदर्शितापूर्ण सोच विचारकर रखे थे। स्वतंत्रता दिवस का पर्व हमारी आजादी का पर्व है। इस दिन हमने अपनी गुलामियत चाहे वह शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक कोई भी हो उसे उखाड़कर फैंक दिया था। देवी के त्यौहारों के अंतर्गत सारा समाज देवी की आराधना में नाचता, गाता, झूमता है। भक्ति की बहती धारा में सभी प्राणी समान दिखाई देते हैं। ऊंच-नीच का भेद अपने आप समाप्त हो जाता है। मानवीय प्रेम पर्व एवं त्यौहारों के द्वारा ही हर नागरिक के अंतर्गत जाग्रत होता है।

पर्व एवं त्यौहारों के द्वारा सामूहिक क्रियाशीलता जो हमे दिखाई देती है उस सामूहिक क्रियाशीलता के द्वारा हमारे सामूहिक हितों की पूर्ति होती है। महान स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र में गणेश उत्सव मनाने का त्यौहार शुरू किया था। इस त्यौहार को मनाने का उद्देश्य अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखना।

उन्होंने इस पर्व के द्वारा सारे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया था। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, इसे हम लेकर रहेंगे।' यह नारा उन्होंने गणेश उत्सव मनाते समय ही दिया था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि त्यौहारों के माध्यम से हम सामूहिक क्रियाशीलता और सामूहिक प्रयासों के द्वारा सामूहिक और राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करते हैं।

त्यौहार हमारे पूर्वजों के महान संस्कारों को परिवारों में सदैव करते रहने का कार्य करते हैं। त्यौहारों के द्वारा हम उनके रीति-रिवाजों, रस्मों, प्रथाओं और परंपराओं को अपनाकर परिवार की मर्यादा की रक्षा करते हैं। त्यौहारों के द्वारा समाज का हर परिवार अपनी मर्यादाओं में रहता हुआ लोकाचारों और लोकरीतियों को अपनाता है। पूर्वजों की परंपराएं, समझदारी, सूझबूझ, जीवन मूल्य त्यौहारों के माध्यम से ही बरकरार रहते हैं। अच्छाइयों का प्रतीक माने जाने वाले पूर्वजों द्वारा सत्यमार्ग पर चलने वाली दी गई सीखों को हम त्यौहारों के अवसर पर याद करते हैं। त्यौहार पूर्वजों के महान गुणों को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करने का काम करते हैं।

ईश्वर के प्रति प्रबल आस्था और भक्ति का भाव जाग्रत करने वाले हमारे त्यौहार समाज में समानता और सामाजीकरण का भाव पैदा करते हैं। हर धर्म के त्यौहारों का मूल उद्देश्य ईश्वर की आराधना और भक्ति से होता है। भक्ति हमें सभी प्राणियों से प्रेम करना सिखाती है। भक्ति की बहती धारा में हमारे अंतर्मन की सभी बुराइयां नष्ट हो जाती हैं। हृदय पवित्र हो जाता है। आत्मा निर्विकार हो जाती है। सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा, दया, प्रेम करुणा का भाव भक्ति से ही पैदा होता है। सर्वधर्म समभाव का भाव भक्ति से जाग्रत होता है। सर्वधर्म समभाव के द्वारा ही मानवीय प्रेम की गंगा हर व्यक्ति के अंतःकरण में प्रवाहित होने लगती है। जब हम हर त्यौहारों के अंदर छिपे लोक कल्याणकारी मूल्यों पर गंभीर चिंतन मनन करते हैं जो हमें पता चलता है कि ये सभी त्यौहार मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु ही बनाये गये हैं। पारिवारिक संस्कारों के पुनर्जागरण हेतु त्यौहारों को मनाया जाना लाजिमी है। संयुक्त परिवारों का आज जो हमें विघटन दिखलाई दे रहा है उसके पीछे हमें अपने त्यौहारों में छिपे मानवीय मूल्यों को नजरअंदाज कर देना ही समझ में आता है। संयुक्त परिवारों के टूटते जाने से जो एकल परिवार बन रहे हैं, उसमें पूर्वजों के महान संस्कारों का लोप दिखाई दे रहा है जो कि हमारे सामाजिक विघटन को ही बढ़ावा दे रहा है।

समाज का आधारभूत ढांचा मानवीय मूल्यों पर ही टिका रहता है। इन मानवीय गुणों में परमार्थ का भाव एक अहम् मुद्दा है। हर व्यक्ति के हृदय में परमार्थ भाव होना जरूरी है। दूसरे के दुःखों में सहभागी बनना अपने सुखों को दूसरों में बांटना समाज की स्थिरता और एकता के लिए जरूरी है। यह भाव हमारे अंदर तभी पैदा होता है, जब हम त्यौहारों की सामूहिक प्रार्थनाओं में शामिल होते हैं। प्रार्थना के द्वारा हमारे अंदर समदर्शिता का भाव पैदा होता है। हमें सभी प्राणी समान दिखलाई देते हैं। सामूहिक दुःख जब अपना दुःख बन जाता है तभी प्रार्थना का सही रूप हमारे अंतर्मन में उभर कर आता है। प्रार्थना के संबंध में उपनिषद् में कहा गया है

'असतो मां सद्गमय तमसो मां ज्योर्तिगमय। मृत्योर्मा मृतं गमय।''

''मुझे असत् से सत् की ओर ले जाओ। मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाओ। मुझे मृत्यु से अमृत की ओर ले जाओ।''

इस प्रकार त्योहारों में होने वाली प्रार्थना सामाजिक जागरण का भी महत्वपूर्ण साधन मानी जाती है।

त्यौहार हमें बड़े बुजुर्गों और माता-पिता के प्रति सम्मान और आदर करना सिखलाते हैं। हमारे धर्म में यह बात हर जगह लिखी मिलती है कि हमें माता-पिता का सम्मान करना चाहिए। त्यौहारों के माध्यम से बुजुर्गों का सम्मान करना हम सीखते हैं। श्राध्य पक्ष से पितृमोक्ष अमावस्या तक हम पूर्वजों की आत्माओं के प्रति जो श्राद्ध-भक्ति भाव रखते है उसमें बुजुर्गों के प्रति आदर का भाव स्वतः ही हमारे अंतर्मन में पैदा होने लगता है। ऐसा माना जाता है कि इस दौरान श्राध्य पक्ष में पूर्वजों की आत्माएं अपने घरों में आशीष देने हेतु आती हैं। श्राध्य पक्ष और पितर विसर्जन के त्योहारों को मनाने का मूल उद्देश्य पूर्वजों के विचारों और उनके किये गये महान कार्यों को अपने जीवन में अपनाकर जीवन को सफल बनाना ही माना गया है।

त्यौहारों के द्वारा सामाजिक कुरीतियों का भी दमन होता है। त्यौहारों में समाज के सभी वर्ग के लोग शामिल होते हैं। सामूहिक प्रार्थनाओं और नमाजों के द्वारा किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रहता। देवालय में होने वाली प्रार्थनाओं में ईश्वर की नजरों में सभी समान होते हैं। इस कारण सामाजिक कुरीतियां सामूहिक पूजा पाठ एवं सामूहिक भजनों के द्वारा स्वतः ही भागने लगती है।

त्यौहार हमारे राष्ट्रीय हितों के साथ-साथ नैतिक और धार्मिक भावनाओं के प्रचार-प्रसार के द्वारा विश्वग्राही मानवीय मूल्यों को जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठित करते हैं जिससे विश्वकल्याण की भावना को पोषण मिलता है। अतः हम यह मानते हैं कि सभी धर्मों के त्योहारों से मानवीय मूल्यों की स्थापना सामाजिक एकता का विकास, नैतिक एवं धार्मिक भावनाओं का प्रचार, सामाजिक कुरुतियों का दमन, समाज में प्रेम, सद्भावना, सामूहिक क्रियाशीलता एवं सामूहिक हितों की पूर्ति, समाज में समानता एवं समाजीकरण बुजुर्गों के प्रति सम्मान की भावना का विकास, पारिवारिक संस्कारों का विकास, सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा, ईश्वर के प्रति प्रबल आस्था, भक्ति भाव एवं विश्व कल्याण और राष्ट्रीय हितों की पूर्ति होती है।

79, विद्यानगर, उज्जैन,
सांवेर रोड़ (मध्यप्रदेश)

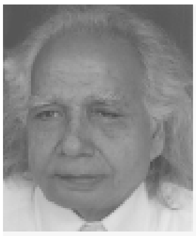

हुकमचंद सोगानी की दो कविताएं

अपरिग्रह की थाती की पाती

अहिंसा की इस दौलत को खूब लुटाना है
प्यार इसका सारे जमाने को दिखाना है
उलीचो इसे तुम चाहे हजार हाथों से
कम नहीं होता यह ऐसा खजाना है।

महावीर की प्यारी बातों का
जन-जन को परिचय देना है
मानवता की इन राहों से
हिंसा के शूल हटाना है।

अपरिग्रह की थाती की पाती
पढ़कर सबको सुनाना है
संग्रह-वृत्ति को त्याज्य समझकर
सबको राहत पहुंचाना है।

शतरंज बिछी है यहां-वहां
शातिर चालों से बचना है
मोहरा बनकर किसी हाथ का
गुमनामी में नहीं जीना है।

बुराइयां कई मुखौटों में हैं
खोटे कामों में नहीं पड़ना है
नैतिकता के पथ पर चल कर
मानवता की रक्षा करना है।

दे नहीं सकते किसी को सांसें
हक क्या है जीवन हरने का
महावीर ने संदेश दिया है
'जियो और जीने दो' का।

मोक्ष मार्ग के पावन पथ में

जय मेरे वीरा
जय महावीरा
यादें तेरी
मेरे दिल में।

मूरत वेदी में
कितनी सुंदर
अक्स मेरी
आंखों में झलके।

तेरे प्यार ने
मुझको राहें दी
दिल मेरा
डूबा भक्ति में।

मेरी आंखों ने
देख लिया है
महावीर तुम्हारा
अतिशय जग में।

तट की दिशा
इंगित की तुमने
जीवन नौका थी
बीच भंवर में।

राग-द्वेष को
किया तिरोहित
सबके प्रति
प्रेम दृष्टि में।

संदेशों से
जीवन कितना
बदल गया है
बाहर भीतर से।

जनम-मरण से
छुटकारे का
अवसर आया है
फिर जीवन में।

महावीर को
कैसे भूले दिल
वो पार लगाता
हाथ पकड़ के।

निर्वाण-दीप की
ज्योति सुंदर
मोक्ष मार्ग के
पावन पथ में।

श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला,
फ्लेट नं. – 201, महावीर मार्केट,
नई पेठ, उज्जैन – 456006 (म.प्र.)

अग्नि-स्वरों में बोल

• जगदीश चंद्र शर्मा •

आज दिवाली है दीपक! तू
सबको पुनः टटोल,
जो पीड़ित हैं उनके मन में
नई चेतना घोल!

भिन्न-भिन्न रूपों में छितरा
अंधियारा, कर गोल,
रह निष्कंप, संकटों की अति
में भी तनिक न डोल!

पसरी हुई विसंगतियों की
जितनी भी है पोल,
दीपक, तम की तह में जाकर
खोल उसे तू खोल!

छद्‌म और अपराध आदि का
हर अंबार खंगोल,
संबल दे व्याकुल जन-जन को,
अग्नि-स्वरों में बोल!

सामाजिक जीवन की शाश्वत
लाभ-हानि को तोल,
फूट पड़े चप्पे-चप्पे में
ज्योतिमयी किल्लोल!

पोस्ट : गिलूंड 313207
(राजसमंद–राजस्थान)

मन का दीप जलाओ

माटी के अनगिनत दीपों से
चहुंदिशि उजियाला है लेकिन,
जो मन को आलोकित कर दे,
ऐसा कोई दीप जलाओ।

जले उम्र भर दीप सांस के
हुआ नहीं फिर भी मन उजला।
चौराहों पर मिले, नजरिया
उनका नहीं आज तक बदला।

सगे-संगाती रहे, न बाती
जला सके पर कभी प्रेम की,
जो छवियां प्रतिबिम्बित कर दे,
ऐसा कोई दीप जलाओ।

सोचें उनके बारे में हम
जिनके पांव न मुड़ पाए हैं।
वर्षों से जो रहे टूटते
और न क्षण भर जुड़ पाए हैं।

जहां आदमी अंधियारे की
बाती में फिर भटक रहा है,
वहां सभी कुछ ज्योतित कर दें,
ऐसा कोई दीप जलाओ।

अभी भेद की दीवारों में
बंद आस्थाओं के स्वर हैं।
अभी स्वार्थ की ज्वालाओं में
झुलसे हुए गांव या घर हैं।

इन सड़कों से उन द्वारों तक
कोई सड़क नहीं जुड़ पाई,
जो अगजग से परिचित कर दे,
ऐसा कोई दीप जलाओ।

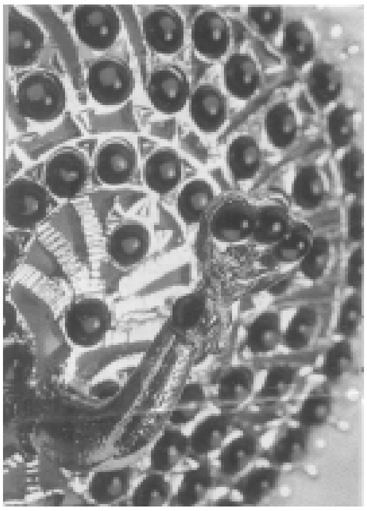

रंग-विरंग

चोखा, चटक, शोख, चहचहा
हल्का, गहरा
भंगरई-भकभूसरा
उजला-श्वेत और रूपहला
शुभ्र-दूधिया-शरबति-मोतिया
माखनी और कपूरी
रंग नयन में चुभते ही हैं
जलवायु में तैर रहे जो।
अपनी झांई फैलाकर फिर
रंग प्रकृति में छाए रहते।
प्याजी-खंजनी-पीले-
वासंती-अरसई-कनेरी
रामरजी या पियराह
कुंदन-लाल-सेबिया
हरा-सुनहरी
नारंगी-गेरुई-केसरी
घर-आंगन में आए रहते।
मलयागिरि-डंडियान-फेसुआ
और कसूंबी, पीक-कसूंबी और
गुलाबी,
कंदई-मजीठी-ककरेजी-हिरमिची
ककरेजी-सिंदूरी
वस्तु जगत में मिलन रचाते
आते-जाते।

◆ **डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'**
254, पद्‌मावती कॉलोनी 'ए',
अजमेर रोड, जयपुर – 302019 (राज.)

प्रेमचंद कोठारी की तीन कविताएं

समन्वय चूर्ण

चाहे हो हम वैदिक
आर्य समाजी,
जैन,
मुस्लिम,
फारसी,
ईसाई, सनातनी
हमें मिटाकर तनातनी
सबका स्वागत करना है।
बचाना यदि मानव-मात्र को
तो अणुव्रत के शस्त्र से
अणुबम से लड़ना है।
समाजवाद, साम्यवाद,
सर्वोदय, गांधीवाद,
जातिवाद
आदि वादों को समन्वित कर
एक चूर्ण बनाना है
और इसे खाकर
फैली विषमता और
धर्मान्धता को
हज़म करना है।

प्रेम का द्वार

खेलते-खेलते
एक दिन खिलौना
टूट जाएगा
लेकिन,
उसके कारण
जो प्रेम का द्वार खुला था
वह न टूट पाएगा।
इसलिए,
खेलने दो बच्चों को
खिलौने से
यही खिलौना एक दिन
उस बच्चे को दान में
प्रेम दे जाएगा।
भले ही वह टूट जाएगा
बच्चा बड़ा हो जाएगा
शरीर से
लेकिन,
मन से बच्चा ही रह जाएगा
फिर रोयेगा वैसे ही
स्वयं को पाने के लिए
जैसे रोया था
खिलौनों के लिए।

मंजिल

थककर न बैठो,
उदासी के पत्थर न बांधो
डूब जाओगे।
वो रहा किनारा
करीब है तुम्हारे
सागर पार हो गया है
बस,
थोड़ी और नाव खे लो।
थक कर यदि बैठ गए
तो मंजिल न बैठेगी
वो भाग रही है आगे।
साहस के क्षणों में,
प्रेम के क्षणों में,
प्रार्थना के क्षणों में,
सुन्दर भाव-दशा के क्षणों में
मंजिल स्वतः चल कर
करीब आती है।
उदासी, प्रमाद,
हताशा के क्षणों में
दूर, दूर बहुत दूर
भाग जाती है।

कोठारी फैशन्स,
4, गणिगर, 'डी' लेन एम.बी.टी.,
जुमा मस्जिद क्रॉस रोड,
बैंगलोर – 560002 (कर्नाटक)

मंदिर में नमाज अदा कर खोलते हैं रोजा

रमजान के पवित्र महीने के दौरान हर साल उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले में एक प्राचीन मंदिर में सांप्रदायिक सौहार्द की अद्भुत मिसाल देखने को मिलती है। यहां मुसलमान मंदिर परिसर में नमाज अदा करके हिन्दुओं द्वारा तैयार किए गए व्यंजनों से अपना रोजा खोलते हैं।

चंदौली जिले के नौबतपुर गांव स्थित संकटमोचन मंदिर कई वर्षों से इस अनूठी परंपरा का साक्षी रहा है। इसी गांव में रहने वाले 65 वर्षीय अलख नारायण सिंह ने कहा, 'हमें इस बात पर गर्व होता है कि हमारे गांव में ऐसा मंदिर है, जो धर्मनिरपेक्ष मूल्यों का वास्तविक दर्शन कराता है।' इस अनूठी प्रथा के तहत गांव भर के सारे मुसलमान शाम को संकटमोचन मंदिर परिसर में इकट्ठा होकर रोजा खोलने से पहले ही नमाज अदा करते हैं। नमाज अदा करने के बाद वे गांव के ही हिन्दुओं द्वारा बनाए गए तरह-तरह के व्यंजनों से अपना रोजा खोलते हैं।

ग्रामीण इंद्रजीत पांडे कहते हैं कि रमजान के पवित्र महीने में रोजेदार मुसलमान भाइयों की सेवा करने में अजीब-सी खुशी मिलती है। साथ ही साथ अपरोक्ष रूप से रमजान पर्व से हम भी जुड़ते हैं, जो ईमानदारी, अहिंसा, धैर्य व आत्म-सुधार का संदेश देता है। मंदिर परिसर में इफ्तार पार्टियां आयोजित करने के लिए स्थानीय लोग चंदा एकत्र करते हैं। सभी ग्रामीण स्वेच्छा और खुशी से चंदा देते हैं।

ग्रामीणों के मुताबिक यह किसी को नहीं पता करीब 150 साल पुराने इस संकट मोचन मंदिर में रमजान के दौरान मुसलमानों द्वारा नमाज अदा करने की परंपरा कब शुरू हुई। नौबत गांव की आबादी करीब 3,000 है, जिसमें मुसलमानों की संख्या 800 है। कपड़े सिलने का काम करने वाले सज्जाद अख्तर कहते हैं कि हम चाहते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम की दोस्ती का यह अनोखा संदेश दूर-दूर तक फैले। जहां आज लोग धर्म के नाम पर झगड़ा कर रहे हैं, वहीं हमारे गांव में हिन्दू-मुस्लिमों के बीच एक खास तरह का जुड़ाव और भाईचारा है।

साभार : 'हिन्दुस्तान दैनिक', 18 सितंबर 2009

अणुव्रतों के फूल उगाएं

उजड़ा-उजड़ा जीवन जंगल,
सुरभित नव उद्यान करें।
अणुव्रतों के फूल उगाएं,
आओ! प्रत्याख्यान करें।

प्रचुर पुण्य से जीवन पाया,
कुछ करने का अवसर आया।
स्वर्णिम पल ये चले न जाएं,
उठो! समय का ध्यान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

समता, क्षमता, इच्छाशक्ति,
त्याग-तपस्या से अनुरक्ति।
और विरक्ति छल-प्रपंच से,
जीवन ऐसा निर्माण करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

खाना-पीना कब क्या कैसे?
जी रहे बस जैसे-तैसे!
संकल्प का शंख बजाकर,
मर्यादा का मान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

असंयम के कष्ट अकथ है,
भोगों से जीवन लथपथ है।
दलदली बीहड़ राहों को,
सुगम सरल आसान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

संयम जीवन का सच्चा धन,
स्वस्थ समर्थ रहते तन-मन।
संयममय जीवन ही जीवन,
फिर से यह ऐलान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

जो जीवन व्रत-नियमहीन है,
दिशाहीन वह लक्ष्यहीन है।
व्रत से हुए प्रशस्त पथ पर,
लें पाथेय प्रयाण करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

बढ़ती पुण्य सम्पदा भारी,
संवर की दृढ़ चारदीवारी।
कर्म-निर्जरा की शक्ति से,
आत्म-तत्त्व पहिचान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

मन के हारे मन के अनुचर,
भय-संकट हैं कदम-कदम पर।
अहा! हम स्वतंत्र बन्दी!
मुक्ति का आह्वान करें।
आओ! प्रत्याख्यान करें।

● डॉ. दिलीप धींग
53–बी, डोरे नगर
उदयपुर – 313002 (राज.)

कहो क्या होगा

❑ उदयभानु हंस ❑

दिल है बड़ा उदास, कहो क्या होगा,
संकट है आसपास, कहो क्या होगा।

मंदिर-मठों में बैठ कर भी संन्यासी,
ओटन लगे कपास क्या होगा।

नारी का तन उघाड़ने की होड़ लगी,
यदि है यही विकास, कहो क्या होगा।

जब देश की जड़ खोदने वाले नेता
खुद लिखेंगे इतिहास, कहो क्या होगा।

नेताओं ने भ्रष्टाचरण से जनता का
है खो दिया विश्वास, कहो क्या होगा।

जंगल के शेर अब तो भूख के मारे,
खाने लगे हैं घास, कहो क्या होगा।

भीतर तो गंदगी है, भरी कालिख है,
उजला मगर लिबास, कहो क्या होगा।

प्यासे हरिण की भांति लोग भटक रहे,
मरुस्थल में जल की आस, कहो क्या होगा।

भूलेंगे अपनी चाल अगर 'हंस' कभी,
कौवे रचेंगे रास, कहो क्या होगा।

202, लाजपत नगर, हिसार–125001 (हरियाणा)

अणुव्रत संदेश

अणुव्रत का संदेशा लेकर,
सबको आगे बढ़ना होगा।
मोह निद्रा का त्याग करके
नव जीवन को गढ़ना होगा।

आतंकवाद की छाया काली,
घृणा भरी और हिंसा वाली।
चाहे दुर्गम सफर बड़ा है,
प्रेम डगर पर चढ़ना होगा।

कैसा चलन आज हो गया,
अहिंसा का बस राज हो गया,
नैतिकता की कलम थाम कर,
प्रेम का पाठ पढ़ना होगा।

निश्छल और सरल बनें सब,
निर्मल नीर से तरल बनें सब।
'अणुव्रतों' का नारा गूंजे,
'सत्य' रूप निरखना होगा।।

अहिंसा व्रत

जीवन को समझना होगा,
अहिंसा व्रत अपनाना होगा।

चारों ओर है मारा-काटी,
कैसी आज चली परिपाटी,
भाई-भाई के दुश्मन हुए,
इनको पास बिठाना होगा।
अहिंसा व्रत अपनाना होगा।

बम-बंदूक और तलवारें,
हिंसा फैली द्वारे-द्वारे,
खूब सो लिए गहरी नींद,
सबको अब जगाना होगा।
अहिंसा व्रत अपनाना होगा।

आतंकवाद की छाया काली,
देखो किसने हम पर डाली,
कायरता की इस डायन को,
प्रेम पूर्वक भगाना होगा।
अहिंसा व्रत अपनाना होगा।

जब जागो तब हुआ सवेरा,
देखो अणुव्रत ने डाला डेरा,
झूठ-कपट और बेईमानी में
'सत्य' को मार्ग दिखाना होगा।
अहिंसा व्रत अपनाना होगा।

● **सत्यनारायण 'सत्य'**, *समता भवन के पास,*
रायपुर (भीलवाड़ा–राज.) 311803

दीपक और अंधकार

दंभ में तम ने कहा
दीप को ललकार कर।
क्यों जला ही जा रहा,
वक्त तू बेकार कर।

आकृति तेरी लघु है,
मैं असीमित तम घनेरा।
व्योम से धरती के मध्य,
देख तू! अस्तित्व मेरा।।

साथ में मेरे हवा है,
झंझावतों सी रात भी।
सह सकेगा तू भला,
झोकों का आघात भी।।

गहन गहराता हूं मैं,
छा रहा काला अंधेरा।
दीप-तू तिल रोशनी का,
है नगण्य-महत्व तेरा।।

दीप बोला तम तुझे,
इतना! अहंकार है।
आलोक तू नहीं जानता,
इससे तू अंधकार है।।

आलोक थोड़ा ही भला,
विश्वास की आवाज है।
पा संभलता आदमी,
दीप! वो आगाज है।।

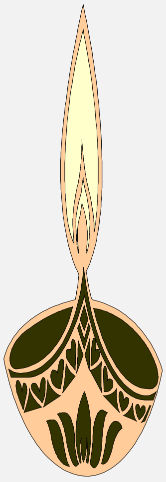

दीप हूं विश्वास का
आलोक हूं मैं प्राण का।
तू अंधेरा मैं उजाला,
हूं हृदय में ज्ञान का।।

प्रेरणा उत्कर्ष की मैं
सत्य-बल संघर्ष का।
जितना जलाओ मैं जलूं,
हूं उजाला हर्ष का।।

रोकता पथ तू अंधेरे
आपदा बन तू अड़े।
व्यक्ति चाहे उजाला
काम कर ले वो बड़े।।

अपनत्व तुम से तम बता
है कहां संसार में।
कौन चाहे, अपना तुझ को
डूबे अंधकार में।

दीप की बातें सुनी,
कांपा अंधेरा ढह गया।
दीपक जला दीपक तले,
सिमटा अंधेरा खो गया।।

सत्य अहिंसा दीप मन में
जल उठे जब ज्ञान के।
हो अंधेरे दूर मन के,
दूर दुःख अज्ञान के।।

सीख अणुव्रत

उपकृत करे-अणुव्रत अनोखा, यह वह पावन मंत्र है।
मंत्र यह महामंत्र समझा, बुद्धि-मन का तंत्र है।
सहज साधन साधना, उपासना-आराधना।
भाव-यह-अनुभाव अमृत-गृहस्थ जीवन मंत्र है।।

सत्य-जीवन साधना का सत्यता ही मर्म है।
अहिंसा, कर्त्तव्य-पालन-समझो, मानव धर्म है।
नीर गंगा-शांत धारा, मुक्ति पथ अणुव्रत का।
प्राण का आधार अजीवन का बड़ा सद् कर्म है।।

स्नेह-सेवा-सहृदयता, मानवीयता-जाप है।
उपकार, दिनचर्या-भली, हर लेती भव-संताप है।
सीख, अणुव्रत-सफल जीवन, सुगम साधन पंथ यह,
कर्म है कर्त्तव्य-पावन-जिन्दगी का माप है।।

● **रामगोपाल 'राही'**
गणेशपुरा–लाखेरी – 323615 (बूंदी–राजस्थान)

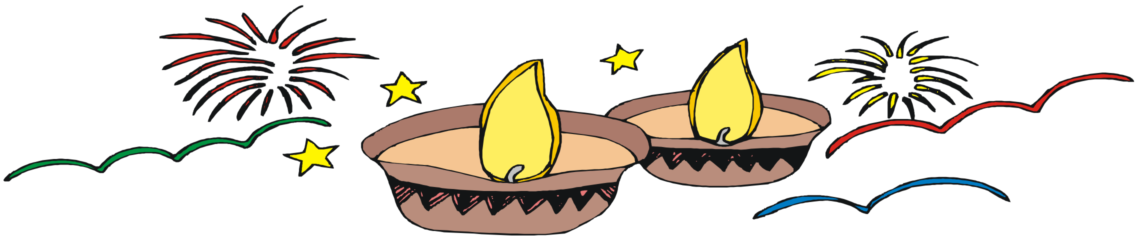

दीपोत्सव का उद्देश्य

• अशोक सहजानन्द •

दीपावली भारत का सांस्कृतिक पर्व ही नहीं, एक राष्ट्रीय पर्व है। सभी संप्रदाय के लोग भिन्न-भिन्न रूपों में इस त्यौहार को मनाते हैं। जो इससे प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़े हैं, वे भी अप्रत्यक्ष रूप से कहीं न कहीं जुड़े हुए हैं। त्यौहार के रूप में प्रचलन कब हुआ यह कहना मुश्किल है। कुछ लोगों की मान्यता है कि राजा बलि ने देवताओं को बंदी बनाया तब उनके साथ लक्ष्मी को भी बंदी बना लिया था। तब विष्णु ने वामन रूप धारण कर देवताओं सहित लक्ष्मी को बलि के बंदीगृह से आज के ही दिन मुक्त कराया। इस कारण इस दिन लक्ष्मी की पूजा प्रारंभ हो गई।

कुछ विद्वानों का कथन है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम लंका विजय करके सीता लक्ष्मण सहित अयोध्या लौटे तो अयोध्या वासियों ने पूरे राज्य में विशाल उत्सव मनाया। घर-घर दीपक जलाये गये इसलिए कार्तिक अमावस्या के दिन दीपमालिका करने की प्रथा चली।

जैन परंपरा के अनुसार महावीर अपने जीवन के 72वें वर्ष में पावापुरी में चातुर्मास बिताते हैं और अपना निर्वाण समय नजदीक आया देखकर कार्तिक वदी चौदस से छरम् तप करके उसी दिन से अंतिम उपदेश प्रारंभ करते हैं जो अमावस्या की रात्रि तक निरंतर अविरल चलता रहा। हजारों देव, दानव, मानव उनके समवसरण में एकाग्रचित्त बैठे उपदेश का अमृत-पान कर रहे हैं। 16 प्रहर की देशना देते ही अमावस्या की प्रथम रात्रि में भगवान मानव-देह त्यागकर मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं। भगवान का निर्वाण होते ही चारों तरफ शोक, उदासी, उद्विग्नता छा जाती है। भगवान के इस अंतिम समवसरण में अठारह गण राजाओं ने भी उपवास पौषध करके धर्माराधना की। निर्वाण प्राप्त होते ही समूचे लोक में एकदम सघन अंधकार को दूर करने के लिए देवताओं और मानवों ने मिलकर प्रकाश करने का निश्चय किया। देवताओं ने रत्न एंव मणि दीपों से प्रकाश किया तो मानवों ने घर-घर माटी के दीये जलाकर उद्योत किया, अंधकार भगाया।

आचार्य हेमचन्द्र सूरि आदि जैन इतिहासकारों का कथन है उसी दिन से भारत में दीपमालिका पर्व का प्रारंभ हुआ। राम-राज्याभिषेक उत्सव तथा भगवान महावीर निर्वाण की दोनों घटनाओं में समानता यही है कि जनता ने दीप जलाकर प्रकाश उत्सव मनाया। इससे यह भी संभव है कि राम युग में अमावस्या को दीपमालिका करने की एक घटना मात्र घटी हो परन्तु शायद उसे उत्सव का रूप नहीं दिया गया हो और न ही प्रतिवर्ष कार्तिक अमावस्या को दीप जलाने की प्रथा चली हो, क्योंकि राम और महावीर के बीच के समय में कहीं भी दीपोत्सव पर्व मनाने की कोई सूचना प्राप्त होती। वात्सयायन कामसूत्र में इस रात्रि को यक्ष उत्सव मनाने का उल्लेख अवश्य मिलता है, किन्तु उसे दीपपर्व या ज्योतिपर्व नहीं कह सकते। परन्तु जैन इतिहास इसका साक्षी है। भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर इस स्मृति में प्रतिवर्ष अमावस्या को दीपमालिका मनाने की परम्परा थी, कब से चली इसके लिए आचार्य हेमचंद्र सूरि का कथन प्रमाण है।

युग पुरुष महावीर का निर्वाण दिवस होने के कारण जैन परम्परा में दीपावली को ज्योतिपर्व तो माना गया है, परन्तु इस दिन लक्ष्मी-गणेश पूजन की प्रथा क्यों चली इसका कोई समाधानपरक उत्तर नहीं मिलता। लगता है जैनों को देखते हुए ब्राह्मणों ने यह प्रथा चालू की। जैन इस दिन भगवान महावीर का ध्यान-पूजन, गुण-स्मरण करते हों तो ब्राह्मणों ने इस दिन लक्ष्मी-गणेश पूजन की प्रथा चालू कर दी। इस प्रकार एक तरफ ज्ञान-लक्ष्मी की पूजा होने लगी तो दूसरी ओर धन-लक्ष्मी की पूजा होने लगी।

मिट्टी के दीपक तो रातभर टिमटिमाकर थोड़ा-सा प्रकाश फैलाकर बुझ जाते हैं किन्तु इस दिन की प्रेरणा से हमें घट के भीतर चैतन्य दीपक जलाना है। विवेक ज्ञान, बुद्धि का प्रकाश पुनः प्रज्जवलित करना है। जिसका आलोक युग-युग तक मानवता को सन्मार्ग दिखाता रहेगा। अंधकार में भटकने वाले लाखों के लिए प्रकाश स्तंभ बन जाएगा।

जैनधर्म में ज्ञान का सर्वाधिक महत्व है, किन्तु वह यह भी नहीं कहता कि ज्ञान के सिवाय अन्य कुछ नहीं चाहिए। जीवन जीने के लिए मनुष्य को धन की भी जरूरत होती है। जैन गृहस्थ के लिए यह नहीं कहा गया है कि वह धन नहीं

कमाए, गरीब दीन-हीन दरिद्र बना रहे। क्योंकि नीति की दृष्टि से दरिद्रता मनुष्य को पाप के लिए प्रेरित करती है। 'बुमिक्षितः किं न करोति पापं' भूखा चोरी करेगा, झूठ बोलेगा, अन्याय, अनीति आदि करेगा। इसीलिए जैन धर्म में परिग्रह का त्याग जरूरत बताया है किन्तु दरिद्रता को भी स्वीकार नहीं किया गया है और इसका मध्यम मार्ग बताया है धन-ऐश्वर्य-वैभव के प्रति ममता का त्याग करो, मूर्च्छा भाव छोड़ दो।

श्रावक के लिए इच्छा परिमाण व्रत है। कहा गया है इच्छाओं पर नियंत्रण करो, धन की सीमा करो, अगर धन होगा ही नहीं तो कोई सीमा क्या करेगा। इच्छा परिमाण किसका होगा? नास्तिक ग्राम कुतः सीमा? गांव नहीं होगा तो सीमा क्या होगी? इसलिए यह ध्यान देने की बात है कि जैनधर्म का आदर्श दरिद्रता नहीं है, किन्तु धन की दासता का त्याग करने का ही यह उपदेश देता है। धन के स्वामी बनो, धन की ममता के नीचे मत दबो। उसका समाज, राष्ट्र व जीवमात्र के लिए सदुपयोग करो। दान, सेवा, पुण्य कार्य करने के लिए धन का सदुपयोग करना यह जैन आदर्श है। इसलिए जैन धर्म में लक्ष्मी को भी उतना ही महत्व दिया है जितना सरस्वती को। लक्ष्मी है, परन्तु पुण्यानुबंधी। आपको पता होना चाहिए तीर्थंकर भगवान की माता 14 स्वप्न देखती हैं उसमें एक स्वप्न लक्ष्मी का भी है। एक स्वप्न में रत्न-मणियों का ढेर भी देखती है जो लक्ष्मी की सृष्टि है तो लक्ष्मी से जैनों का कोई विरोध नहीं है। बल्कि आज तो लोग यह कहते हैं "जैनों पर तो लक्ष्मी की विशेष कृपा है।" लक्ष्मी और सरस्वती, चक्रेश्वरी और पद्मावती ये सभी जैन संस्कृति की देवियां हैं। फिर दीपावली को लक्ष्मी पूजन करे, सफाई, स्वच्छता, शुद्धता रखें, समाज में पारस्परिक प्रेम, बंधुभाव, स्वधर्मी-सहयोग भाव से मिष्ठान्न, ग्रंथों का आदान-प्रदान हो यह सब तो सामाजिक सौहार्द एवं राष्ट्रीय बंधु भाव की सांस्कृतिक धरोहर है इसमें जैन धर्म का कहीं कोई विरोध नहीं है।

लक्ष्मी पूजा के साथ गणपति पूजा का अर्थ भी यही है कि लक्ष्मी सदुपयोग के लिए सद्बुद्धि की आवश्यकता है। धन कमाना एक अलग बात है। पर उसका सदुपयोग करना हर किसी के लिए संभव नहीं है। प्रायः देखने में यही आता है कि हम अपने धन का सही अर्थों में उपयोग नहीं कर पाते, फिजूलखर्ची, दिखावों में ही इसका अपव्यय होता रहता है।

कहावत भी है

'सुत, दारा और लक्ष्मी पापी के भी होय।'

पाप से कमाई हुई लक्ष्मी के साथ दुबुद्धि भी आती है। यह दुबुद्धि लक्ष्मी का ही नहीं, लक्ष्मीवान का भी नाश कर डालती है। इसलिए लक्ष्मी के साथ सद्बुद्धि की आवश्यकता होती है। विवेक की आंख खुली रहनी चाहिए। अंधे होकर धन के पीछे मत पड़ो वरना धन अनर्थकारी हो जाएगा।

प्रधान संपादक : 'सहज–आनन्द' (त्रैमासिक)
239, गली कुंजस, दरीबा कलां, दिल्ली–110006

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- हमारे देश में पर्यटक आगमन में साढ़े सात फीसदी की दर से वृद्धि हो रही है। इस वर्ष हमारे देश में 55 लाख विदेशी पर्यटकों के आगमन का अनुमान है, जबकि 2010 में यह आंकड़ा 60 लाख पार करने की संभावना है।
- एक हजार नवजात शिशुओं में 3 से 5 बहरे पैदा होते हैं। देश भर में प्रतिवर्ष 10 लाख शिशु ऐसे पैदा होते हैं जो कम सुनने की किसी न किसी बीमारी के शिकार होते हैं।
- 19 वीं सदी में धरती का औसत तापमान 0.1 डिग्री तथा बीसवीं सदी में 0.2 डिग्री बढ़ चुका है। भारत के लिए चिंताजनक तथ्य यह है कि हमारे हिस्से की धरती का तापमान 0.57 डिग्री प्रति सदी बढ़ा है और 2050 तक यह 2-3 डिग्री तक बढ़ सकता है।
- आदर्श जेल तिहाड़ (दिल्ली) की क्षमता 6200 कैदियों की है लेकिन इसमें 11000 से अधिक कैदी हैं। यहां के कैदियों को प्रशिक्षण देकर उनके भविष्य को सुधारने का भी प्रयास कर रही है स्वयंसेवी संस्थाएं।
- देश में मुकदमों के त्वरित निपटारे के लिए पांच हजार ग्रामीण अदालतों के गठन का काम अहिंसा दिवस दो अक्टूबर 2009 से प्रारंभ हुआ है।
- विश्व में जितने कुपोषित बच्चे हैं उनकी एक तिहाई संख्या भारत में है। भारत की उल्लेखनीय आर्थिक विकास के बावजूद देश में तीन साल तक की उम्र के लगभग 4.6 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार हैं।
- देश के लगभग 53 फीसदी बच्चे यौन शोषण के शिकार हैं। यौन शोषण 5 वर्ष की उम्र से प्रारंभ होता है, 10 वर्ष की उम्र में ज्यादा और 12-15 वर्ष की उम्र में सबसे ज्यादा होता है।
- विकासशील देशों में करीब एक अरब 60 करोड़ लोगों को बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है। अकेले भारत में 40 करोड़ घरों में बिजली उपलब्ध नहीं है।

विश्व बैंक रिपोर्ट

- हमारे देश की 60 प्रतिशत जनता खेती पर निर्भर है।

अध्यात्म और विज्ञान का समागम

● दयानन्द भार्गव ●

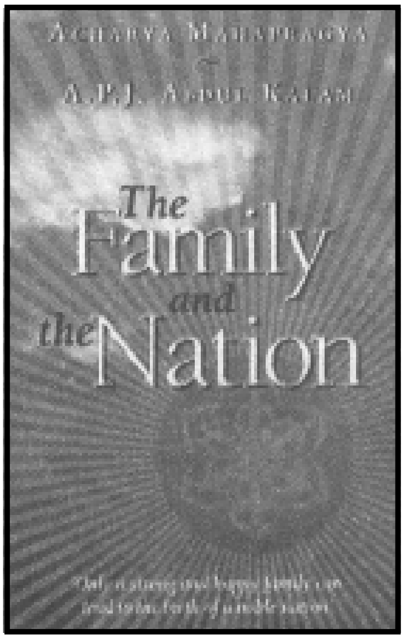

प्रस्तुत पुस्तक अनेक कारणों से विशिष्ट है। आचार्य महाप्रज्ञ इस पुस्तक का केन्द्र बिन्दु अध्यात्म और विज्ञान के संयुक्त प्रयास द्वारा समस्याओं के समाधान ढूंढने का उपक्रम मानते हैं। इसे ही दूसरे शब्दों में प्राच्य और प्रतीच्य, शाश्वत और समकालिक, प्राचीन और नवीन के संश्लिष्ट समन्वय का प्रयत्न भी कह सकते हैं। इस प्रकार के समन्वय के अनेक प्रयत्न हुए हैं। वस्तुतः ऐसे प्रयत्न का संकेत उपनिषदों के अविद्या (कर्म) और विद्या (ज्ञान), अपराविद्या और पराविद्या तथा गीता के ज्ञान और विज्ञान के समन्वय की प्रवृत्ति में ही उपलब्ध हो जाता है। तथापि प्रस्तुत पुस्तक की विशेषता यह है कि इसके लेखकों में एक अध्यात्म-पुरुष तथा दूसरा वैज्ञानिक है। इन दोनों लेखकों का ज्ञान केवल सैद्धांतिक ही नहीं, व्यावहारिक भी है। दोनों का लंबा, व्यापक और विशाल आत्मीय जनसंपर्क है। परिणामस्वरूप इन्होंने आज की समस्या को निकट से देखा है और उनके समाधान के अनेक प्रयोग स्वयं किए हैं। पुस्तक में दोनों लेखकों के बीच ऐसा तादात्म्य संबंध स्थापित हुआ है कि यह पहचान पाना कठिन है कि पुस्तक का कौन-सा अंश किसने लिखा है। दो भिन्न छोर के व्यक्तियों में ऐसा तादात्म्य स्थापित हो जाना इस बात का सूचक है कि जिस समन्वय का उपक्रम इस पुस्तक में हुआ है वह समन्वय, औपचारिक और ऊपरी नहीं अपितु आत्मिक और अंतरंग है।

पुस्तक में अनेक स्थलों पर आचार्य महाप्रज्ञ तथा डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अंतरंग संवाद शब्दशः उद्धृत हैं। ये संवाद किसी उपन्यास के संवादों से भी अधिक रोचक हैं। इन संवादों में डॉ. ए. पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपना हृदय जिस प्रकार उड़ेला है, वैसा वे शायद अपनी कृतियों में नहीं कर पाए, क्योंकि यहां उनके सम्मुख एक निर्मल चित्त संत थे। इन संवादों में ही एक स्थान पर एक वैज्ञानिक के रूप में कलाम साहब का यह कथन कि 'आधुनिक मानव की सबसे बड़ी मूर्खता प्रकृति से टकराना है', सभी वैज्ञानिकों के लिए गायत्री मंत्र के समान है।

पुस्तक में आगे कहा गया है कि हमारी आज की सभ्यता शाश्वत से विच्छिन्न होने के दुष्परिणाम भोग रही है। कलाम साहब सहज ही ईश्वरवादी हैं और आचार्य महाप्रज्ञ आत्मवादी, किन्तु इन दोनों धाराओं के बीच हजारों वर्षों से चलने वाले द्वंद्व का समाहार इस पुस्तक में मानव-कल्याण के रसायन द्वारा यह सुंदर और सहज ढंग से हो गया है कि पता ही नहीं चलता कि इनमें कहीं कोई विरोध है भी। ऐसा इसलिए हो सका कि दोनों लेखकों के मन में संप्रदाय से ऊपर सत्य है।

पुस्तक में अनेक द्वंद्वों से मुक्ति के उपाय बताए गए हैं। शरीर और मन का द्वंद्व, लोक और परलोक का द्वंद्व, भौतिकता और अध्यात्म का द्वंद्व। इन सभी द्वंद्वों को अनेकांत के सिद्धांत द्वारा समाहित कर दिया गया है। भगवान महावीर, महात्मा गांधी, अलकुरआन और तिरुवल्लुवर को तो मुख्य रूप से अध्यायों के प्रारंभ में उद्धृत किया ही गया है, किंतु पूर्व तथा पश्चिम के दार्शनिक और वैज्ञानिकों के शतशः उद्धरणों के माध्यम से जिन सार्वभौम मूल्यों को पुनर्व्याख्यायित करके स्थापित किया गया है। वे मूल्य हैं स्वतंत्रता, संयम, अभय, संतुलन, उदारता, सम्यक् चारित्र और सामाजिक न्याय।

इस पुस्तक में पाठक ऐसे विचित्र संयोग पाएंगे जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। उदाहरणतः प्राणायाम के तत्काल बाद दूसरे ही पृष्ठ पर नमाज की चर्चा है। कुछ मूल्यों की चर्चा विज्ञान के विशेष परिप्रेक्ष्य में है। स्वायत्तता, पारस्परिकता, आदि कुछ ऐसे ही मूल्य हैं। जैन आचार्य लिखें और अहिंसा को न छुएं, यह तो संभव ही नहीं। पर प्रस्तुत ग्रंथ में हिंसा के मूल कारणों तथा अहिंसा की स्थापना के उपायों पर कुछ मौलिक प्रकाश डाला गया है। भाव-शुद्धि इन उपायों के केन्द्र में है।

यूं तो पुस्तक के विवेच्य विषय पुराने से दिखते हैं, किन्तु सारी विवेचना को परिवार और राष्ट्र के ताने-बाने में बुनने का काम नितांत नवीन है। इसे दोनों अंतर्दृष्टि संपन्न लेखक ही कर सकते हैं। पुस्तक का पूरे विश्व पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ना निश्चित है।

पुस्तक : दी फैमिली एण्ड दी नेशन
संपादक : आचार्य महाप्रज्ञ, डॉ. अब्दुल कलाम
पृष्ठ : 216 मूल्य : 250 रुपये
प्रकाशक : हार्पर कालिंस पब्लिशर्स
ए-53, सेक्टर-57, नोएडा (उ.प्र.)

साभार : 'राजस्थान पत्रिका', 7 जून 2009

पांच की जान बचाई - मुकेश तंवर

❑ रजनीकांत शुक्ल ❑

भारत के मध्य भाग में स्थित मध्य प्रदेश को भारत के हृदय प्रदेश के रूप में जाना जाता है। इसकी राजधानी भोपाल के निकट राजगढ़ नाम कारक जिला है। यह अपनी जूट मिल्स व नरसिंहगढ़ में स्थित अभयारण्य के बारे में प्रसिद्ध है। इस अभयारण्य में तेंदुआ, चीतल, सांभर, नील गाय जैसे पशु एवं मोर, धुवर व धनेश आदि पक्षी हैं।

इसी राजगढ़ जिले की खिलचीपुर तहसील के छापीहेड़ा के काछी मोहल्ले में रहता है मुकेश। मुकेश जब छोटा था तभी उसके पिता का साया उसके सिर से उठ गया। गांव में स्कूल घर से दूर था। मोहल्ले के बच्चों के साथ एक दिन वह छोटी उम्र में स्कूल गया। समय से फीस नहीं दे पाया। एक दिन घर का काम न करके ले जाने पर पिटाई हो गई। फिर दुबारा वह स्कूल नहीं गया। उसकी उम्र के लड़के-लड़कियाँ साल-दर-साल पढ़ते, पास होते गए और वह उन्हें आगे बढ़ते देखता रहा। जब उन्हें अच्छे स्कूल के कपड़े पहने, बैग लिए वह आते-जाते देखता तो कई बार उसका भी मन करता कि वह स्कूल जाए।

लेकिन पिता की मृत्यु और घर के हालातों ने उसे चाहकर भी स्कूल न जाने दिया। आखिर वह कर भी क्या सकता था। उसकी मां जैसे-तैसे गृहस्थी की गाड़ी खींच रही थी। अब बड़े सवेरे जब बच्चे स्कूल की ओर जा रहे होते, वह जानवरों को चराने जंगल की ओर चला जाता। दोपहर या शाम को लौटता। जानवरों को चराते-चराते कभी वह दूर तक निकल जाता कभी गांव के पास ही किसी बाग या खेत के निकट भैंस, गाय को छोड़कर खुद भी वहीं कहीं छांव में बैठकर आराम करता। कभी पेड़ों पर चढ़ता, डालियों से लटकता। गर्मियों में आम, जामुन तोड़ता। तालाब नदी में नहाता, तैरता।

उस दिन रविवार था छुट्टी का दिन। लेकिन मुकेश की कोई छुट्टी नहीं थी। अगर वह छुट्टी कर लेता तो जानवर भूखे रहते। सुबह जब वह सोकर उठा उसकी मां कहने लगी आज ऋषि पंचमी का त्योहार है। आज हर मां अपनी संतान की सुख-समृद्धि के लिए व्रत रखेगी और ईश्वर से कामना करेगी कि उसकी संतान सुखी रहे उन्नति के शिखर पर चढ़े उसकी राह में आने वाली बाधाएं दूर हो जाए। रोग-शोक उससे कोसों दूर रहें। कहते-कहते मां ने जब उसके सिर पर हाथ रखा, उसे लगा वह मां के प्यार से सिर से पांव तक भीग गया। मां के उस हाथ में दोहरा आशीर्वाद था एक मां की एक उसके पिता स्व. सिद्धनाथ तंवर का।

रोज की तरह वह घर से भैंस खोलकर बाहर ले चला तो भैंस बार-बार उसकी ओर मुड़कर देखने लगी। उसे लगा जैसे वह भी उससे आशीर्वाद की कामना कर रही हो। मुस्कराते हुए उसे डंडा मार कर या चिल्लाकर आगे बढ़ाने के बजाय उसने उसकी पीठ पर और गर्दन के नीचे हाथ फेरा। भैंस ने उसके भाव को समझकर आगे कदम बढ़ा दिया। रोज साथ-साथ आते-जाते दोनों को एक-दूसरे के भावों को परखना आ गया था। मुकेश भैंस को लेकर आगे बढ़ा। पड़ोस के घरों के बच्चे छुट्टी और त्यौहार का आनंद लेने के लिए घरों में धमाचौकड़ी मचा रहे थे। उनमें से दो एक की नजरें मुकेश से मिलीं। मुकेश ने अपने सिर को एक झटका दिया और भैंस के साथ गली में आगे की ओर बढ़ गया।

आज उसका इरादा गांव से ज्यादा दूर जाने का नहीं था। मां ने भी कहा दोपहर में जल्दी घर आ जाना। गांव से बाहर फेदरा पाला के बड़े तालाब के किनारे भैंस को चरने के लिए छोड़कर वह वहीं बाग में जाकर बैठ गया। उसने सोचा चरते-चरते भैंस को प्यास लगेगी तो तालाब से पानी पी लेगी। दोपहर में उसे घर जाना था, इसलिए वह बैठा-बैठा तालाब की ओर देखने लगा।

यह वही तालाब है जिसमें मुकेश ने तैरना सीखा था। गांव के पास का यह तालाब गांव के लोगों के अनेक काम आता था। गांव के पशु पानी पीते, धोबी कपड़े धोते और गांव के उसके जैसे अनेक लड़के ही क्यों बड़े-बड़े लोग भी उस तालाब में नहाते थे। एक तरफ स्त्रियों के नहाने वाला घाट था। यद्यपि वहां ऐसा कुछ लिखा नहीं था फिर भी महिलाओं के नहाने के स्थान की ओर आमतौर पर कोई नहीं जाता था।

ऋषि पंचमी की धार्मिक मान्यता के अनुसार गांव की कुछ स्त्रियां तालाब की ओर आ रही थीं। उन्हें करीब आते देखा तो मुकेश ने पहचाना। वे सब उसके गांव की ही थीं। उनमें से एक तो जानी बाई तंवर थी, दूसरी उनकी पंद्रह वर्षीय बेटी रामकली। उनके साथ की महिलाएं। रुकमणी, दुर्गी और स्वरूपा थीं।

दरअसल वे ऋषि पंचमी की धार्मिक मान्यता के अनुसार तालाब में 108 डुबकियां लगाने आई थीं। तालाब के पास आते ही वे किनारे से उसके अंदर उतरने लगीं। सबसे पहले रामकली उतरी फिर उसकी मां जानीबाई और फिर रुकमणी दुर्गी और स्वरूपा। अभी वे उसमें आराम से खड़े होने के लिए जगह ही बना रहीं थी कि अचानक रामकली का पैर तालाब की तली की चिकनी मिट्टी में फिसल गया। वह ऐसी लड़खड़ाई कि तालाब के अंदर गहराई की ओर जा गिरी। वहां की गहराई लगभग बारह फिट थी।

रामकली के तो होश ही उड़ गए। पैरों का सहारा हटते ही उसका शरीर उसके काबू में नहीं रहा और संतुलन बनाने के लिए वह हाथ पांव मारने लगी।

पास में खड़ी उसकी मां जानी बाई ने जब उसे लड़खड़ाते देखा तो वह उसे सहारा देने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन इसके पहले कि वह उसे सहारा देती उसका पांव तालाब की गहराई की ओर चला गया और अब वे दोनों ही अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करने लगी।

जब रुकमणी दुर्गी और स्वरूपा ने उन्हें बचने के लिए हाथ पांव चलाते देखा तो वे भी उन्हें बचाने के लिए आगे बढ़ीं। लेकिन दुर्भाग्य से उन्हें भी उन दोनों की तरह तैरना नहीं आता था। उन्हें लगा वे अगर ज्यादा आगे बढ़ी तो वे भी डूब जाएंगी। फिर भी वे अपने सामने रामकली और जानीबाई को डूबकर मरते नहीं देख सकती थीं। असहाय अवस्था में उन्होंने एक बार चारों ओर नजर दौड़ाई। तालाब से दूर-दूर तक उन्हें कोई दिखाई नहीं दिया। कुछ जानवर अवश्य घास चर रहे थे। उन्होंने जोर से बचाने के लिए एक बार पुकार लगाई और फिर स्वयं आगे बढ़ गई।

उन्होंने सोचा अगर जानवर चर रहे हैं तो उनके साथ आस-पास कोई न कोई होगा। उनकी पुकार सुनकर शायद कोई आ जाए। वही हुआ मुकेश ने स्थिति की गंभीरता को समझा और दौड़ता हुआ आ गया। इतनी देर में रुकमणी, दुर्गाबाई और स्वरूपा जी एक-एक कर आगे बढ़ी थी। तैरना न जानने के कारण वे भी डूबने लगी।

मुकेश अनपढ़ जरूर था पर बुद्धिहीन बिलकुल नहीं। उसे पता था अगर सीधे-सीधे में उनके पास चला जाऊंगा तो फिर मुझे भी डूबने से कोई नहीं बचा सकता, क्योंकि डूबने वाली बचने के लिए उसे पकड़ेंगी और वह भी उनके साथ डूबने लगेगा। वह कुशल तैराक था और अनेक बार इसी तालाब को इस पार से उस पार तक तैर कर पार कर चुका था। वह तुरंत उनमें से एक के पास पहुंचा और स्वरूपा दुर्गी और रुकमणी बाई को सिर के बाल पकड़कर उथले पानी की ओर एक-एक कर ले आया।

वे सब अपनी सांसों को व्यवस्थित करती हुई तालाब से बाहर की ओर मुकेश के साथ आईं। इधर मुकेश जानीबाई और रामकली को बचाने के लिए पलटा। अब तक वे दोनों कई डुबकियां खा चुकी थीं और उथले पानी में आने की कौशिश में गहरे पानी की ओर बढ़ चुकी थी। मुकेश ने हिम्मत कर पहले रामकली को बाहर निकाला। वह अर्ध-बेहोशी की हालत में थी। किनारे पर वह उसे दुर्गी और स्वरूपा के सहारे छोड़कर जानी बाई को बचाने के लिए एक बार फिर तालाब में कूद गया।

जब तक वह उसके पास पहुंचा वह लगभग बेहोश हो चुकी थीं। मुकेश ने पूरी ताकत लगा उन्हें बाहर की ओर खींचा। वह धीरे-धीरे उन्हें किनारे की ओर लाने लगा। किनारे तक पहुंचते-पहुंचते, उसका दम फूलने लगा था। जानी बाई पैंतीस साल की थी। किनारे पहुंच कर उन्हें बाहर निकाला और प्राथमिक सहायता देकर पेट से पानी निकाला। धीरे-धीरे उन्हें होश आया इधर रामकली भी अब तक होश में आ चुकी थी।

जैसे-तैसे करके वे गांव तक पहुंचे और खबर की तब सभी लोग दौड़ते हुए आए। मुकेश की बहादुरी और हिम्मत की सभी ने सराहना की। कल तक अनजाना-सा अनपढ़ मुकेश आज पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया। उसके साहस की कहानी स्थानीय समाचार पत्रों ने प्रमुखता से छापी। राजगढ़ के पुलिस अधीक्षक, मुख्य चिकित्सा अधिकारी व बाल कल्याण परिषद् मध्य प्रदेश ने उसका नाम राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया। मुकेश वर्ष 2005 के राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार प्राप्त बच्चों के दल में अपने सामयिक व साहसिक कदम के कारण शामिल हो गया

"पैरों के नीचे धरती आकाश
हमारी बाहों में,
चल दें गर तो मंजिल आए,
खुद-ब-खुद ही राहों में,
हम सब कुछ पा सकते हैं,
मनचाहा इस जीवन में,
करें इरादा कुछ पाने की चाहत
का जो चाहों में।"

एफ–380–एफ, सेक्टर–12,
विजयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

उम्मीद

अपनी दोनों लड़कियों के लिए लड़कों की तलाश थी, नीमा जहाँ भी बात करती, एक ही बात, मेरी बेटियाँ लाड–प्यार में पली हैं, ज़्यादा काम न कर पाएँगी। ऊपर से परिवार भी छोटा हो, लड़का माँ–बाप से दूर हो तो अच्छा। आजकल विचार मिलते नहीं, बच्चों की जवानी खराब करने की बात है। लड़कियाँ ऐसी सीख देकर ब्याह भी दी। सास–ससुर को जवाब देना, कोई काम न करना, सारा दिन मायके में फोन पर ससुराल की खबरें देना, अच्छे से सीख कर आई थीं। माँ ने कभी समझाने की कोशिश न की। अगर बात करती ते दोहरी चाल चलती।

पिछले महीने किसी जानकार की शादी में मेरा नीमा से आमना–सामना हुआ। एक ही मेज पर हम खाना लेकर बैठ गये। कुछ देर में मेरी दो सहेलियाँ भी आ गईं। नीमा बोली, "अरे मेरे बेटे के लिए भी कोई रिश्ता बताओ, मेरी टाँगों में दर्द रहता है, चला नहीं जाता, खाना नहीं बनता, लड़की ऐसी हो जो हमें अपना माँ–बाप समझे।" मैं उसकी लड़कियों से बखूबी परिचित थी। हैरान थी ऐसी उम्मीद पर।

● **शबनम शर्मा**
नवाब गली, नाहन, जिला सिरमौर, (हि.प्र.)

स्वस्थ जीवन और आहार संतुलन

• मुनि किशनलाल •

सामान्यतः हम सोचते हैं कि हम आहार से जीते हैं, निरोग रहते हैं, किन्तु यह आश्चर्य है कि हम अधिक आहार (भोजन) कर बीमार पड़ते हैं और कई बार तो अधिक भोजन मृत्यु का कारण भी बन जाता है।

अनाहार से स्वस्थ रहते हुए दीर्घकाल तक जीवित रहा जा सकता है। दोनों की सापेक्षता को समझेंगे तो सच्चाई का ज्ञान हो जाएगा। जहां आहार ऊर्जा के लिए आवश्यक है वहीं अनाहार ऊर्जा के सम्यक् उपयोग के लिए आवश्यक है। आहार और अनाहार के संतुलन से दीर्घजीवी, ऊर्जावान बने रहा जा सकता है। जब हम अनाहार रहते हैं तब ही आहार की इच्छा होती है और आहार अच्छा लगता है। कहा भी गया है ''भूख मिठी की रोटी'' अर्थात् जब पूरी तरह से खुलकर भूख लगती है तो भोजन का पाचन अच्छा होता है। लगातार आहार ही करते जाएं तो जीवन टिक नहीं सकता और न ही स्वस्थ रहा जा सकता है।

प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार यदि मूल रूप में आसेवन किया जाये तो आहार औषधि का काम करता है। किन्तु जीभ के स्वाद के लिए आहार को विकृत कर (अत्यधिक चटपटा और गरिष्ठ) बना लिया जाता है तो वह स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं रह पाता। जो भी अन्न, शाक-पात एवं फल आदि हैं, वे प्रकृति से मानव शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ही हैं। मनुष्य प्रकृति विरुद्ध स्वाद की लोलुपता अथवा अधिक मात्रा में आसेवन कर अस्वस्थ हो जाता है।

हित, मित, अल्प भोजी स्वस्थ

प्राकृतिक चिकित्सा एवं आयुर्वेद ने तो भोजन के लिए हित, मित और सात्त्विक भोजन का विधान किया है। ''आहार और अध्यात्म'' पुस्तक में आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने एक आचार्य का उदाहरण देते हुए लिखा है

हियाहारा, मियाहारा, अप्पहारा य जे नरा।

न ते विज्जा तिगिच्छंति, अप्पाणं ते तिगिच्छगा।।

जो हित, मित और अल्प मात्रा में भोजन करते हैं उनकी चिकित्सा वैद्य नहीं करते। वे स्वयं अपने चिकित्सक हैं।

बीमारियों का मूल कारण अहितकर, अपरिमित और तामसिक भोजन को ग्रहण करना है। अल्प आहार का तात्पर्य है कम खाना, बार-बार नहीं खाना और एक साथ अधिक वस्तुएं नहीं खाना। यह अल्पहार का स्वरूप है, लेकिन आजकल जन्मोत्सव अथवा अन्य कार्यक्रम के पश्चात् अल्पाहार की व्यवस्था होती है। इस अल्प-आहार को देख लिया जाये तो फिर पूर्ण और महा-आहार के बारे में सोच ही नहीं सकते हैं। पशु-पक्षी के सामने कितना ही भोजन डाल दो वह अपनी जरुरत से अधिक खाना नहीं लेगा। हां यह बात अलग है कि जो पशु मनुष्यों के साथ रहते हैं उनके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता है।

आहार और अनाहार दोनों का संतुलन आवश्यक है। आहार को प्रथम स्थान मिलने का कारण है वह जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। आहार के बिना जीवन चलता नहीं। यह हमारे लिए शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का महत्त्वपूर्ण ऊर्जा स्रोत है।

शाकाहार और अहिंसा

आहार से जीवन चलता है किन्तु अपने जीवन को चलाने के लिए दूसरों के जीवन को नष्ट करना कहां तक उचित है? इसलिए आचार्यो ने कहा 'आहार में अनावश्यक हिंसा न हो' इस आधार से जीवनयापन के लिए आहार भी आवश्यक है। आहार ग्रहण नहीं करेंगे तब स्वयं परलोकगमन कर जाएंगे परन्तु दूसरों को परलोकगमन करवा कर स्वयं के जीवन का निर्वाह भी कैसे करें? इसलिए दोनों के मध्य संतुलन कर समाज में सुव्यवस्था बनाई जा सकती है। आहार का अर्थ है बाहर से लेना; कितना? कब? और कैसे लें? यह मनुष्य के विवेक पर निर्भर करता है। मनुष्य के विवेक को जगाये रखने का कार्य आचार्यों, शिक्षाधिकारियों, शिक्षकों और अभिभावकों का है। पेट को अधिक भोजन देंगे तो दिमाग मौलिक चिन्तन नहीं कर पाएगा, क्योंकि रक्त-प्रवाह भोजन पचाने को लग जाएगा। इसलिए विद्यार्थी वर्ग भोजन भट्ट बनने की बजाए अल्प मात्रा में भोजन ले। दीपक में इतना तेल मत डालो कि दीपक बुझ जाये और इतना कम भी मत डालो की बाती जलकर राख हो जाए। केवल तेल का दीया भरा रहे। तेल से बाती जलती रहे, ऐसे ही भोजन से जीवन ज्योति जलती रहे। शाकाहार जीवन निर्वाह का सहज उपाय है। हिंसा का अल्पीकरण है। अहिंसा की ओर गति है।

आहार का पहला उद्देश्य है जीवन निर्वाह।

आहार का दूसरा उद्देश्य है हिंसा का अल्पीकरण।

आहार का तीसरा उद्देश्य है परिग्रह का भी अल्पीकरण।

आहार का चौथा उद्देश्य है चेतना का जागरण। इस दृष्टि से उणोदरी, परित्याग।

आहार का पांचवा उद्देश्य है आन्तरिक वृत्तियों का संशोधन।

जैन परम्परा में आहार के चार प्रकार बताये हैं ओज आहार, रोम आहार, प्रक्षेप आहार और मानस आहार।

पहला आहार ओज आहार

जीवन की मूलभूत शक्ति जो जीवन पर्यन्त रहती है। बालक गर्भ में इससे विकसित होता है।

दूसरा आहार रोम आहार

शरीर के एक-एक रोम कूप से भी बाहर से हवा, ऊर्जा आदि ग्रहण करता है।

तीसरा आहार प्रक्षेप आहार

स्थूल भोजन कवल से भोजन ग्रहण करते हैं, यह प्रक्षेप आहार अथवा कवल आहार कहलाता है।

चौथा आहार मनोभक्षी आहार

मन में आया भोजन करना है, भोजन हो गया। सब तत्त्व वायुमण्डल और सौर ऊर्जा में भरे हैं। इसके लिए विशिष्ट प्रयोग चाहिए वे अभी सभी को उपलब्ध नहीं है, हो सकता है विज्ञान एक दिन इस सच्चाई को खोज लें। यह संभावना है। एक कैपसूल से पूरे दिन का भोजन हो जाये। उस दिन की प्रतीक्षा करें।

आहार विवेक

आहार विवेक व्यापक शब्द है इसकी मर्यादा और सीमा का अंकन करना कठिन है, असंभव नहीं। जीवन के लिए आहार जरुरी है।

आयुर्वेद के तीन महान् ऋषि चरक, सुश्रुत और वाक्भट्ट हुए हैं। उनकी ही राय ली जाए तो अच्छा रहेगा। कहते है एक बार चरक ऋषि के मन में प्रश्न उत्पन्न हुआ कि मैंने जो कुछ पढ़ाया है, उसको मेरे शिष्यों ने अच्छी तरह से समझा या नहीं? परीक्षा हेतु एक पक्षी का रूप बनाया और वैद्यों के बीच पेड़ पर बैठ कर बोलने लगे कोऽरुक! कोऽरुक! वैद्यों ने सोचा पक्षी बोल रहा है, उसको क्या जवाब देना। वहां से उड़े और वाक्भट्ट जहां थे वहां गये फिर बोलने लगे, कोऽरुक! कोऽरुक! वाक्भट्ट समझ गए यह पक्षी नहीं बल्कि चरक महोदय हैं। उत्तर दिया यः हितभुक् मितभुक् ऋतभुक् स्वस्थ वह है, निरोग वह है, जो हितकारी भोजन को शुद्ध भावना पूर्वक करता है। भावधारा शुद्ध होने से भोजन पूर्ण होता है।

हितभुक् मितभुक् ऋतभुक् तीनों का महत्त्व है। जो मुफ्त नहीं खाता, शोषण कर नहीं खाता। श्रम से उत्पादन कर खाता है। भावक्रिया पूर्वक भोजन किया जाता है, तब वह सात्विक भोजन कहलाता है। जैसा भोजन करते हैं, वैसे ही न्यूरोट्रांसमीटर बनते हैं आहार करते समय केवल आहार, अन्य विचार नहीं। आचार्य महाप्रज्ञजी शिविरों में प्रवचनों द्वारा अनेक बार यह कहते हैं भोजन केवल भोजन, न राग, न आसक्ति, न क्रोध और न अन्य भाव। पूर्ण जागरुकता से किया गया भोजन साधना के लिए श्रेयस्कर है। भाव चिकित्सा का प्रयोग करने वाले साधक को आहार विवेक को प्रथम स्थान देना चाहिए। संतुलित आहार ही आहार विवेक की पहली सीढ़ी है।

आहार-निहार का महत्त्व

आहार शरीर और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है तो निहार (विसर्जन क्रिया) भी उससे कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। यदि विजातीय तत्त्व शरीर से बाहर नहीं निकले तो व्यक्ति शीघ्र ही बीमार हो जाएगा।

भारतवर्ष में प्रातःकाल उषापान की परम्परा थी। घरों में तांबे के बर्तन रहते थे। तांबे के लोटे अथवा बर्तन में रात भर रखा पानी पीने को उषापान कहा जाता है। उषापान करने के पश्चात् मंडुकासन अथवा पेट की नवीं क्रिया, सौ बार कटिचक्रासन कर लिया जाए तो पेट में स्थित मल स्वतः शीघ्रता से बाहर निकल जाता है। व्यक्ति अपने आप को स्वस्थ अनुभव करता है।

इसलिए आहार के साथ निहार पर भी ध्यान देना जरूरी है। आहार, निहार के साथ अनाहार (उपवास) भी आवश्यक है। आचार्य अपने अनुभव सूत्र में बताते हैं "लघनं परमोषधिः" लंघन परम औषधि है। उपवास शरीर से विजातीय तत्त्वों को बाहर निकालने का प्रयास करता है। शरीर में पूर्ण क्षमता है कि वह अपने भीतर रहे हुए रोग को बाहर निकाल सके। उसे अवसर मिलना चाहिए। उपवास ऐसा साधन है कि वह शरीर को स्वस्थ बना देता है। एक बहन को न खाना पचता था, न नींद आती थी, न सुनाई देता था और न पूरा दिखाई देता था। शरीर में एक नहीं दसों बीमारियां थी। घुटनों में दर्द, पेट में दर्द इत्यादि। उसने उपवास प्रारंभ किया। तीन दिन में पेट ठीक हुआ, पांच दिन में सुनाई देने लगा। सात दिन में घुटने व कमर का दर्द ठीक हुआ। 10 दिन में उसका शरीर बिलकुल स्वस्थ हो गया। वह आराम से दर्शन करने आई। फिर उपवास किया अब निंबू पानी और हल्का रस लेने लगी। उसके पश्चात, 10 दिन में पुनः मूल आहार पर आई। उसे अपने स्वास्थ्य के बारे में डॉक्टरों की शरण में नहीं जाना पड़ा।

सफल उपवास

दवा से कई बार मरणासन्न बहन और भाई को डॉक्टर कहता है कि अब तो ये दो चार घंटों के मेहमान है जो कुछ करना है वो करो। जैन परम्परा में संथारे (अनशन) की भावना होती है और उनके अनुसार वह दिन धन्य होगा कि मैं अनशन पूर्वक संथारे में अपने शरीर के प्रति ममत्त्व नहीं रखते हुए न मरने की इच्छा और न जीने की भावना, मात्र समता समाधि पूर्वक जीवन को व्यतीत करने का संकल्प लूँ। यह संथारा है। एक बार एक बहन को संथारा पचखा दिया और उसने अपनी इच्छा से स्वीकार किया। रुग्ण और बीमार दिखाई देने वाली बहन धीरे-धीरे उपवास से स्वस्थ नजर आने लगी। डॉक्टर लोग भी उसे चैक करके हैरान हो गए। उपवास में कितनी शक्ति होती है?

रोगी स्वयं अपने शरीर को स्वस्थ तथा निरामय बना देते हैं। जब उसे यह अनुभव होने लगा कि मैं शरीर से भिन्न आत्मा हूँ। मैं आत्मा का स्वरूप हूँ। मैं सद् चिद् आनंद स्वरूप हूँ। तब उसे किसी अन्य पदार्थ की अपेक्षा नहीं रहती वह आनंद स्वरूप में लीन रहती हुई इस जीर्ण शरीर को त्याग कर अगली यात्रा के लिए प्रयाण कर देती है।

बढ़ें संयम पथ पर

लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष

गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन

एवं

समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

आत्मसंयम ही सच्चा अनुशासन : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं। आदमी को चाहिए कि वह अपने आप पर संयम करे, अपनी आत्मा को संयमित करे। यही अपने आपका अनुशासन है। अपने आप पर अनुशासन करने वाला सुखी होता है। अनुशासन से ही सबकुछ ठीक रहता है। प्रजातंत्र में भी अनुशासन आवश्यक है। कर्त्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के बिना प्रजातंत्र का देवता भी विनाश को प्राप्त हो जाता है। जिस विद्यालय के छात्र, शिक्षक एवं प्राचार्य कर्त्तव्यनिष्ठ एवं अनुशासित होते हैं, वह विद्यालय आदर्श विद्यालय बन जाता है, अतः आत्मसंयम ही सच्चा अनुशासन है, ये विचार अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में आयोजित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के छठे दिवस ''अनुशासन दिवस'' पर जनमेदिनी को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने व्यक्त किए। युवाचार्यश्री ने आगे कहा कि विद्यार्थियों में समझ-शक्ति के साथ सहनशक्ति का विकास हो तथा अनुशासन के माध्यम से विकास करें।

कार्यक्रम की प्रमुख वक्ता समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा ने अपने वक्तव्य में कहा अनुशासन व्यक्ति, परिवार एवं समाज के विकास के लिए आवश्यक है। यदि व्यक्ति, परिवार एवं समाज रुग्ण होगा तो उनका विकास संभव नहीं है। यदि इन्सान मन, भाव और इच्छाओं पर नियंत्रण कर ले तो अनुशासन सध सकता है।

डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा अनुशासन नदियों के किनारे जैसा है। जैसे किनारे नदियों को नियंत्रित कर उन्हें उपयोगी बनाते हैं वैसे ही अनुशासन व्यक्ति को नियंत्रित कर उन्हें उपयोगी बनाता है। कार्यक्रम का संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

भूतोड़िया गर्ल्स सी.हा.से. स्कूल में बच्चों को संबोधित करते हुए विजयसिंह बरमेचा ने कहा अनुशासन बच्चों का शृंगार है। इसके माध्यम से बच्चे विकास कर सकते हैं। अणुव्रत समिति लाडनूं के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने कहा अनुशासन बच्चों को महान बनाता है। जगमोहन माथुर ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यवाहक प्राचार्या अल्का गोहर ने कार्यक्रम की सराहना की।

● आदमी का जीवन अनिश्चित है, यह कभी भी समाप्त हो सकता है। अतः अल्पकाल के लिए भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। हर परिस्थिति में समता की आराधना करनी चाहिए। अर्थ और काम पर धर्म का अंकुश रखना चाहिए, सर्वांगीण विकास का जीवन जीने के लिए हर क्षण तत्पर रहना चाहिए। ये विचार युवाचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत समिति, लाडनूं के तत्वावधान में आयोजित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतिम दिन ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर व्यक्त किए।

प्रमुख वक्ता मुनि किशनलाल ने कहा जीवन को किस तरीके से जीया जाये। आज के भौतिक युग में यह एक अहम प्रश्न है। जीवन विज्ञान एक ऐसा शिक्षा दर्शन है जो व्यवस्थित रूप से जीवन जीने की प्रेरणा देता है। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा अणुव्रत दर्शन का अपना महत्व है। इस दर्शन को छात्रों, विद्यालयों, शिक्षकों एवं अभिभावकों तक पहुंचाने के लिए सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक संयुति के रूप में जीवन विज्ञान का प्रवर्तन हुआ।

प्रारंभ आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। आभार ज्ञापन ओमप्रकाश सोनी ने किया। उद्बोधन सप्ताह के सभी कार्यक्रम समिति के संरक्षक विजयसिंह बरमेचा के नेतृत्व में संपन्न हुए।

अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक धर्म है : व्याख्यानमाला

लाडनूं। जैविभा लाडनूं के प्रसार निदेशालय एवं समाज कार्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में अतिथि व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा अणुव्रत असांप्रदायिक धर्म है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई इत्यादि सभी अपने-अपने धर्मस्थानों में जाते हुए अणुव्रती बन सकते हैं। अणुव्रत आचरण पर बल देता है। अणुव्रत 'जैन' नहीं मैन बनाता है। मनुष्य सही मायने में मनुष्य बने यही अणुव्रत की मान्यता है।

डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा आजादी के बाद जब देश के चारित्रिक विकास एवं राष्ट्रीय चारित्र निर्माण को ध्यान में रखकर आचार्य तुलसी ने 1 मार्च 1949 को अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया और इसका प्रथम अधिवेशन 1950 में दिल्ली में हुआ। इसकी गूंज विदेशों में भी सुनाई दी। टाइम्स अमेरिका पत्र में अणुव्रत आंदोलन की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी। अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से आचार्य तुलसी ने लाखों किमी. की पदयात्राएं कर राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में महत्वपूर्ण कार्य किया। डॉ. त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान के अंतर्गत अणुव्रत आचार संहिता, वर्गीय अणुव्रतों एवं अणुव्रत निदेशक तत्वों पर विस्तार से प्रकाश डाला। संयोजन डॉ. प्रतिभा जैन ने किया। विभागाध्यक्ष आशुतोष प्रधान ने आभार व्यक्त किया।

पर्यावरण असंतुलन का प्रमुख कारण है असंयम

लूणकरणसर

● साध्वी पानकुमारी 'प्रथम' के सान्निध्य में आदर्श हैप्पी सेकेण्डरी स्कूल के 500 विद्यार्थियों के मध्य अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का तीसरा दिन "पर्यावरण शुद्धि दिवस" के रूप में आयोजित हुआ। साध्वी परमयशा ने कहा पर्यावरण असंतुलन का प्रमुख कारण है असंयम। पर्यावरण सुरक्षा हेतु सघन अभियान चले। साध्वी मुक्ताप्रभा ने आत्मविकास, एकाग्रता के विकास हेतु मुद्राओं का अभ्यास कराया।

आदर्श हैप्पी सेकेण्डरी स्कूल के प्रधानाध्यापक श्यामसुंदर विश्नोई ने प्रसन्नता व्यक्त की। वरिष्ठ प्राध्यापक ओमप्रकाश विश्नोई ने नैतिक शिक्षा अणुव्रत अभियान की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे ज्ञानप्रदायक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित होने चाहिएं। प्रारंभ कन्या मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभा के पूर्व अध्यक्ष जतन बोथरा ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। बच्चों ने हर्ष व्यक्त करते हुए अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किए।

● चौथा दिवस "साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस" के रूप में एस.एस. आर. पब्लिक सेकेण्डरी स्कूल में साध्वी पानकुमारी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इसमें विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिनमें ब्रह्मकुमारी बहन सत्यवती, सिंह सभा गुरुद्वारे के ज्ञानी मोदनसिंह, मुस्लिम धर्म के एडवोकेट श्यामदीन, सनातन धर्म के प्रतिनिधि हनुमान सिंह शेखावत की प्रमुख उपस्थिति रही। सभी धर्मावलम्बियों का कहना था सभी धर्मों की मंजिल एवं लक्ष्य एक हैं। वहां पहुंचने के मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं। साध्वी परमयशा ने कहा अणुव्रत एक विचार क्रांति है, जिसमें सब धर्मों के प्रति सौहार्द, सापेक्षता, सद्‌भावना का विशाल दायरा है। जो सभी को साथ लेकर चले वही सच्चा धर्म है। इस अवसर पर साध्वीश्री ने उपस्थित बच्चों को अच्छे विद्यार्थी बनने के लिए कुछ संकल्प कराए। शाला अध्यक्ष उमेदसिंह एवं प्रभूसिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। आभार ज्ञापन भागीरथ बिजारणिये ने किया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

● पांचवां दिवस "नशामुक्ति दिवस" के रूप में साध्वी पानकुमारी के सान्निध्य में ग्रामोत्थान विद्या निकेतन में आयोजित किया गया। साध्वी डॉ. परमयशा ने कहा नशा केवल शराब, बीड़ी, सिगरेट, अफीम का ही नहीं होता इसके अलावा पद का नशा, पैसे का नशा, प्रतिष्ठा का नशा, रूप का नशा, शक्ति का नशा भी मानव मन पर सवार हो रहा है। नशामुक्त जीवन जीने के लिए ध्यान का प्रयोग अपेक्षित है। साध्वी मुक्ताप्रभा ने व्यक्तित्व विकास की चर्चा की।

प्रारंभ ग्रामोत्थान विद्या निकेतन की कन्याओं द्वारा मधुर गीत के संगान से हुआ। कन्या मंडल की बहनों ने "बदले युग की धारा" का संगान किया। संचालन हनुमान सिंह शेखावत ने किया। इस अवसर पर स्कूल के प्राचार्य एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ने भी अपने विचार रखे। मगन बोथरा ने "संयममय जीवन हो" गीत का संगान किया।

● छठा दिवस "अनुशासन : संस्कारों की सौरभ" के रूप में एस.एस.आर. पब्लिक सेकेण्डरी स्कूल तथा ग्रामोत्थान विद्या निकेतन के संयुक्त तत्वावधान में सभा भवन में आयोजित हुआ। साध्वी पानकुमारी ने कहा जीवन की अनमोल विरासत है अनुशासन। अनुशासन जीवन की पृष्ठभूमि को मजबूत बनाता है। अनुशासित व्यक्ति मंदिर के दीपक की तरह हर आंख की पूजा प्रतिष्ठा बनता है। साध्वी राजकुमारी ने कहा अणुव्रत ईमान का रास्ता है, इंसाफ का गुलदस्ता है एवं नव निर्माण का आलोक है। साध्वी विनम्रयशा ने कहा अनुशासन के बलबूते परिवार, समाज और स्कूल का नाम रोशन होता है। इस अवसर पर साध्वी मुक्ताप्रभा, साध्वी परमयशा ने विचार रखे। एस.एस. आर. स्कूल के प्रधान हनुमान सिंह शेखावत और ग्रामोत्थान स्कूल के अध्यक्ष भागीरथ बिजारणिया ने अनुशासन को परिभाषित करते हुए अपनी जीवन शैली की अनमोल बातें प्रस्तुत कीं।

इसी क्रम में सप्ताह के अन्य कार्यक्रम भी क्षेत्रीय स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थलों पर साध्वी पानकुमारी के सान्निध्य में आयोजित किये गये।

अजमेर

अणुव्रत समिति अजमेर द्वारा 5 सितंबर से 11 सितंबर 09 तक साध्वी कानकंवर की प्रेरणा से विद्यालयों एवं स्थानीय सभा भवन में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह उत्साहपूर्ण मनाया गया। सप्ताह के कार्यक्रमों का निम्न क्रम रहा

● 7 सितंबर 09 को राजकीय कन्या मॉडर्न विद्यालय में अणुव्रत प्रेरणा दिवस का आयोजन छात्र-छात्राओं के मध्य हुआ। इस

केन्द्रीय कन्या माध्यमिक विद्यालय अजमेर में विद्यार्थी अणुव्रत पट्ट भेंट करते अध्यक्ष जीतमल छाजेड़ एवं अन्य।

अवसर पर साध्वी विद्युतप्रभा, साध्वी किरणयशा ने विद्यार्थियों को अणुव्रत आचार संहिता की जानकारी दी एवं संकल्प कराए। संस्था अध्यक्ष जीतमल छाजेड़ ने अणुव्रत नियमों की विस्तार से जानकारी दी। विद्यालय में अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया। कार्यक्रम में सरला कोठारी, प्रकाश कोठारी, कमलादेवी छाजेड़, रूपकंवर छाजेड़, रेखा मेहता की प्रमुख उपस्थिति रही। विद्यालय की प्राचार्या आशा गेलड़ ने आभार ज्ञापित किया।

● 9 सितंबर 09 को लगभग 650 विद्यार्थियों एवं 35 शिक्षकों के मध्य नशामुक्ति दिवस मनाया गया। जीतमल छाजेड़ ने विद्यार्थी एवं शिक्षक अणुव्रत नियमों की जानकारी दी। इस अवसर पर साध्वी विद्युतप्रभा, साध्वी चारित्रप्रभा ने अणुव्रतों का मार्मिक विवेचन किया। अणुव्रत समिति द्वारा विद्यार्थी अणुव्रत का पट्ट भेंट किया गया। प्रधानाचार्य दीपचंद मूंदड़ा ने आभार व्यक्त किया।

● 10 सितंबर 09 को राजकीय केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय पुरानी मंडी अजमेर में कक्षा 11 की लगभग 500 छात्राओं एवं अध्यापिकाओं के मध्य ''जीवन विज्ञान दिवस'' मनाया गया। जीतमल छाजेड़ ने अणुव्रत का परिचय दिया। समिति द्वारा विद्यालय में अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया। कार्यकर्ताओं की सराहनीय भूमिका रही। कार्यक्रम के अंतर्गत राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा एवं मंत्री मनोहरलाल बाफना भी उपस्थित हुए। सभी कार्यक्रमों का विवरण स्थानीय राजस्थान पत्रिका एवं भास्कर में प्रकाशित हुआ।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

जीवन को सुखी बनाने का मंत्र है अहिंसा

किशनगढ़

अणुव्रत समिति किशनगढ़ के तत्वावधान में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के सभी दिवस प्रातःकालीन एवं रात्रिकालीन सत्र में आयोजित हुए। रात्रिकालीन कार्यक्रमों के अंतर्गत नाटक, भजन एवं वक्तव्य रखे गये।

● 7 सितंबर 09 को अणुव्रत चौक सभा भवन में ''अहिंसा दिवस'' के रूप में अणुव्रत सप्ताह का शुभारंभ हुआ। साध्वी सरस्वती ने अहिंसा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा अहिंसा चेतना का जागरण जीवन में सुख ही सुख लाता है। इस अवसर पर साध्वी संवेगप्रभा, साध्वी नंदिताश्री एवं साध्वी तरुणप्रभा ने अपने विचार वक्तव्य, गीत एवं कविता के माध्यम से प्रस्तुत किये। प्रारंभ निर्मला जामड़ द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेश जामड़ ने भी अपने विचार रखे।

● 8 सितंबर 09 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' अणुव्रत चौक सभा भवन में मनाया गया। साध्वी सरस्वती ने जल संरक्षण एवं इसके उपयोग पर प्रकाश डालते हुए कहा पानी का अपव्यय न करें, बल्कि पानी को घी समझ कर उसका सदुपयोग करें। क्योंकि आज पानी के संयम की बहुत आवश्यकता है। पानी बचाने की परिचर्चा पूरे शहर के एक-एक घर में होनी चाहिए। पानी प्रकृति का एक अमृत उपहार है। इस अवसर पर साध्वी संवेगप्रभा, साध्वी नंदिताश्री, साध्वी तरुणप्रभा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो. आर.पी. शर्मा, मंत्री सुरेश जामड़, सपना भंडारी ने अपने विचार रखे।

● तृतीय दिवस का आयोजन 9 सितंबर 09 को ''अनुशासन दिवस'' के रूप में हुआ। साध्वी सरस्वती ने कहा जहां सहनशीलता नहीं वहां अनुशासन नहीं। आज सहनशीलता का अभाव हो गया है और क्रोध चित में छा गया है। हमारे आचरण में जब तक परिवर्तन नहीं आएगा तब तक जीवन में परिवर्तन नहीं आएगा। इस अवसर पर साध्वी नंदिताश्री, साध्वी तरुणप्रभा, कानसिंह कर्णावट, सुरेश जामड़ एवं शांति कोटेचा ने अपने विचार रखे। मंगलाचरण निर्मला जामड़ ने किया।

● 10 सितंबर 09 को चौथा दिवस ''नशामुक्ति दिवस'' के रूप में स्थानीय सभा भवन में मनाया गया। साध्वी सरस्वती ने कहा व्यसन एक महामारी है। यह संक्रमित रोग की तरह फैलता जा रहा है। आज विद्यार्थी एवं युवा वर्ग व्यसन में डूबा हुआ है। नशा पढ़े-लिखे लोगों को भी मूर्ख बना देता है। अतः नशा छोड़ो एवं जिंदगी चुनो। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे।

● पांचवां दिवस 11 सितंबर 09 को ''जीवन विज्ञान दिवस'' के रूप में मनाया गया। इसमें बिरदीचंद पोखरना, कृष्णचंद्र टवाणी एवं सुरेश जामड़ की प्रमुख उपस्थिति रही। सभी महानुभावों का कहना था कि बोलना भी एक कला है। मंच से बोलने वाले व्यक्ति से अपेक्षा रहती है कि वह कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कहे। निर्मला जामड़ ने जीवन विज्ञान पर विचार रखे। मंगलाचरण शांति कोटेचा एवं सुनीता संचेती ने किया।

● 12 सितंबर 09 को छठा दिवस ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' के रूप में साध्वी सरस्वती के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा समन्वय के लिए हम साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस मना रहे हैं। अणुव्रत किसी को वर्ण, जाति के आधार पर ऊंचा या नीचा नहीं मानता। धर्म का संबंध भय से नहीं मैत्री से है। अतः सभी धर्मों में आपसी सौहार्द रहना आवश्यक है। साध्वी संवेगप्रभा, साध्वी नंदिताश्री, साध्वी तरुणप्रभा ने विचार रखे। मुख्य वक्ता कृष्णचन्द्र टवाणी थे।

● सप्ताह का समापन समारोह ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' के रूप में मनाया गया। समारोह में साध्वी सरस्वती एवं मूर्तिपूजक संघ की साध्वी सुयशा ने भाग लिया। साध्वियों ने कहा मानव को अच्छा मानव बनाने का कार्यक्रम ही अणुव्रत है। नैतिक मूल्य और अणुव्रत एक-दूसरे का पर्याय हैं। अणुव्रत छोटे-छोटे नियमों का ऐसा जीवन दर्शन है जिसे व्यक्ति स्वीकार कर अपनी दशा एवं दिशा बदल सकता है। इसलिए अणुव्रती बनें, व्यसनमुक्त बनें।

कार्यक्रम में बच्चों ने दहेज प्रथा पर भावपूर्ण नाटिका प्रस्तुत की एवं बुरी बातें छोड़ने के लिए जोशपूर्ण कव्वाली प्रस्तुत की। समिति के संरक्षक पन्नालाल छाजेड़ ने सप्ताह के कार्यक्रमों में अपनी अभिव्यक्ति देने वाले सभी बच्चों एवं बड़ों का सम्मान किया। मंदिर मार्गी समाज के वीरेन्द्र बहादुर भंडारी, तेरापंथ समाज के मालचंद सुराणा ने नाटक प्रस्तुत करने वाले बच्चों को पारितोषिक दिया। सीमा जैन एवं निर्मला जामड़ ने मंगलाचरण किया। कमल बैद एवं कांता मेहता ने भजन प्रस्तुत किया। समारोह में सभी समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। संचालन सुरेश जामड़ ने किया।

नशा मानव को दानव बना देता है

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

अणुव्रत समिति नोहर द्वारा आयोजित सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर बोलते हुए सुशीला बांठिया

नोहर

● 5 सितंबर 09 : स्थानीय सभा भवन में साध्वी मानकुमारी के सान्निध्य में ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' का आयोजन हुआ। मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने किया। साध्वी मानकुमारी ने कहा यहां बैठे सभी लोगों में कोई हिन्दू है, कोई ब्राह्मण है, कोई मुसलमान है। सभी को अपने-अपने धर्म का पालन करने का अधिकार है। सम्प्रदाय बुरे नहीं साम्प्रदायिकता बुरी है। अतः सभी इससे बचें और अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम अपनाकर अपने जीवन को बदलें। इस अवसर पर साध्वी कमलयशा, साध्वी इन्दुयशा ने अपने विचार रखे। तेयुप अध्यक्ष मुकेश बरड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रामचन्द्र पारीक, प्रभारी सुशीला बांठिया तथा अन्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

● 6 सितंबर 09 को ''अहिंसा दिवस'' का आयोजन जैन भवन में साध्वी मानकुमारी के सान्निध्य में हुआ। साध्वी इन्दुयशा ने कहा वर्तमान में बढ़ती हुई हिंसा को रोकने के लिए व्यक्ति-व्यक्ति ''अहिंसा परमो धर्मः'' के सूत्र को अपने जीवन में अपनाए। साध्वी मानकुमारी ने महावीर द्वारा बताये गये अहिंसा के मार्ग पर चलने की बात कही। इस अवसर पर सभाध्यक्ष चन्द्र मोहन छाजेड़, अणुव्रत प्रभारी सुशीला बांठिया ने अपने विचार रखे। अध्यक्ष पारीक ने अतिथियों को साहित्य भेंट किया।

● 7 सितंबर 09 को ''अणुव्रत चेतना दिवस'' का आयोजन नेहरू बाल वाटिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य अभय कृष्ण गुप्ता ने की। साध्वी कुशलप्रज्ञा ने विद्यार्थियों को चरित्रनिष्ठ, नैतिक व ईमानदारी से जीवन जीने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर साध्वी इन्दुयशा, किरण छाजेड़, सरोज बरड़िया, तारा बांठिया ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर उपस्थित लगभग 700 छात्र-छात्राओं ने विद्यार्थी अणुव्रत संकल्प ग्रहण किए। स्कूल के प्राचार्य रामकिशन ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। सुशीला बांठिया ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए विद्यालय में अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

● 8 सितंबर 09 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' का आयोजन साध्वी मानकुमारी के सान्निध्य में किया गया। मुख्य वक्ता साध्वी कीर्तिरेखा ने सभी उपस्थित महानुभावों से प्रकृति के विरुद्ध नहीं चलने का आह्वान किया। आपने शुद्ध पर्यावरण को स्वस्थ जीवन के लिए अति आवश्यक बताया। कार्यक्रम में साध्वी कमलयशा, कुसुम बरड़िया, मुकेश बरड़िया, महेन्द्र सिपानी ने विचार रखे। संचालन एवं आभार ज्ञापित सुशीला बांठिया ने किया।

● 9 सितंबर 09 को ''नशामुक्ति दिवस'' उपकारागृह में साध्वी कीर्तिरेखा, कमलयशा की उपस्थिति में मनाया गया। मुख्य अतिथि एस.डी.एम. नारायण सिंह चारण थे। साध्वी कीर्तिरेखा ने अणुव्रत को जीवन रूपांतरण की प्रयोगशाला बताते हुए कहा नशा मानव को दानव बना देता है। मानव को मानव तभी कहा जा सकता है जब उसमें मानवीय गुण हों। साध्वी कमलयशा ने बंदी भाइयों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। इस अवसर पर उपस्थित बन्दीजनों ने व्यसनमुक्ति का संकल्प लिया। एस.डी.एम. नारायण सिंह का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। सुशीला जैन ने बंदीजनों को अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

● 10 सितंबर 09 को ''अनुशासन दिवस'' का कार्यक्रम चौधरी पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय में रखा गया। मुख्य वक्ता साध्वी कुशलप्रज्ञा थी। अध्यक्षता प्रिंसिपल प्रताप सिंह सिंवर ने की। साध्वी कुशलप्रज्ञा ने कहा बदलते परिवेश में अनुशासन बहुत जरूरी है। अनुशासन के अभाव में विकास अवरुद्ध हो जाता है। साध्वी कमलयशा ने छात्र-छात्राओं को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अणुव्रत नियमों को स्वीकार किया। सुशीला बांठिया, किरण छाजेड़, तारा बांठिया, रेशमी जैन व कुसुम बरड़िया, सरोज बरड़िया ने विचार रखे। स्कूल के प्रधानाचार्य को साहित्य भेंट किया गया।

● 11 सितंबर 09 को सप्ताह का अंतिम दिवस ''जीवन विज्ञान दिवस'' के रूप में आयोजित हुआ। महिला मंडल की बहनों ने प्रेक्षागीत का संगान किया। साध्वी कमलयशा ने अणुव्रत, जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान तीनों का समावेश व्यक्ति-व्यक्ति के अंदर हो, यह इच्छा जताई। इस अवसर पर समवेत रूप में अणुव्रत गीत का उच्चारण किया गया। साध्वी मानकुमारी व कीर्तिरेखा ने अपने विचार रखे। सुशीला जैन ने कृतज्ञता ज्ञापित की। सप्ताह के सभी कार्यक्रमों की सफलता में कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा।

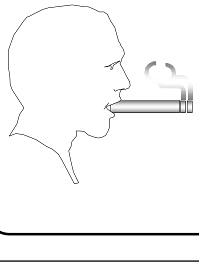

आपका मुँह
ऍश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

चरित्र-सम्पन्न व्यक्तित्व हर क्षेत्र में आगे आएं

लम्बोड़ी

मुनि संजयकुमार ने ''अनुशासन दिवस'' पर संभागियों को संबोधित करते हुए कहा परानुशासन स्थायी समाधान नहीं है। आत्मानुशासन आत्मसाक्षी से स्वीकार किया होता है और स्थायी समाधान भी है। मुनि प्रसन्नकुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा विद्यार्थियों में विनम्रता और सहिष्णुता के गुण विकसित हों। विनम्रता के अभाव में अनुशासन का सपना सफल नहीं होता। शिक्षक वर्ग निज पर शासन फिर अनुशासन जीवन में साकार करें। इस अवसर पर हाई स्कूल लाम्बोड़ी के प्रधानाध्यापक भंवरलाल पुरोहित व जेठाराम अध्यापक ने अपने विचार रखे। विद्यार्थियों ने अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किए।

● मुनि संजयकुमार ने अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा नैतिक और मानवीय मूल्यों की चेतना जगाने का काम अणुव्रत के माध्यम से हो रहा है। वर्तमान हालात में नैतिक निष्ठा कायम करना कठिन कार्य है। भ्रष्टाचार, क्रूरता तथा स्वार्थ चेतना के माहौल में नैतिक मूल्यों को जो स्थान मिल रहा है वह बहुत बड़ी बात है। अंधेरे में दीपक का काम कर रहा है। अणुव्रत की आत्मा को समझने के लिए दृष्टिकोण को बदलना बहुत जरूरी है। अणुव्रत के माध्यम से जन-जन को नैतिक संदेश मिलता रहे, हमारा यही प्रयास है।

● मुनिश्री के सान्निध्य में प्रतिदिन निर्धारित विषयों पर प्रवचन हुए। इस दौरान अहिंसा दिवस पर हिंसा के कारण और निवारण पर चर्चा हुई। पर्यावरण शुद्धि दिवस पर संयमः खलुः जीवनम् पर बल दिया गया। नशामुक्ति, निज पर शासन फिर अनुशासन और शिक्षा में क्रांतिकारी कदम जीवन विज्ञान, साम्प्रदायिक तनाव में सौहार्द भावना आदि आयामों पर अन्य बुद्धिजीवियों ने विचार रखे। विद्यार्थियों, शिक्षकों में और अन्य वर्गों में नैतिक व मानवीय मूल्यों की स्थापना का सघन प्रयास किए गये। आयोजन की सफलता में सभा मंत्री सोहनलाल जैन, अध्यक्ष तख्तमल धोखा, कोषाध्यक्ष कालूलाल खाब्या का सराहनीय श्रम रहा।

बीकानेर

साध्वी मनोहरां के सान्निध्य में उदासर सभा भवन में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वी मनोहरां ने कहा राष्ट्रीय संत आचार्य तुलसी ने इन्सान को इन्सान बनाने के लिए अणुव्रत का संदेश दिया। अणुव्रत आदमी को अच्छा आदमी बनाता है।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

साध्वी काव्यलता ने कहा अपने से अपना अनुशासन अणुव्रत की आधारशिला है। पहले व्यक्ति स्वयं सुधरे फिर राष्ट्र व समाज को सुधारें। साध्वीश्री ने अणुव्रत को नैतिकता की इमारत बताते हुए अणुव्रत की विस्तृत व्याख्या द्वारा सभी को प्रेरित किया।

अणुव्रत अधिवेशन के क्रम में अहिंसा दिवस, पर्यावरण शुद्धि दिवस, अनुशासन दिवस पर साध्वी काव्यलता के सान्निध्य में राजकीय माध्यमिक कन्या विद्यालय, राजकीय माध्यमिक छात्र विद्यालय, बीकानेर बाईपास पर एच.एम.एफ. पब्लिक स्कूल और ब्राइट कैरियर के भव्य प्रांगण में कार्यक्रम संपादित हुए। साध्वीश्री ने कहा अणुव्रत मानव को मानवता का प्रशिक्षण देता है। विद्यार्थी अणुव्रतों की चर्चा करते हुए साध्वीश्री ने कहा विद्यार्थियों को नशे से दूर रहना चाहिए। साध्वी मृदुप्रभा ने जीवन विज्ञान को जीवन जीने की कला बताते हुए अनेक छोटे-छोटे प्रयोग करवाए। साध्वीश्री के वक्तव्य से प्रभावित होकर उपस्थित विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अणुव्रत ग्रहण किये।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का समापन समारोह अम्बेडकर भवन में आयोजित हुआ। जिसमें उदासर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर अणुव्रत कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ ही साध्वियों द्वारा दिये गये अमूल्य श्रम की भी सराहना की। सप्ताह के सभी कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावी रहे। उद्‌बोधन सप्ताह की सफलता में सुरेन्द्र चौपड़ा, तिलोकचंद महनोत, कमल महनोत, नवरत्न सेठिया, विजयराज सेठिया, महिला मंडल की कार्यकर्ताओं, कन्या मंडल की कार्यकर्ताओं, सभा-तेयुप के कार्यकर्ताओं एवं अणुव्रत कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा। इस दौरान लगभग 500 विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अणुव्रत के संकल्प स्वीकार किये।

बीकानेर अंबेडकर भवन में आयोजित अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के शुभारंभ पर बच्चे प्रयोग करते हुए

जीवन-निर्माण की शिक्षा है जीवन विज्ञान

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

पाली

अणुव्रत समिति द्वारा मंडिया रोड सभा भवन में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत जीवन विज्ञान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अध्यापक एवं विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। साध्वी सुदर्शनाश्री ने कहा जीवन विज्ञान के प्रयोगों के माध्यम से व्यक्ति अपने भावों को बदल सकता है। वृत्तियों का परिमार्जन कर ग्रंथियों के स्रावों को भी बदल सकते हैं और व्यवहार को भी बदल सकते हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षर बनाना ही नहीं शिक्षित बनाना है। आज की शिक्षा विद्यार्थी को साक्षर तो बनाती है पर शिक्षित नहीं, मूर्खता मिटाती है पर मूढ़ता नहीं। बौद्धिक बनाती है आध्यात्मिक नहीं। व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से जीवन विज्ञान एक सशक्त माध्यम है। साध्वी पुनीतयशा ने प्रेक्षाध्यान के विविध प्रयोग करवाए। अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर ने अणुव्रत के नियमों की जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि कॉलेज के प्राचार्य सीताराम जोशी ने कहा जीवन विज्ञान मानव को मानव बनाने का अच्छा माध्यम है। बलिया स्कूल की प्रधानाचार्या नूतनबाला कपिला ने बताया कि विलक्षण प्रतिभा संपन्न बनने के लिए जीवन विज्ञान के प्रयोग जीवन में अति आवश्यक है। मुख्य अतिथि अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी पाली विनोदकुमार शर्मा ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा के क्षेत्र में जीवन विज्ञान के रूप में महत्वपूर्ण अवदान दिया है। डूंगरचंद चौपड़ा ने भी अपने विचार रखे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गुमानमल भंसाली ने साहित्य द्वारा अतिथियों का स्वागत किया। सज्जनराज बांठिया ने आभार व्यक्त किया। शुभारंभ महिला मंडल, कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। संचालन सुरेन्द्र दूगड़ ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक फूलचंद चौपड़ा ने शिक्षकों को जीवन विज्ञान की किट भेंट की।

जयपुर

मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने अणुविभा केन्द्र मालवीय नगर में आयोजित अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहा प्रत्येक व्यक्ति विभाव से दूर रहे, स्वभाव में रहे तो कभी साम्प्रदायिकता जन्म नहीं ले सकती। सम्प्रदाय बुरा नहीं है बुरी है साम्प्रदायिकता। धर्म कठघरों में बंध गया है। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, उपाश्रय, थानको में से धर्म को बाहर निकलना पड़ेगा। व्यक्ति की सोच को विकसित करना पड़ेगा तभी साम्प्रदायिकता पर काबू किया जा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व उपराज्यपाल जस्टिस् सुरेन्द्र भार्गव ने की। राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व चेयरमैन जे.एम. खान मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में एम.एन.आई.टी. के प्रो. मोहम्मद सलीम इंजीनियर, फादर विजय कुमार सिविल लाईन चर्च उपस्थित थे। कार्यक्रम में मद्रास, बैंगलोर, अहमदाबाद, सूरत, भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर, इंदौर, मंडिया, जीन्द, सोनीपत के भाई-बहनों ने भाग लिया।

जस्टिस सुरेन्द्र भार्गव ने कहा जब तक व्यक्ति व्यवहार को नहीं बदलता है तब तक समाज में बदलाव नहीं आ सकता। महावीर के अनेकांत और आचार्य तुलसी के अणुव्रत को स्वीकार कर लिया जाए तो साम्प्रदायिकता पर नियंत्रण किया जा सकता है।

मुख्य अतिथि जे.एम. खान ने कहा आचार्य तुलसी देश में पहले संत थे जिन्होंने संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवीय मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने जीवन भर शांति और भाईचारे का पैगाम दिया।

इस अवसर पर प्रो. सलीम खान, फादर विजय कुमार, मुनि गिरीशकुमार ने अपने विचार रखे। स्वागत भाषण विमला दूगड़ ने किया। संयोजन श्रीमती बांठिया ने किया। सभाध्यक्ष विजयकुमार सेठिया ने धन्यवाद व्यक्त किया।

केलवा

मुनि जतनकुमार के सान्निध्य में केलवा सभा द्वारा "सांप्रदायिक सौहार्द दिवस" का आयोजन हुआ। मुनि जतनकुमार ने सभा को संबोधित करते हुए कहा वर्तमान में धर्म से अधिक सम्प्रदाय को महत्व दिया जा रहा है, इसलिए कट्टरता पनप रही है। इसे रोकने के लिए सभी धर्मों में सांप्रदायिक सौहार्द का होना जरूरी है। मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने कहा यदि देश व विश्व में सांप्रदायिक सौहार्द व सहिष्णुता लानी है तो संप्रदाय मुक्त आचार संहिता का निर्माण करना होगा। एक ऐसी आचार संहिता जिसमें मानवीय एकता, सौहार्द व प्रामाणिकता की ही बात हो। इस अवसर पर सभाध्यक्ष देवीलाल कोठारी ने भी अपने विचार रखे। मोटी बाई कोठारी, कमला सामरा, पुष्पा मादरेचा, पुष्पा बोहरा ने अणुव्रत गीत का संगान किया। शुभारंभ मुनि जतनकुमार द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। संचालन मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने किया।

अणुव्रत समिति पाली द्वारा आयोजित जीवन विज्ञान दिवस पर बोलते हुए साध्वी सुदर्शनाश्री।

पर्यावरण शुद्ध रहेगा तो जीवन सुरक्षित रहेगा

राजसमंद

मुनि सुरेशकुमार के सान्निध्य में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजनगर में ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' का आयोजन हुआ। मुनि सुरेशकुमार ने सभा को संबोधित करते हुए कहा पर्यावरण ज्वलंत समस्या है। पर्यावरण शुद्ध नहीं रहेगा तो हमारा जीवन नरक समान बन जायेगा। बाहर के पर्यावरण के साथ-साथ भीतर का पर्यावरण भी दूषित हो रहा है। यदि भीतर का पर्यावरण शुद्ध हो जाये तो बाहर का पर्यावरण शुद्ध होने में देर नहीं लगेगी। इस अवसर पर मुनि संबोधकुमार ने अपने विचार रखे। आरंभ स्कूल की बालिकाओं ने 'संयममय जीवन हो' गीत का संगान किया। स्वागत विद्यालय के प्रधानाध्यापक संतोष शर्मा ने किया। महिला मंडल राजनगर की बहनों ने बदले युग की धारा अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि पर विचार रखे। अणुव्रत समिति राजसमंद के अध्यक्ष जीतमल कच्छारा ने कहा अणुव्रत संयम का दर्शन है, संयमित जीवन जीने से ही पर्यावरण शुद्ध रह सकेगा। मदनलाल धोका ने धन्यवाद ज्ञापन किया। संयोजन जीवन मादरेचा ने किया।

- 9 सितंबर 09 को जिला कारागृह में ''नशामुक्ति दिवस'' का आयोजन हुआ। इस अवसर पर कैदी भाइयों ने साध्वी कान्तियशा एवं साध्वी सुमनयशा के सम्मुख नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। साध्वी कान्तियशा ने कहा आप अपने जीवन को सुधारोगे एवं संकल्पपूर्वक अपने जीवन को बदलेंगे तो आपका जीवन उत्तम बनेगा और परिवार भी सुख शांतिपूर्वक रहेगा। साध्वी सुमनयशा ने अणुव्रत के मुख्य उद्घोष संयमः खलु जीवनम् को आवेश मुक्त करने का उपक्रम बताया। कार्यक्रम का प्रारंभ विनोद बड़ाला द्वारा ''संयममय जीवन हो'' अणुव्रत गीत से हुआ। इस अवसर पर जीतमल कच्छारा, भैरवलाल वागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए।

- 10 सितंबर 09 को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजनगर में आयोजित 'अनुशासन दिवस' पर सभा को संबोधित करते हुए कहा अनुशासन वहीं फलित होता है, जहां विद्यार्थी विनम्र हो। अणुव्रत आंदोलन के छोटे-छोटे संकल्पों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में सुधार ला सकता है। मुनि संबोधकुमार ने कहा विद्यार्थी आज पैसा कमाने के लिए अध्ययनरत है लेकिन पैसा बहुत कुछ होते हुए भी सबकुछ नहीं है। जीवन में आज सबसे ज्यादा आवश्यकता है अनुशासन की। क्योंकि अनुशसन से ही जिंदगी संवर सकती है। प्रारंभ महिला मंडल राजनगर की बहनों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। इस अवसर पर जीतमल कच्छारा, मुख्य अतिथि शिक्षाविद् बालकृष्ण गर्ग, विद्यालय के प्रधानाचार्य त्रिलोक मोहन पुरोहित ने अपने विचार रखे। आभार प्रकट भंवर वागरेचा ने एवं संयोजन जीवन मादरेचा ने किया।

सरदारशहर

अणुव्रत समिति सरदारशहर के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारंभ ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' के कार्यक्रम से हुआ। शासन गौरव साध्वी राजीमती ने कहा अणुव्रत जीवन का दर्शन है। मानवीय गुणों की आचार संहिता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे व्रतों को स्वीकार कर व्यक्ति अपने चरित्र को ऊंचा उठा सकते हैं। अणुव्रत समिति के मंत्री सम्पतराम सुराणा ने कहा अणुव्रत एक सम्प्रदायातीत धर्म है। इसने साम्प्रदायिक विद्वेष के वातावरण को साम्प्रदायिक सौहार्द में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- 7 सितंबर 09 को ''अणुव्रत दिवस'' साध्वी राजीमती के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा अणुव्रत व्यक्ति को अपने प्रति ईमानदार, प्रामाणिक और नैतिक बनने की बात कहता है। जब भीतर का विवेक जागेगा तभी तो बच्चा बड़ा होकर अच्छा इन्सान बनेगा, अच्छा व्यापारी- अधिकारी-वैज्ञानिक और डॉक्टर बनेगा। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी अपने अज्ञान को दूर करें, नशा और गुस्सा दूर करें। यदि अभिभावक, शिक्षक और विद्यार्थी तीनों एक साथ एक ही दिशा में आगे बढ़ें तो निश्चित ही समाज और राष्ट्र का भला होगा। इस अवसर पर सम्पतराम सुराणा ने विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के प्रयोग कराए। माया जामड़ एवं दीपक बुच्चा उपस्थित थे।

- चौथे दिवस ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर साध्वी राजीमती ने कहा वर्तमान में पर्यावरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। ओजोन की छतरी का छेद दिन-प्रतिदिन बड़ा होता जा रहा है और 'ग्लोबल वार्मिंग' बढ़ती जा रही है। अणुव्रत के प्रमुख उद्घोष संयममय जीवन को अपनाकर हम इस समस्या से बच सकते हैं। अनावश्यक का त्याग करो, आवश्यक की सीमा करो, यही पर्यावरण प्रदूषण से बचने का सबसे सुंदर समाधान है। अणुव्रत समिति के मंत्री सम्पतराम सुराणा ने पानी, बिजली के अपव्यय को रोककर, भोजन में जूठन न छोड़कर, यत्र-तत्र कूड़ा-कचरा न फेंककर तथा विवेक पूर्ण आचरण के द्वारा पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने की बात कही। पर्यावरण शुद्धि चित्रकला प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के सैकड़ों बच्चों ने अपने चित्र प्रस्तुत किये।

पुर-भीलवाड़ा

अणुव्रत समिति पुर-भीलवाड़ा के तत्वावधान में मुनि दर्शनकुमार एवं तपस्वी मुनि पारसकुमार के सान्निध्य तथा अणुव्रती कार्यकर्ता बैरवा बंधुओं के निर्देशन में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह निर्धारित कार्यक्रमानुसार निम्न स्थानों पर मनाया गया

- 5 सितंबर 09 को सांप्रदायिक सौहार्द दिवस पर बोलते हुए मुनि दर्शनकुमार ने कहा सभी धर्मों का सार मैत्री, करुणा और अहिंसा है। इस अवसर पर सोहनलाल पलोड़ ने अणुव्रत आचार संहिता को मानव मात्र के लिए अनुकरणीय बताया। सुवालाल सेन ने कहा कि संयममय जीवन ही अणुव्रत है।

- 6 सितंबर 09 को अहिंसा दिवस मनाया गया। मुनि दर्शनकुमार ने कहा मन, वचन, कर्म से किसी को कष्ट न पहुंचाना ही अहिंसा है। मुनि पारसकुमार ने कहा अहिंसा शांति एवं करुणा का पथ है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पं. दुर्गा शंकर व्यास ने अहिंसा प्रशिक्षण को जरूरी बताया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

निज पर शासन फिर अनुशासन

● 7 सितंबर 09 को अणुव्रत प्रेरणा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने छात्र-छात्राओं एवं मनुष्य मात्र को अणुव्रत के वर्गीय नियमों को जीवन में उतारने पर बल दिया। मुनिश्री ने कहा कि अणुव्रत जीवन शुद्धि का आंदोलन है। इस अवसर पर मुनि पारसकुमार, वरिष्ठ अध्यापक कन्हैयालाल शर्मा ने अपने विचार रखे।

● 8 सितंबर 09 को आयोजित 'पर्यावरण शुद्धि दिवस' पर मुनि दर्शनकुमार ने कहा वर्तमान में भावनात्मक एवं विचारात्मक तनाव से परिवार तथा समाज में तनाव व्याप्त है। मुनि पारसकुमार ने पर्यावरण शुद्धि को प्राणी मात्र के लिए जरूरी बताया।

● 9 सितंबर 09 को नशामुक्ति दिवस का विशाल समारोह बैरवा लोगों के बीच रखा गया। मुनि दर्शनकुमार ने कहा नशो से मनुष्य की दशा खराब हो जाती है। मुनि पारसकुमार ने कहा कि समाज की युवा पीढ़ी को आगे आना है और व्यसनमुक्त जीवन जीने के लिए संकल्पित होना है। इस अवसर पर लादूलाल टेलर, सोहनलाल ने विचार व्यक्त किये।

● 10 सितंबर को अनुशासन दिवस पर मुनि दर्शनकुमार ने विद्यार्थियों को अनुशासन में रहने की बात कही। मुनि पारसकुमार ने निज पर शासन फिर अनुशासन द्वारा जीवन को निर्मल एवं शांतिमय बनाने पर बल दिया। इस अवसर पर बंशीलाल असावा ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता हीरालाल खाब्या चित्तौड़गढ़ वालों ने की। इस अवसर पर भंवरलाल छीपा ने विचार रखे।

● 11 सितंबर 09 को जीवन विज्ञान दिवस का आयोजन कर्मचारी महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष मुरलीधर व्यास की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इसमें सेवानिवृत्त शिक्षक व सेवारत शिक्षकों ने भाग लिया। मुनि दर्शनकुमार ने कहा अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जीवन निर्माण एवं व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का अभियान है। मुनि पारसकुमार ने प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान के प्रयोगों पर प्रकाश डाला। नन्दलाल गुर्जर ने विचार व्यक्त किये। उद्‌बोधन सप्ताह के सभी आयोजनों में सभा के संरक्षक भगवतीलाल बोरदिया, ज्ञानचंद कोठारी ने स्वागत अभिनंदन किया। देवीलाल एवं नारायण बंधु बैरवा ने मुनिश्री की प्रेरणा से प्रतिदिन कार्यक्रमों का संचालन एवं आभार व्यक्त किया।

आमेट

● 6 सितंबर 09 को आयोजित ''अहिंसा दिवस'' पर मुनि तत्वरुचि 'तरुण' ने कहा अहिंसा धर्म की आत्मा और शांति की संजीवनी है। हिंसा तनाव और अशांति का मूल है। किसी का अहित चिंतन करना भी हिंसा है। वर्तमान में घरेलू हिंसा चिंता का विषय है। मनसा, वाचा, कर्मणा से किसी प्रकार की हिंसा नहीं करना अहिंसा है। मुनि भवभूति, मुनि कोमल, मुनि विकास ने भी अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि विकास अधिकारी पंचायत समिति गोपाल सिंह चौहान थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य वक्ता नेणचन्द्र हिरण ने की। मंगलाचरण रेणु मनीषा छाजेड़ ने किया। इस अवसर पर चांदमल छाजेड़, उत्तमचंद बोहरा, राजा बाबू ने भी अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन शिक्षाविद् मोहनलाल दक ने किया।

● 13 सितंबर 09 को मुनि तत्वरूचि 'तरुण' के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम में 3000 विद्यार्थियों ने अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किये। चांदमल छाजेड़ ने जानकारी देते हुए बताया कि सप्ताह के दौरान उन छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं सम्मान प्रदान किये गये, जिन्होंने अणुव्रत परीक्षाओं में भाग लिया। इस दौरान तुलसी अमृत विद्यापीठ, सुनील बाल निकेतन, विद्या निकेतन, मुम्बई मित्र मण्डल आदि स्कूलों के विद्यार्थी लाभान्वित हुए। प्रेक्षा प्रशिक्षण मिश्रीलाल चौधरी ने करवाया। इस अवसर पर उत्तमचंद बोहरा, दिनेश दूगड़, किशनलाल गेलड़ा, मुनि भवभूति, मुनि कोमल, मुनि विकास ने भी अपने विचार रखे। संयोजन चांदमल छाजेड़ ने किया।

कानोड (उदयपुर)

● 9 सितंबर 09 को तुलसी अमृत निकेतन संस्थान के अंतर्गत संचालित तुलसी अमृत उच्च माध्यमिक विद्यालय कानोड़ में ''नशामुक्ति दिवस'' मनाया गया। मुख्य अतिथि शान्तिचन्द्र बाबेल, अध्यक्ष शिवराज बाबेल ने छात्रों को व्यसनमुक्त जीवन जीने के बारे में एवं अणुव्रत के नियमों की जानकारी दी। प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। मुख्य अतिथि ने करीब 650 छात्र-छात्राओं को व्यसनमुक्ति का संकल्प दिलवाया। प्राचार्य भगवतीदास वैष्णव एवं उप-प्राचार्य तखतमल जैन ने नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा दी और अणुव्रत के नियमों का पालन कर जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

गोगुन्दा

● 10 सितंबर 09 को मगन ज्ञान मंदिर में ''अहिंसा दिवस'' मनाया गया। साध्वी विद्यावती ने कहा आज हर तरफ हिंसा का ही बोलबाला है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति अहिंसा की ही शरण में जाकर अपने दुखों को कम कर सकता है। साध्वी सूर्ययशा ने कहा अहिंसा को अपनाने वाला वीर होता है। अहिंसा प्रशिक्षक कन्हैया मोहन ने हिंसा के कारण व निवारण पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि शांतिलाल कुम्मठ थे। संचालन तथा आभार व्यक्त नेमीचंद सुराणा ने किया।

● 10 सितंबर 09 को सुख बाल मंदिर उ.प्रा. विद्यालय तथा सरस्वती पब्लिक स्कूल में ''अनुशासन दिवस'' का कार्यक्रम रखा गया। साध्वी सूर्ययशा ने कहा ''अनुशासन सफल जीवन का आधार है। सफल जीवन जीने के लिए अनुशासन में रहना सीखें। साध्वीश्री ने विद्यार्थियों को क्रोध न करना, नशा न करना व परीक्षा में नकल नहीं करने के संकल्प कराए। साध्वी कौशलप्रभा ने विद्यार्थियों को परिश्रमी बनने की प्रेरणा दी। साहित्यकार नेमीचंद सुराणा ने आदर्श जीवन पर आधारित गीत का संगान किया। सरस्वती पब्लिक स्कूल के प्रधानाध्यापक बंशीलाल मेघवाल ने विचार रखे। संचालन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के प्रभारी कन्हैया मोहन ने किया।

लोहसना बड़ा

अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा संचालित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र लोहसना बड़ा क्षेत्र के दस विद्यालयों में ''नशामुक्ति दिवस'' पर सैकड़ों विद्यार्थियों ने नशामुक्त जीवन जीने के संकल्प पत्र भरे। इस अवसर पर दूसरों को नशा न करने की भी प्रेरणा दी गयी। अहिंसा प्रशिक्षक के.जी. मूंदड़ा ने बताया केन्द्र पर सुबह योगासन, प्राणायाम एवं प्रेक्षाध्यान का अभ्यास तथा स्वरोजगार केन्द्र पर सिलाई प्रशिक्षिका मनीषा शर्मा द्वारा सिलाई का प्रशिक्षण दिया गया।

इंसान पहले इंसान फिर हिन्दू या मुसलमान

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

देशनोक

साध्वी उज्जवलरेखा ने ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर सभा को संबोधित करते हुए कहा अणुव्रत का अर्थ है, छोटे-छोटे संकल्प। यह एक मानवीय आचार संहिता है। वर्ण, रंग, लिंग, जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठ आत्म धर्म मानव धर्म है। जिसका उद्‌घोष है इंसान पहले इंसान फिर हिन्दू या मुसलमान है। अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों से भी बहुत बड़ी नैतिक क्रांति घटित की जा सकती है। अणुव्रत आचार संहिता का एक नियम है मैं निरपराध प्राणियों की हिंसा नहीं करूंगा। आत्महत्या, परहत्या, भ्रूणहत्या नहीं करूंगा। मैं मानवीय एकता में विश्वास रखूंगा। अणुव्रत एक नैतिक आंदोलन है। अणुव्रत आचार संहिता का पालन करने वाला ही अणुव्रती बन सकता है। साध्वी अमृतप्रभा ने कहा सच्ची और खरी कमाई नैतिक ईमानदारी, प्रेम, मैत्री, करुणा और सौहार्द का जीवन जीना सीखें। दुखियों के दुख को बांटना सहयोगी बनना, संकटों की राह को पार लगाने में सहारा बनना ही अणुव्रत है। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी स्मितप्रभा के मंगलाचरण से हुआ। उपस्थित संभागियों ने अणुव्रत नियमों का आचरण कर जीवन को सार्थक बनाने का संकल्प संजोया।

● अम्बे शक्ति विद्या पीठ में आयोजित कार्यक्रम में संभागी साध्वी उज्जवलरेखा ने 400 विद्यार्थियों को अणुव्रत आचार संहिता के नियमों से परिचित करवाया। इन नियमों पर चलने के लिए विद्यार्थियों ने संकल्प ग्रहण किया। साध्वी उज्जवलरेखा ने आगे कहा आज के विद्यार्थी देश के भावी कर्णधार हैं। भावी कर्णधारों पर बड़े-बड़े शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों एवं संत महंतों की दृष्टि टिकी हुई है। विद्यार्थी का जीवन प्रामाणिक नैतिक एवं व्यसनमुक्त होना चाहिए। अणुव्रत व्यक्ति सुधार से प्रारंभ होता है। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीवृंद के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी स्मितप्रभा ने बच्चों को स्मृति विकास, क्रोध विजय, मुद्रा निर्माण इत्यादि के प्रयोग करवाए। स्कूल के प्रधानाचार्य और आनन्द स्वामी ने साध्वीश्री का स्वागत किया। सभा के मंत्री संतोष सिपाणी ने जीवन विज्ञान की जानकारी दी। इस अवसर पर तिलोकचंद नाहर, भीखमचंद, शुभकरण, हड़मानमल केशरीचंद, नेमीचंद इत्यादि उपस्थित थे। आभार व्यक्त ओम स्वामी ने किया।

अम्बे शक्ति विद्यापीठ देशनोक के विद्यार्थियों को विद्यार्थी अणुव्रत संकल्प कराती साध्वी उज्जवलरेखा एवं साध्वी स्मितप्रभा

फतेहपुर-शेखावटी

अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा संचालित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र फतेहपुर शेखावटी के तत्वावधान में एवं अहिंसा प्रशिक्षक सतीश शाण्डिलय के निर्देशन में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का संचालन किया गया। 5 सितंबर 09 को महेश्वरी बाल विद्या मंदिर के सभागार में ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' प्रमोद महेश्वरी की अध्यक्षता में मनाया गया। मो. रूक्सान, आबिद कामेल, संजय सक्सेना एवं पार्वती ने अपने विचार रखे।

● सितंबर 09 को सिलाई संभाग खेमको के मोहल्ले में अहिंसा दिवस मनाया गया। अध्यक्षता वीणा राय ने किया। इस अवसर पर कोमल, पल्लवी राय ने अहिंसा गीत का संगान किया एवं शांति, सुनीता देवी ने अपने विचार रखे तथा अहिंसा संकल्प पत्र भरवाए।

● 7 सितंबर 09 को 'अणुव्रत प्रेरणा दिवस' मारूति उच्च मा. विद्या निकेतन में मनाया गया। अध्यक्षता वैद्य रामावतार शर्मा निदेशक बीकानेर संभाग ने की। संचालन अहिंसा बाल वाहिनी के संयोजक जयवीर ने किया। सतीश शाण्डिलय ने विद्यार्थी अणुव्रत संकल्पों की जानकारी दी।

● 8 सितंबर 09 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' शिवाजी विद्या मंदिर जांटी वाला रोड़ में मेवाराम प्रजापत की अध्यक्षता में मनाया गया। पूजा, शिवानी ने गीत प्रस्तुत किया। अतिथियों का सम्मान साहित्य द्वारा किया गया।

● 9 सितंबर 09 को नशामुक्ति दिवस रेलवे स्टेशन मरूधर चिल्ड्रन अकादमी में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता में सेवा निवृत प्रधानाचार्य सावित्री वर्मा ने की। उन्होंने उपस्थित संभागियों को नशा न करने का संकल्प करवाया।

● 10 सितंबर 09 को सरदारपुरा बस स्टेण्ड के प्रेरणा स्कूल में अनुशासन दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रवण कुमार ने की। युवा साहित्यकार कन्हैया लाल जांगीड़ ने कविता का संगान किया।

● 11 सितंबर 09 को साध्वी धनश्री के सान्निध्य में एवं माणकचंद सोनी की अध्यक्षता में ''जीवन विज्ञान दिवस'' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन लीलावती रायजादा स्मृति भवन में धूमधाम से मनाया गया। सभी कार्यक्रमों में शहर के किसान, मजदूर, विद्यार्थी एवं शिक्षकों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह को सफल बनाया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

बदले युग की धारा अणुव्रतों के द्वारा

गया

राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद बांके बाजार गया बिहार इकाई द्वारा 5 से 11 सितंबर 2009 तक अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह मनाया गया। इसी क्रम में राजकीय माध्यमिक विद्यालय भलुहार में वीरेन्द्र पाठक प्रभारी प्रधानाध्यापक की अध्यक्षता में कार्यक्रम रखा गया। इसमें शिक्षक-शिक्षिकाओं और सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया। 'बदले युग की धारा - अणुव्रतों के द्वारा' इत्यादि नारों से वातावरण मुखरित हो उठा। सुरेन्द्र पाठक ने विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को अणुव्रत के नियमों का पालन करने हेतु संकल्प करवाया। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

● इंडियन पब्लिक स्कूल में प्रधानाध्यापक राजीव कुमार की अध्यक्षता एवं सुरेन्द्र पाठक के मार्ग-निर्देशन में महाप्राण ध्वनि, प्रेक्षाध्यान पर विशेष चर्चा हुई। सरस्वती शिशु मंदिर बांके बाजार में कार्यक्रम की संपन्नता के साथ नित्य प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग कराए गए। रा. प्राथमिक विद्यालय भलुहार में रंजुकुमारी के मार्ग निर्देशन में कार्यक्रम संपन्न हुआ। ज्ञान द्वीप अकादमी के प्रांगण में प्राचार्य हरेन्द्र कुमार यादव के निर्देशन और सुरेन्द्र पाठक के संचालन में कार्यक्रम का समापन हुआ। जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने जीवन विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इसके अलावा प्राथमिक विद्यालय विनोबानगर, प्राथमिक विद्यालय करमडीह, बी.एस.सी. कोचिंग सेंटर बांकेबाजार आदि विद्यालयों में जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया।

● आचार्य धर्मेन्द्र, ने सभा को संबोधित करते हुए कहा शिक्षक कल्प वृक्ष हैं विद्यार्थी फल और अभिभावक उस वृक्ष की जड़। जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के माध्यम से जीवन का सर्वांगीण विकास संभव है। इस माध्यम से जनचेतना जागृति कर समाज को सुखी, शांत और तनावरहित समाज का निर्माण किया जा सकता है। जिसका आधार संयम है। मुनि सुखलाल, मुनि किशनलाल के संदेशों का वाचन किया गया।

● इस अवसर पर दलित ग्राम बेलागढ़ की महिलाओं ने नशामुक्त आदर्श ग्राम बनाने का संकल्प सुरेन्द्र पाठक के निर्देशन एवं जासोदेवी, मालतीदेवी, कमला देवी की अगुवाई में किया। ग्राम परसावां की सुशीला देवी, कुम्भी की मधुदेवी, शीलाकुमारी ने रोजगार की व्यवस्था हेतु स्वसहायता समूह का गठन कर अगरबत्ती निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ की और आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अपनी श्रद्धा निवेदित की। कार्यक्रम में महान गांधीवादी नेता पी.वी. राजगोपालन ने गरीबों तक इस कार्यक्रम को पहुंचाने का आह्वान किया।

नरवाना

मुनि विजयराज के सान्निध्य में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह मनाया गया। सभा भवन में मुनिश्री के सान्निध्य में निर्धारित विषयों पर उद्‌बोधन दिया गया। वक्ताओं ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। स्थानीय शिक्षण संस्थानों के अंतर्गत मुनि विजयराज ने आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, दीनानाथ मेमोरियल कान्वेंट स्कूल, डी.ए.वी. सेकेंडरी स्कूल, आदर्श बाल मंदिर हाई स्कूल, महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल के 3850 छात्र-छात्राओं एवं 206 अध्यापक-अध्यापिकाओं को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान का शिक्षण दिया गया। वर्गीय अणुव्रत एवं व्यसनमुक्ति के संकल्प पत्र भरवाए गये। कार्यक्रम के प्रचार में दैनिक पत्रों का योगदान अच्छा रहा। उद्‌बोधन सप्ताह अभियान के तहत मुनिश्री ने करीब 13 हजार संस्थानों के करीब 33 लाख छात्र एवं अध्यापकों को लाभान्वित किया एवं व्यसनमुक्ति के संकल्प कराए।

लुधियाना

इकबालगंज रोड सभा भवन में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने सभा को संबोधित करते हुए कहा अणुव्रत के नियमों को अपनाने में कोई जाति, संप्रदाय का भेद नहीं है। इसे हर व्यक्ति अपना सकता है, ग्रहण कर सकता है। इसी उद्देश्य को लेकर आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ किया। पूरे देश में पदयात्रा कर अणुव्रत के जरिए नैतिकता का शंखनाद फूंका। जहां नैतिकता होती है वहां संयम अपने आप आ जाता है। अणुव्रत आंदोलन के ग्यारह नियम हैं, जो सबके लिए समान रूप से उपयोगी है। व्यापारी, कर्मचारी, शिक्षक, विद्यार्थी इत्यादि वर्गों के लिए वर्गीय अणुव्रत हैं। इन नियमों में मानव को सही रूप में मानव बनाने की क्षमता है। इससे चरित्र की शक्ति बढ़ती है। मुनिश्री की प्रेरणा से कई व्यक्ति अणुव्रती बने। मुनि उदितकुमार ने प्रासंगिक विचार रखे। मुनि विजयकुमार ने गीत का संगान किया। डॉ. राजीव गुप्ता ने स्लाइड के माध्यम से नशामुक्ति के उपायों पर चर्चा की। उन्होंने नशे से होने वाली हानियों की जानकारी देते हुए सभी से नशामुक्त रहने का आह्वान किया। डॉ. लाजपतराय ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। अभय सिंघी ने स्वागत किया। सभा के रायचंद चौरड़िया, बंशीलाल सुराणा ने अतिथियों का सम्मान किया।

टोहाना

साध्वी हुलासकुमारी के सान्निध्य में उद्‌बोधन सप्ताह का कार्यक्रम स्थानीय सभा भवन में रखा गया। साध्वीश्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा विश्व को जितना खतरा अणुबम से नहीं उससे भी अधिक खतरा आज धार्मिक उन्माद से है। विश्व में सांप्रदायिक सौहार्द हेतु सभी धर्मों के प्रति हमारा दृष्टिकोण समभाव वाला होना चाहिए। दूसरे धर्मों या सम्प्रदाय से हमारा मतभेद तो हो सकता है, परन्तु मनभेद नहीं होना चाहिए। हमें केवल अपने धर्म को ही श्रेष्ठ नहीं मानना चाहिए। अपितु सभी धर्मों के प्रति आदर की भावना होनी चाहिए। साध्वी ज्योतिश्री ने कहा मानव मूल्यों के उत्थान के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन चलाया था। अणुव्रत आंदोलन किसी सम्प्रदाय का प्रतीक न होकर राष्ट्रहित व मानव कल्याण का सशक्त मार्ग है। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान अवतार सिंह नांगला ने कहा मानवता को जोड़ने के लिए ऐसे कार्यक्रमो का आयोजन बहुत जरूरी है। हमें अपना धर्म जितना प्यारा लगता है उतना ही सत्कार दूसरे धर्मों का भी करना चाहिए तभी हम सच्चे मानव बन सकते हैं। पंडित भूपेन्द्र शर्मा ने कहा कि धर्म और सम्प्रदाय दोनों एक भी हैं और भिन्न भी हैं। धर्म वृक्ष का तना है और सम्प्रदाय शाखाएं। शाखाएं भिन्न-भिन्न हैं परंतु उनका आलम्ब तना ही है। इसी प्रकार सम्प्रदाय भिन्न-भिन्न हैं परन्तु सभी का उद्देश्य एक ही है।

अनुशासन व्यक्ति और समाज का मूलाधार है

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तहसील संचालक जगन्नाथ बंसल ने कहा साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए सामाजिक समरसता अति आवश्यक है। निरंकारी मिशन के मनोहरलाल मनचंदा ने कहा मानव के कई-कई रूप हैं। हमें व्यक्ति के सही स्वरूप को पहचानना चाहिए और भगवान की प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए। भारत विकास परिषद् के कुश भार्गव ने कहा यह एक विडम्बना है कि हमने राष्ट्र धर्म को भुला दिया है और अन्य धर्म के लिए साम्प्रदायिक हिंसा या तनाव भी फैला रहे हैं। साम्प्रदायिकता समाप्ति के लिए वैचारिक क्रांति की आवश्यकता है। पादरी मनोहर राजा ने कहा हमारा चिंतन और कर्तृत्व सकारात्मक होना चाहिए तथा हमें दूसरे के विचारों का सम्मान करना आना चाहिए तभी मानव का कल्याण हो सकता है। ब्रह्मकुमारी बहन सुषमा ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान युग में सम्प्रदायिक सौहार्द की भावना की बहुत आवश्यकता है। हम एकता के नारे लगाते हैं परंतु उसे जीवन में अपनाते नहीं। आज अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। सभा द्वारा सभी वक्ताओं का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन राकेश जैन ने किया।

तोशाम

साध्वी कुन्थुश्री के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह धूमधाम से मनाया गया।

● 5 सितंबर 09 को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' अग्रसेन स्कूल में आयोजित हुआ। साध्वी कुन्थुश्री ने लगभग 1500 विद्यार्थियों एवं 50 शिक्षक-शिक्षिकाओं को संबोधित करते हुए कहा शिक्षा में तीन बातों भौतिक, मानसिक तथा भावात्मक का विकास आवश्यक है। आज सबसे ज्यादा आवश्यकता है साम्प्रदायिक सौहार्द को बनाये रखने की। अतः सभी धर्मों के धर्मगुरु आपस में मिलकर शांति, समता, मैत्री और करुणा की धारा बहाएं।

● 6 सितंबर 09 को स्थानीय विद्यालय में ''अहिंसा दिवस'' मनाया गया। साध्वी कुन्थुश्री ने कहा वर्तमान में बढ़ती हुई हिंसा को रोकना चाहिए। अहिंसा परम धर्म है। अहिंसा में विश्वास रखने वाले सभी व्यक्ति संकल्प करें कि हम कभी कोई भी हिंसा नहीं करेंगे। साध्वी सुमंगलाश्री ने ''संयममय जीवन हो'' गीत का संगान किया।

● 7 सितंबर 09 को आयोजित ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर साध्वी कुन्थुश्री ने अणुव्रत की उपयोगिता बताते हुए कहा समाज में चरित्र विकास हेतु संगठन बल होना बहुत जरूरी है। इसलिए इस क्षेत्र में अणुव्रत समिति का गठन किया जाना चाहिए।

● 8 सितंबर 09 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' साध्वी कुन्थुश्री के सान्निध्य में सभा भवन में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा व्रत एक सुरक्षा कवच है जिस प्रकार मकान में छत जरूरी है, उसी प्रकार जीवन में व्रत जरूरी है। व्रत का मतलब है संयम करना। इस अवसर पर प्रो. देवेन्द्र कुमार जैन (हिसार) ने पर्यावरण शुद्धि पर अपने विचार रखे।

● 9 सितंबर 09 को ''नशामुक्ति दिवस'' पर बोलते हुए साध्वी कुन्थुश्री ने कहा नशा नाश का द्वार है। फैशन और व्यसन दोनों पतन के कारण हैं। साध्वीश्री ने नशे से होने वाली हानियों की चर्चा करते हुए नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी।

● 10 सितंबर 09 ''अनुशासन दिवस'' पर बोलते हुए साध्वीश्री ने कहा अनुशासन व्यक्ति और समाज का मूलाधार है। अनुशासन के अभाव में कोई भी व्यक्ति, परिवार, समाज समुचित विकास नहीं कर सकता।

● 11 सितंबर 09 को ''जीवन विज्ञान दिवस'' का आयोजन जिंदल पब्लिक स्कूल में हुआ। शुभारंभ साध्वी कंचनरेखा के उद्बोधन से हुआ। साध्वी कुन्थुश्री ने जीवन विज्ञान को सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया बताते हुए इसके सैद्धांतिक और प्रायोगिक पक्ष की चर्चा की। इस अवसर पर लगभग 500 विद्यार्थियों ने अणुव्रत संकल्प स्वीकार किये। उक्त कार्यक्रमों की आयोजना में तेरापंथी सभा, अणुव्रत समिति एवं युवक परिषद् का सराहनीय श्रम रहा।

घाटकोपर

अणुव्रत समिति घाटकोपर के तत्वावधान में साध्वी कनकरेखा के सान्निध्य में सभा भवन में उद्बोधन सप्ताह का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शुभारंभ महिला मंडल की बहनों मधु बाफणा, मंजू बड़ाला व कुसुम तातेड़ के मंगलाचरण से हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. हुबनाथ पांडे, विशेष अतिथि सभाध्यक्ष भंवरलाल कर्णावट उपस्थित थे। अतिथियों का सम्मान साहित्य द्वारा किया गया।

साध्वी कनकरेखा ने कहा आर्थिक स्पर्धा और स्वार्थवादी मनोवृत्ति हिंसा के कारणों को बढ़ावा दे रही है। इसे रोकने के लिए अहिंसा की दीपशिखा को हाथ में लेना होगा। अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों से अहिंसा को तेजस्वी बनाना होगा। मुख्य अतिथि ने कहा अहिंसा को रोकने के लिए सबसे पहले हिंसा के कारणों को समझना होगा।

● 6 सितंबर 09 को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर साध्वी गुणप्रेक्षा ने विषय प्रवेश पर विचार रखे। साध्वी केवलप्रभा ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए।

● 8 सितंबर 09 को ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर वक्तव्य प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। निर्णायक मुंबई सभा के मंत्री दिनेश सुतरिया, कुमुद कच्छारा, जयश्री बड़ाला थे। मुख्य अतिथि राजेश मरलेचा, इंदरचंद डोसी एवं विशेष अतिथि महेन्द्र दूगड़ व हनुमान गेलड़ा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मिश्रीलाल बोहरा ने की। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

● 9 सितंबर 09 को ''अनुशासन दिवस'' मनाया गया। इसमें अनुशासन की महत्ता को साध्वीश्री ने उजागर किया।

● 10-11 सितंबर 09 को व्यसनमुक्ति दिवस मनाया गया। साध्वीश्री ने हिन्दी हाई स्कूल के लगभग 400 विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा जीवन विकास का महत्वपूर्ण अंग है शिक्षा। शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण के लिए जीवन विज्ञान की शिक्षा बहुत जरूरी है। इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों ने विद्यार्थी नियमों को स्वीकार करते हुए व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। सभी कार्यक्रमों की सफलता में अणुव्रत समिति मुंबई के कार्याध्यक्ष अर्जुन बाफणा व मंत्री विनोद कोठारी का सराहनीय योगदान रहा।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

अणुव्रत को जीने का प्रयास करें

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा निकाली गयी व्यसनमुक्ति रैली में जवेरीलाल संकलेचा एवं विद्यार्थी

अहमदाबाद

5 सितंबर 09 को गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री ने कहा देश की आजादी के साथ ही आचार्य तुलसी ने एक नैतिक आंदोलन की शुरूआत की। वह है अणुव्रत आंदोलन। आचार्य तुलसी ने जन-जन में नैतिक चेतना जगाने हेतु एक लाख किलोमीटर की पदयात्रा की। अणुव्रत आंदोलन मानवीय मर्यादा का पर्याय है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने जीवन को अणुव्रत के माध्यम से जीने का प्रयास करें। भायंदर के महापौर नरेन्द्र मेहता ने कहा व्यक्ति समाज से बड़ा नहीं होता है। हमें अपने समाज व देश की सेवा में तन, मन से सदा तैयार रहना चाहिए। मुख्य अतिथि भंवरलाल चौपड़ा ने भ्रूणहत्या नहीं करने, संकल्पपूर्वक हिंसा नहीं करने का आह्वान किया। इस अवसर पर जवेरीलाल संकलेचा, सज्जनराज सिंघवी, महेन्द्र चोपड़ा, गौतमचंद सजलानी ने विचार रखे। संयोजन विमल बोरदिया ने किया।

● 6 सितंबर 09 को आयोजित अहिंसा दिवस पर सभा को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री ने कहा अहिंसा में अमिट मानसिक बल होता है। अहिंसक व्यक्ति दीर्घ जीवन, सौंदर्य, सुख शान्ति और प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी वाणी से कड़े शब्द न बोलें। मनसा-वाचा-कर्मणा से करुणा व प्रेम का व्यवहार रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. मंगलदास भाई पटेल, धर्मेन्द्र जैन, जवेरीलाल संकलेचा, गौतम सजलानी, विमल बोरदिया, महेन्द्र चौपड़ा ने विचार रखे। मुख्य अतिथि मंगलदास भाई पटेल थे। संयोजन नानालाल कोठारी ने किया। आभार प्रकट अशोक दूगड़ ने किया। इस अवसर पर व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

● 7 सितंबर 09 को आयोजित ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री ने कहा वर्तमान शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी का एकांगी विकास होता है, लेकिन भावनात्मक विकास पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जीवन विज्ञान शिक्षा पद्धति से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। साध्वी डॉ. सुधाप्रभा ने जीवन विज्ञान पर महत्वपूर्ण विचार रखे एवं तनावमुक्ति हेतु योगाभ्यास कराया। इस अवसर पर उपस्थित लगभग 700 विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अणुव्रत नियम स्वीकार किए। जवेरीलाल संकलेचा एवं अशोक दूगड़ ने विद्यार्थी अणुव्रत नियमों की तस्वीर विद्यालय में भेंट की। कार्यक्रम में गौतमचंद सजलानी, महेन्द्र चौपड़ा, छीतरमल मेहता, रजनीकांत मोदी उपस्थित थे। संयोजन वंदना भटेवरा ने किया। इस अवसर पर व्यसनमुक्ति रैली का भी आयोजन किया गया।

● 9 सितंबर 09 को प्रगति हिन्दी हाईस्कूल खोखरा में साध्वी अणिमाश्री के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ। जवेरीलाल संकलेचा ने स्वागत भाषण में कहा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी लोग अशांत हैं। शान्ति, धैर्य, विनम्रता के लिए जीवन विज्ञान की शिक्षा आवश्यक है। इस अवसर पर लगभग 400 विद्यार्थियों ने विद्यार्थी अणुव्रत नियम स्वीकार किये। इस अवसर पर वरिष्ठ कार्यपालक श्री के.बी. कुरकी, प्रधान ट्रस्टी अंजुला जैन उपस्थित थे। संयोजन उम्मेद कोचर ने किया।

● 11 सितंबर 09 को उद्‌बोधन सप्ताह के कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री ने कहा जीवन में श्रम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। समाज की इकाई है व्यक्ति। व्यक्ति स्वस्थ होगा तो समाज व राष्ट्र भी स्वस्थ बनेगा। इसीलिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। जीवन शैली को स्वस्थ एवं संतुलित बनाने के लिए नियमित आसन, प्राणायाम एवं संतुलित आहार से तन स्वस्थ बनता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि नियमित योग, प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करें। इससे तन एवं मन दोनों स्वस्थ बन सकते हैं।

सूरत

साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में सभा भवन सिटीलाइट सूरत में ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में विभिन्न धर्म-संप्रदायों के धर्म प्रतिनिधियों ने भाग लिया। साध्वी सुमनश्री ने कहा कि जब-जब जाति-पांति, पंथ और संप्रदाय मनुष्य-मनुष्य के बीच भेद की दिवारें खड़ी हो जाती हैं तब विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। यदि जीवन को सुखमय बनाना है तो सभी को समान दृष्टि से देखना होगा। सभी धर्मों में सौहार्द भाव बढ़ता रहे, यही समय की पुकार है। इस अवसर पर ब्रह्मकुमारी अवनि बहन, पारसी संप्रदाय की ओर से जमशेद दोटीवाला, सिख संप्रदाय से अजित सिंह खालसा, राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से गुलाम मुस्तफा हकीम, राम मंदिर ट्रस्ट के चन्द्र प्रकाश तनेजा ने 'साम्प्रदायिक सौहार्द के विकास में हमारी भूमिका विषय पर सारगर्भित विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति सूरत के मंत्री 'अणुव्रत सेवी' अर्जुन मेड़तवाल ने किया। कार्यक्रम में सुवालाल बोल्या, अलकाबेन सांखला, सरोज बांठिया, अनुराग कोठारी, रूपचंद सेठिया, विनोद बांठिया, ललित जैन, सुशील सुराणा उपस्थित थे। कांतिभाई मेहता ने स्वागत भाषण दिया। आभार प्रदर्शन सुरेन्द्र मरोठी ने किया।

जीवन का सूत्र है न्यूनतम लेना, अधिकतम देना

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

बैंगलोर

6 सितंबर 09 को आयोजित ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर बोलते हुए साध्वी कीर्तिलता ने कहा जिसके जीवन में हृदय को मोहने वाला आध्यात्मिक प्रेम हो, जन-जन को तृप्त करने वाली अमृत बूंद हो वही जीवन परिपूर्ण जीवन होता है। जीवन का अर्थ केवल जन्म लेना, युवा बनना व बूढ़ा बन कर मर जाना ही नहीं। जीवन का छोटा-सा सूत्र है न्यूनतम लेना, अधिकतम देना एवं श्रेष्ठतम जीना है। शुभारंभ दीपक कोठारी द्वारा मंगलाचरण से हुआ। साध्वी श्रेष्ठप्रभा ने जीवन विज्ञान के प्रयोग कराए। मुख्य वक्ता सिद्धार्थ शर्मा ने अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान पर विचार रखे। इस अवसर पर साध्वीश्री के सान्निध्य में दम्पत्ति शिविर भी रखा गया। साध्वी कीर्तिलता ने दाम्पत्य जीवन को शांतिमय बनाने के सूत्र बताए। साध्वी पूनमप्रभा ने आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी पर सवाल पूछे। मुख्य वक्ता सुरजीत ललवाणी ने विचार रखे। संचालन सुमित्रा बरड़िया ने किया।

● 7 सितंबर 09 को कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' बी.बी.यू.एल. जैन विद्यालय में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बाबूलाल पारेख ने की। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जुगराज सोलंकी ने आभार व्यक्त करते हुए अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों की जानकारी दी। कान्ता लोढ़ा ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि दीपचंद नाहर ने विभिन्न घटनाओं के माध्यम से अणुव्रतों के नियमों का पालन करने पर जोर दिया। अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। आभार ज्ञापन प्रकाश बाबेल ने किया। संचालन सुशील चौरड़िया ने किया।

● 8 सितंबर 09 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' का आयोजन न्यू आक्सफोर्ड इंग्लिश स्कूल में साध्वी कीर्तिलता के सान्निध्य में सभा भवन में हुआ। साध्वीश्री ने कहा विचारों का प्रदूषण खतरनाक होता है। धुएं का प्रदूषण तो हमारे स्वास्थ्य को ही बिगाड़ता है लेकिन विचारों का प्रदूषण संपूर्ण जीवन को बिगाड़ देता है। इसलिए जरूरी है विचारों को शुद्ध रखें। साध्वी श्रेष्ठप्रभा ने विद्यार्थियों को पर्यावरण शुद्धि के तरीके बताए। अध्यक्षता चेतना केन्द्र के अध्यक्ष बहादुर सेठिया ने की। प्रमुख अतिथि बी.एम. कॉलेज के प्रिंसिपल इसफाक अली ने विचार रखे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जुगराज सोलंकी ने स्वागत किया। आभार व्यक्त शान्ति संकलेचा ने एवं संचालन सुरेश नाहर ने किया।

● 9 सितंबर 09 को नशामुक्ति दिवस का आयोजन साध्वी कीर्तिलता के सान्निध्य में सी.बी. भंडारी हायर सेकेन्डरी स्कूल किलारी रोड में किया गया। प्रारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। जुगराज सोलंकी ने स्वागत किया। साध्वी पूनमप्रभा ने नशे के कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला। प्रमुख अतिथि उत्तमचंद भंडारी, दयानंद स्वामी थे। साध्वी कीर्तिलता ने कहा अणुव्रत का उद्देश्य संयम ही जीवन है की विस्तार से चर्चा की। कन्या मंडल एवं महिला मंडल द्वारा रोचक नाटिका प्रस्तुत की गयी। इस अवसर पर विद्यालय को अणुव्रत आचार संहिता का पट्ट भेंट किया गया। संचालन सुमित्र बरड़िया ने एवं आभार ज्ञापन हस्तीमल हिरण ने किया।

● 9 सितंबर 09 को ''नशामुक्ति दिवस'' सी.बी. भंडारी हायर सेकेण्डरी स्कूल किलारी रोड में मनाया गया। प्रारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। जुगराज सोलंकी ने सभी का स्वागत किया। साध्वी पूनमप्रभा ने कारण विलासिता, सोसायटी, कुसंगति और अज्ञान को नशे का कारण बताया। प्रमुख अतिथि उत्तमचंद भंडारी अध्यक्ष आदिनाथ जैन श्वे. मंदिर चिकपेट, दयानंद स्वामी एवं पी. सुब्बण्णा ने नशामुक्ति एवं अणुव्रत आंदोलन की विस्तृत व्याख्या की। साध्वीश्री ने अभिभावकों को आह्वान किया कि संस्कारों के निर्माण के लिए स्वयं को भी संस्कारों के निर्माण के लिए संस्कारी बनाना होगा। साध्वीश्री ने अणुव्रत के प्रमुख घोष संयम ही जीवन है की विस्तार से चर्चा की। इस अवसर पर एक रोचक नाटिका प्रस्तुत की गयी। अतिथियों का सम्मान कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति, सभा, तेयुप, महिला मंडल द्वारा किया गया। विद्यालय में अणुव्रत पट्ट भेंट किया गया। संचालन सुमित्रा बरड़िया ने किया। आभार व्यक्त हस्तीमल हिरण ने किया।

● 10 सितंबर 09 को डी.वी.वी. गुजराती शाला मेजेस्टिक सर्कल में आयोजित ''अनुशासन दिवस'' पर साध्वी शान्तिलता ने कहा बचपन से ही जो बालक-बालिका अनुशासन का पाठ सीख लेते हैं और इसका प्रयोग अपने जीवन में करते हैं वे अवश्य ही आगे जाकर सफलता प्राप्त करते हैं। साध्वी श्रेष्ठप्रभा ने मन को शांत रखने के लिए बच्चों को श्वास के प्रयोग बताए। शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। जुगराज सोलंकी ने स्वागत भाषण किया। प्रमुख अतिथि कुशालभाई शाह, प्रिंसिपल मंजूनाथ माया, हस्तीमल हिरण एवं एच.जी. पारेख ने विचार रखे। संचालन सुमित्रा बरड़िया ने तथा आभार ज्ञापन महावीर खाबिया ने किया।

कर्नाटक प्रादेशिक अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित नशामुक्ति दिवस पर बोलते मुख्य अतिथि

अणुव्रत जीवन की मुस्कान है

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

कोलकाता

9 सितंबर 09 को साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में सभा भवन में पश्चिम बंग अणुव्रत समिति के तत्वावधान ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' का आयोजन हुआ। प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वी कनकश्री ने कहा अणुव्रत एकमात्र ऐसा अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन है जो नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु निरंतर सक्रिय है। अणुव्रत असांप्रदायिक दृष्टिवाला आंदोलन है। यह मानव धर्म है। अणुव्रत मानवीय एकता का प्रतीक है। अणुव्रत का प्रसिद्ध घोष है इंसान पहले इंसान - फिर हिन्दू या मुसलमान। मुख्य अतिथि विधिवेत्ता साहित्यकार सोहनलाल कोचर ने आचार्य तुलसी के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाते हुए युगीन परिस्थितियों में अणुव्रत को अत्यंत उपयोगी बताया। साध्वी मधुलेखा व शांतिप्रभा ने साध्वी कनकश्री की रचना ''अणुव्रत का उजाला फैले देश भर में'' का मधुर स्वरों में संगान किया। समिति के अध्यक्ष हीरालाल सुराणा, मंत्री श्यामसुंदर सुराणा, सहमंत्री प्रदीप सिंघी ने अणुव्रत के संबंध में विचार रखे। कार्यक्रम की सफलता में भंवरलाल सिंघी, हीरालाल सुराणा एवं अन्य कार्यकर्ताओं की सक्रिय भूमिका रही। संचालन सुनील नाहटा ने किया।

● 10 सितंबर 09 को आयोजित ''नशामुक्ति दिवस'' पर बोलते हुए साध्वी कनकश्री ने कहा जो व्यक्ति जितने बड़े पद पर होता है, उसे उतना ही अधिक जागरूक रहना होता है और हर दृष्टि से संयमित रहना होता है। क्योंकि संयम पद और कद की गरिमा बढ़ाता है। नशा एक अवांछित आदत है। नशा करने वाला कभी शान से नहीं जी सकता, अपितु वह सब दृष्टियों से अपना नाश करता है। स्वास्थ्य का नुकसान करता है, पैसे का नुकसान करता है और पारिवारिक स्नेह और सौहार्द का भी विनाश करता है। इस अवसर पर साध्वीश्री ने प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के सघन प्रयोग करवाए। कार्यक्रम का आयोजन सभा भवन में हुआ।

● 11 सितंबर 09 को ''अनुशासन प्रेरणा दिवस'' पर अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन महासभा भवन में किया गया। साध्वी कनकश्री ने कहा वास्तव में नैतिक जीवन का पहला बोध पाठ अनुशासन ही है। जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं पर, मन और इन्द्रियों पर अनुशासन स्थापित नहीं कर सकता, वह नैतिकता और पवित्रता का जीवन नहीं जी सकता। इसलिए अणुव्रत व्यक्ति-व्यक्ति में अनुशासन की चेतना जगाता है। अनुशासन जीवन का सार है। आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं जो अच्छा शिष्य बन कर रहना जानता है, वही अच्छा गुरु बन सकता है। हकीकत यह है कि अनुशासन जितना छोटों के लिए जरूरी है, उतना ही बड़ों के लिए भी जरूरी है। आचार्य तुलसी का यह कथन 'निज पर शासन - फिर अनुशासन' कितना सारपूर्ण है।

चेन्नई

मुनि जिनेश कुमार के सान्निध्य में तमिलनाडु अणुव्रत समिति चेन्नई के तत्वावधान में उद्बोधन सप्ताह निर्धारित कार्यक्रमानुसार मनाया गया। प्रथम दिवस ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' का शुभारंभ कन्या मंडल द्वारा 'बदले युग की धारा' अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। समिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष संपतराज चोरड़िया ने स्वागत भाषण किया। मुनि जिनेशकुमार ने कहा अणुव्रत जीवन की मुस्कान है। अणुव्रत का उद्देश्य है नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना और चारित्रिक विकास। अणुव्रत एक आचार संहिता ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण जीवन जीने का दर्शन है। किसी भी सम्प्रदाय व जाति का व्यक्ति अणुव्रत के नियमों को स्वीकार कर सकता है। इस अवसर पर मुनि परमानंद, राकेश खटेड़ ने अपने विचार रखे।

● दूसरे दिन ''अहिंसा दिवस'' पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा 'अहिंसा परमोधर्म' है। अहिंसा सब प्राणियों का कल्याण करने वाली है। प्राणी मात्र के प्रति संयम ही अहिंसा है। अहिंसा की साधना से ही शांति संभव है। मुनि परमानंद ने कहा कि चरित्र के विकास का महत्वपूर्ण उपक्रम है अणुव्रत। अहिंसा जीवन का सुरक्षा कवच है।

● तीसरे दिन ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा अणुव्रत के नियमों को अपनाकर व्यक्ति स्वस्थ व सुखी जीवन जी सकता है। अणुव्रत व्यक्ति के जीवन को जागरूक, सुव्यवस्थित व संयमित बनाने की दिशा में कारगर उपाय है।

● चौथे दिवस ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा विचारों की पवित्रता एवं विवेक चेतना का जागरण कर पर्यावरण शुद्धि की दिशा में सार्थक प्रयत्न किया जा सकता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम पर्यावरण शुद्धि का पाठ पढ़ाते हैं।

● पंचम दिवस ''नशामुक्ति दिवस'' पर मुनिश्री ने कहा नशा नाश का द्वार है। नशे का आदी व्यक्ति क्षणिक सुख के लिए अनन्त काल के दुखों को निमंत्रण दे देता है और पाशविक वृत्तियों व हिंसक प्रवृत्तियों से नरक के द्वार तक पहुंच जाता है। नशामुक्त बनने के लिए सकारात्मक चिंतन व मजबूत मनोबल अपेक्षित है। मुनि परमानंद ने कहा अगर जीवन में कुछ कर गुजरना है तो

मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के शुभारंभ समारोह में मंचासीन अतिथिगण

नशामुक्त बनना होगा। इस अवसर पर नशामुक्ति प्रदर्शनी भी लगाई गयी।

● छठे दिवस ''अनुशासन दिवस'' पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा जीवन विकास के अनेक मूल्यों में एक मूल्य है अनुशासन। अनुशासन की डोर में बंधा व्यक्ति ही विकास पथ पर अग्रसर हो सकता है। मुनि परमानंद ने भी अपने विचार रखे।

● अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का समापन ''जीवन विज्ञान दिवस'' के साथ हुआ। मुनि जिनेशकुमार ने कहा श्रेष्ठ जीवन जीने की कला सिखाता है जीवन विज्ञान। जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम द्वारा बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक व भावात्मक विकास संभव है। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ का यह अवदान आज के युग में रामबाण सिद्ध हो रहा है। जीवन विज्ञान आधुनिक, वैज्ञानिक शिक्षा पद्धति है जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर सकती है। मुनि परमानंद ने कहा जीवन विज्ञान इंसान को कैसे जीना? कैसे कार्य करना? व कैसे सोचना? अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पतराज चोरड़िया ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की। प्रातःकालीन साप्ताहिक कार्यक्रम का मंच संचालन महेन्द्र मांडोत एवं पुष्पा हिरण ने संयुक्त रूप से किया। इस साप्ताहिक कार्यक्रम का उद्घाटन 4 सितंबर 09 को अणुव्रत महासमिति दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने किया। सप्ताह के दौरान रात्रिकालीन कार्यक्रमों के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। सम्पतराज चोरड़िया एवं अन्य कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा। प्रतियोगिताओं का संयोजन रेखा धोका, अशोक खतंग, सम्पतराज चोरड़िया आदि ने किया। प्रत्येक कार्यक्रम में मुनिवृंद द्वारा मंगल पाथेय प्रदान किया गया।

वैशाली कॉलेज पी.जी. रोड सिकंदराबाद में आयोजित जीवन विज्ञान दिवस पर संभागी निर्मला बैद एवं छात्र-छात्राएं

असाम्प्रदायिक और शाश्वत धर्म है अणुव्रत

हैदराबाद

5 सितंबर 09 को सभा के तत्वावधान में एवं साध्वी सम्यप्रभा के सान्निध्य में आयोजित ''साम्प्रदायिक सौहर्द दिवस'' पर साध्वी सत्यप्रभा ने कहा देश की आजादी के बाद नैतिक उत्थान के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत आंदोलन न सम्प्रदाय है न कोई परंपरा। अणुव्रत आंदोलन एक असाम्प्रदायिक और शाश्वत धर्म है। साध्वी कुलप्रभा ने कहा दुनिया में सम्प्रदाय सदा रहे हैं, आगे भी रहेंगे। आवश्यकता है कि संप्रदाय सापेक्षता को समझा जाए तथा इससे जुड़ी संकीर्णता को दूर किया जाये।

● 6 सितंबर 09 को ''अहिंसा दिवस'' पर साध्वीश्री ने कहा हर चीज के दो पहलू होते हैं पक्ष और विपक्ष। अपेक्षा है हिंसा को समझने की। इसकी सम्यक् जानकारी के बाद ही अहिंसा का आचरण संभव है।

● 7 सितंबर 09 को ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर साध्वी ध्यानप्रभा ने कहा अणु का अर्थ है छोटा और व्रत का अर्थ है नियम। अणुव्रत अर्थात् छोटे-छोटे नियम। मानव जीवन की न्यूनतम आचार संहिता। मनुष्य मात्र को संयम, सादगी, नैतिकता और मानवता की ओर बढ़ने की प्रेरणा।

● 8 सितंबर 09 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर अपने विचार रखते हुए साध्वी श्रुतप्रभा ने कहा पर्यावरण के दो रूप हैं। प्रथम बाह्य पर्यावरण प्रकृति के असंतुलन से बाहरी प्रदूषण और आंतरिक प्रदूषण जीवन मूल्यों का ह्रास। पर्यावरण सुरक्षा का सर्वाधिक उपयोगी सुरक्षा कवच है संयम। संयम के द्वारा ही हम इस समस्या से मुक्ति पा सकते हैं।

● 9 सितंबर 09 को ''नशामुक्ति दिवस'' पर कहा समाज को विकृत करने वाली बुराई है नशा। नशे का प्रारंभ किसी कोण या मोड़ से हो इसका अंत भयानक है।

● 10 सितंबर 09 को आयोजित ''अनुशासन दिवस पर कहा मर्यादा एवं अनुशासन का उल्लंघन भयानक होता है। अनुशासन रेखा पर चलने वाला व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र ही सही दिशा में विकास कर सकता है। अनुशासन के अभाव में जीवन बिखर जाता है।

0 11 सितंबर 09 को ''जीवन विज्ञान दिवस'' का आयोजन साध्वी सत्यप्रभा के सान्निध्य में वैशाली कॉलेज में छात्र-छात्राओं के मध्य किया गया। कॉलेज के विद्यार्थियों ने कई प्रश्न पूछे जिनका समाधान किया गया। इस अवसर पर निर्मला बैद, प्रो. बहुगुणा, उप प्रधानाचार्य ओमप्रकाश, कॉलेज के चेयरमैन जॉन रवीन्द्र, प्रिंसिपल मेरी सुहासिनी, सुधा रानी, हनुमानमल बैद ने विचार रखे। साध्वी ध्यानप्रभा ने कहा जीवन जीने की संपूर्ण कला का नाम है जीवन विज्ञान। समापन समारोह में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए साध्वी सत्यप्रभा ने कहा 'संयमः खलु जीवनम्' संयम जीवन की अनमोल उपलब्धि है। संयम से ही व्यक्ति सुखी, स्वस्थ एवं चरित्रवान बन सकता है। अपने से अपना अनुशासन एवं जीवन निर्माण का महत्वपूर्ण उपक्रम है अणुव्रत। इसके 11 नियमों का पालन करने वाला कोई भी व्यक्ति अणुव्रती बन सकता है।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह

राजस्थान प्रादेशिक अध्यक्ष द्वारा संगठन यात्रा

28 अगस्त 09। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सम्पत सामसुखा, मंत्री मनोहर बापना एवं कोषाध्यक्ष शुभकरण चोरड़िया ने भीलवाड़ा से प्रस्थान कर राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अणुव्रत समितियों से संपर्क कर अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम रखा। यह दल रात्रि 9 बजे लाडनूं पहुंचा, जहां अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट एवं उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर से भेंट कर भावी योजनाओं पर चर्चा की। सुजानगढ़ में अणुव्रत समिति के कार्यकर्ताओं से मिले और भावी कार्ययोजना पर चर्चा की।

सुजानगढ़ में विराजित मुनि अशोककुमार के दर्शन कर पुनः वापिस लाडनूं आए। अणुव्रत समिति छापर के कार्यकर्ताओं से मिलने हेतु छापर पहुंचे। वहां मुनि विनयकुमार 'आलोक' एवं अन्य मुनियों के दर्शन किए और एक कार्यक्रम में भाग लिया। अपनी संगठन यात्रा के क्रम में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा ने पड़िहारा पहुंचकर सभा भवन में विराजित साध्वीवृंद के दर्शन किए और पड़िहारा की समिति को क्रियाशील बनाने की दिशा में धर्मचंद गोलछा से मुलाकात कर कई विवशताओं पर चर्चा की। सामसुखा ने समिति को सक्रिय बनाने हेतु प्रचार-प्रसार सामग्री दी और अधिक से अधिक सशुल्क सदस्य बनाए जाने पर जोर दिया। अगले पड़ाव के लिए रतनगढ़ आए। वहां मुनि राजकरण स्वामी से भेंट की और अन्य पदाधिकारियों का परिचय करवाया। अपनी संगठन यात्रा का प्रायोजन बताते हुए क्षेत्र में कार्यरत अणुव्रत समिति से ज्यादा से ज्यादा लोगों को अपने साथ जोड़ने का आह्वान किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों से अनेक मुद्दों पर अणुव्रत की गतिविधियों को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। उसके बाद किशनगढ़ अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेश जामड़ के साथ मुलाकात की। जयपुर अणुविभा केन्द्र पहुंच मुनि विनयकुमार आलोक के दर्शन किए। वहां कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। जी.एल. नाहर एवं अविनाश नाहर के आवास पर मुलाकात की तथा कार्यकर्ताओं से भेंट कर चर्चा की।

अजमेर के कार्यकर्ताओं से समिति की गतिविधियों की जानकारी ली। अजमेर समिति को अणुव्रत विद्यार्थी के बोर्ड दिए, जिन्हें क्षेत्र के विद्यालयों में लगवाने का आह्वान किया। 10 सितंबर 09 को अणुव्रत समिति उदयपुर के निमंत्रण पर वहां आयोजित पर्यावरण शुद्धि दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए। साध्वी कंचनप्रभा 'लाडनूं' का आशीर्वचन प्राप्त किया।

10 सितंबर 09 सायं उदयपुर से चल नाथद्वारा पहुंचे। यहां विराजित मुनि कुलदीपकुमार एवं मुनि मुकुलकुमार के दर्शन किए। साथ ही मुनिवृंद से इस क्षेत्र में अणुव्रत समिति गठन करने की चर्चा की। मुनिवृंद ने तत्काल मदन धोका को सभा भवन बुलवाया। वहां अनेक लोगों से समिति के गठन की चर्चा हुई। इस हेतु एक संयोजक एवं दो उपसंयोजक चुने गये और विधिवत तौर पर समिति के गठन का निर्णय लिया गया। क्षेत्र के विद्यालयों के लिए अणुव्रत विद्यार्थी पट्ट भी वितरित किए गए। उसी दिन नाथद्वारा से कांकरोली प्रस्थान किया। कांकरोली एवं राजनगर के दौरे में मदनलाल धोका का विशेष सहयोग रहा।

सभा भवन में साध्वी सोमलता से आशीर्वाद ले वहीं कार्यसमिति के सदस्य, लाड़ देवी से संगठन यात्रा पर बातचीत हुई। राजनगर में मुनि सुरेशकुमार से अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु निवेदन किया। रात्रि 10 बजे अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट के निवास पर आए, जहां राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष जी.एल. नाहर भी मौजूद थे। यहां से पुनः रवाना हो रात्रि 12.30 बजे भीलवाड़ा पहुंचे। 15 सितंबर 09 को गंगापुर अणुव्रत समिति के निमंत्रण पर गंगापुर पहुंचे। यहां साध्वी सम्यक्प्रभा के सान्निध्य में आयोजित अणुव्रत गीत गायन प्रतियोगिता के कार्यक्रम में भाग लिया। अध्यक्षता नगर पालिका गंगापुर की अधिकारी सीता वर्मा ने की। कार्यक्रम के अंत में स्थानीय समिति द्वारा प्रादेशिक अध्यक्ष सम्पत सामसुखा, मंत्री एवं सुश्री सीता वर्मा का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। इस दौरान गंगापुर में चल रहे अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के कार्यक्रमों में भी शिरकत की।

नैतिक उन्नति का आधार है नैतिक विचार। विचार से आचार प्रभावित होता है और आचार का प्रभाव विचारों पर होता है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति

10 जनवरी 2009 को अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र सांजरवास के विद्यार्थियों के साथ बैठक एवं राजकीय कन्या उच्च विद्यालय सांजरवास में नशामुक्ति एवं भ्रूणहत्या पर व्याख्यान एवं फल वितरण का क्रम रहा।

9 फरवरी 09 को लायन्स क्लब, तोशाम के साथ मिलकर लिटिल हार्ट कान्वेन्ट स्कूल में विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन हुआ। संस्था अध्यक्ष डॉ. जे.बी. गुप्ता द्वारा 300 मरीजों की जांच एवं जे.बी. गुप्ता अस्पताल के सौजन्य से दवाइयां दी गयी।

16 मार्च 09 को लायन्स क्लब, तोशाम एवं मनोहरी देवी शिक्षण संस्थान के साथ मिलकर आंखों की जांच एवं चिकित्सा शिविर में 450 मरीजों की स्वास्थ्य जांच और 50 मरीजों का ऑप्रेशन हेतु चयन किया गया। 24 मार्च 09 को धनाना गांव में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन। 310 रोगियों का ईलाज 80 मरीजों की ई.सी.जी., 150 मरीजों की शुगर जांच एवं निःशुल्क दवा वितरण का क्रम रहा।

12 अप्रैल 09 को अणुव्रत महासमिति की चुनाव शुद्धि यात्रा की अगुवाई। शहर में अनेक स्थानों पर चुनाव शुद्धि सम्बन्धी सामग्री वितरित की गयी।

20 मई 09 नशामुक्ति, अणुव्रत आचार संहिता एवं विद्यार्थी अणुव्रत के दस हजार स्टीकर मुद्रण कराकर वितरण किया गया।

22 जून 09 आचार्य महाप्रज्ञ के जन्म दिवस पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन। 140 मरीजों का ईलाज, 50 मरीजों की ई.सी.जी. एवं 70 मरीजों की शुगर जांच करा दवाइयों का वितरण।

25 जुलाई को विशाल हृदय चिकित्सा शिविर का आयोजन। सैकड़ों मरीजों की इको कॉर्डियोग्राफी एवं ई.सी.जी. तथा निःशुल्क दवा वितरण।

2 अगस्त 09 सभा भवन में साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में लॉयन्स क्लब तोशाम के साथ नशामुक्ति, भ्रूणहत्या निषेध एवं पर्यावरण शुद्धि पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन। इसमें 15 स्कूलों के 90 बच्चों ने भाग लिया। 27 अगस्त को चौदहवीं अणुव्रत निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का क्षेत्रीय स्तर पर आयोजन। जिसमें 90 बच्चों ने भाग लिया।

5 सितंबर 09 को वैश्य मॉडल स्कूल में साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में लगभग 300 विद्यार्थियों के बीच अणुव्रत प्रेरणा दिवस एवं अणुव्रत प्रश्न मंच का आयोजन किया गया। 6 सितंबर 09 को सभा भवन में साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में सांप्रदायिक सौहार्द दिवस मनाया गया। इसमें महामंडलेश्वर स्वामी करुणागिरि, संत निरंकारी मंडल के स्थानीय प्रभारी बलदेव राज नागपाल, योगाश्रम की मुक्ता बहन, ब्रह्मकुमारी नारायणी व अनिता बहन तथा महंत जगन्नाथ ने भाग लिया। 7 सितंबर अनुशासन दिवस का आयोजन श्रीराम पाठशाला में साध्वी लाभवती व साध्वी कोमलप्रभा के सान्निध्य में रखा गया। इसमें 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। 8 सितंबर 09 को जनसेवा विद्या विहार में लगभग 800 विद्यार्थियों की उपस्थिति में पर्यावरण शुद्धि दिवस मनाया गया। इस अवसर पर पर्यावरण प्रश्नोत्तरी का आयोजन एवं पौधा रोपण किया गया। 9 सितंबर 09 को जिला कारागार में साध्वी लाभवती एवं साध्वी कोमलप्रभा द्वारा नशामुक्ति दिवस पर प्रभावशाली व्याख्यान एवं प्रायोगिक टिप्स दिए गए। सैकड़ों कैदियों ने नशा छोड़ने का संकल्प लिया। 10 सितंबर 09 को सभा भवन में भारती पब्लिक स्कूल के लगभग 200 विद्यार्थियों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं की उपस्थिति में अहिंसा दिवस का आयोजन। विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया गया और 'एक मिनट' प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

12 सितंबर 09 को सभा भवन में साध्वी जिनबाला के सान्निध्य में भजन संध्या का आयोजन। इसमें बीकानेर (राजस्थान) की गायिका बहनें विजयलक्ष्मी एवं कुसुम जैन सहित अनेक कलाकारों ने धार्मिक भजन प्रस्तुत कर कार्यक्रम को संगीतमय बना दिया। भावी योजनाओं के अंतर्गत रक्तदान शिविर, चिकित्सा शिविर, प्रेक्षाध्यान शिविरों की आयोजना एवं नशामुक्ति अभियान को सघनता से जारी रखने का निर्णय लिया गया।

भिवानी। हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति का 19 वां वार्षिक अधिवेशन साध्वी कुन्थुश्री के सान्निध्य में तोशाम में बाबा मुंगीया मंदिर के प्रांगण में संपन्न हुआ। इसमें हरियाणा के 20 क्षेत्रों के सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। साध्वी कुंथुश्री ने कहा अणुव्रत चरित्र विकास, नैतिक मूल्यों और अहिंसक मूल्यों की पुनर्स्थापना का अभियान है। रघुबीर जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति की वर्ष 2010 में रजत जयंती मनायी जा रही है।

मुख्य अतिथि डॉ. महेन्द्र कर्णावट, अध्यक्ष अणुव्रत महासमिति ने परिवारों में बढ़ती हिंसा एवं घटते आपसी स्नेह के संबंध पर चिंता व्यक्त की।

स्वागत भाषण हरियाणा प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र कुमार जैन ने किया। लाजपतराय जैन ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अणुव्रत सेवी बाबू राजेन्द्र प्रसाद जैन समाज सेवा पुरस्कार हिसार के डॉ. हिम्मतसिंह को, निर्मला देवी जैन महिला कार्यकर्ता पुरस्कार टोहाना की वीणा जैन को, मा. कबूलचंद जैन प्रेक्षा पुरस्कार भिवानी के भदंत जगन्नाथ को, पारसदास जैन नवयुवक कार्यकर्ता पुरस्कार तोशाम के पवन जैन को तथा सुनहरी देवी जैन महिला पुरस्कार जींद की ओमपति जैन को दिया गया। अणुव्रत के लिए समर्पित पुरस्कार बलराज सिंगला को दिया गया। भिवानी अणुव्रत समिति को हरियाणा की सर्वश्रेष्ठ समिति का पुरस्कार मंत्री रमेश बंसल ने ग्रहण किया। सुरेन्द्रकुमार जैन ने विकलांगों की सहायता हेतु आर्थिक राशि प्रदान की। इस अवसर पर शहर के विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। संचालन रमेश बंसल ने किया।

60वां वार्षिक अणुव्रत अधिवेशन संपन्न

अणुव्रत अनैतिकता की प्रतिरोधात्मक शक्ति के रूप में विकसित हो

लाडनूं, 5 अक्टूबर। अणुव्रत महासमिति का 60 वां वार्षिक अणुव्रत अधिवेशन 2, 3 एवं 4 अक्टूबर 2009 को जैन विश्व भारती लाडनूं में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अधिवेशन के उद्घाटन अवसर पर जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा अहिंसा और नैतिकता एक-दूसरे के पूरक हैं। आज अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाया जा रहा है। अहिंसा दिवस की पूरी कार्ययोजना होनी चाहिए। कार्ययोजना के बिना अहिंसा को प्रतिष्ठापित करने की योजना सिद्ध नहीं होगी। अहिंसा और अणुव्रत अलग नहीं हैं। अणुव्रत का अर्थ है नैतिकता। अणुव्रत आचार संहिता का प्रथम नियम "मैं निरपराध प्राणी की हत्या नहीं करूंगा" का संकल्प ही सही रूप में अहिंसक चेतना को व्यापक बना सकता है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा गांधी दर्शन आज के युग की मांग है। दोनों दर्शनों ने मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाई है। आचार्य तुलसी ने धर्म को सम्प्रदायवाद के कटघरे से निकाल कर अणुव्रत के रूप में मानव धर्म की प्रतिष्ठापना की।

इस अवसर पर युवाचार्य महाश्रमण ने परिषद के सभी सदस्यों को अहिंसक चेतना का संकल्प दिलाया।

पूर्व मुख्य सचिव राजस्थान सरकार मीठालाल मेहता ने कहा आचार्य तुलसी भविष्यद्रष्टा थे। उन्होंने समाज का कायापलट करने के उद्देश्य से अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया।

विशिष्ट अतिथि बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल ने कहा अणुव्रत के माध्यम से समाज चरित्रवान बने और देश का विकास हो।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने वर्ष 2008 का अणुव्रत लेखक पुरस्कार डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी को दिये जाने की घोषणा की। इस अवसर पर अनेक कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया।

अधिवेशन के दूसरे दिन आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा व्यक्ति का मूल्य सत्य की खोज करने में है। सत्य दो प्रकार का है सामाजिक और शाश्वत। अणुव्रत शाश्वत सत्य है, क्योंकि इसका त्रैकालिक महत्व है। आज आवश्यकता है कि अणुव्रत अनैतिकता की प्रतिरोधात्मक शक्ति के रूप में विकसित हो। आज समाज में भ्रष्टाचार, कदाचार, मिलावट आदि बुराइयों को रोकने के लिए अणुव्रत आवश्यक है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा सभी कार्यो को एकजुट रूप में प्रस्तुत करने की जरूरत है ताकि अणुव्रत का जनोपयोगी कार्य लोगों के सामने आ सके।

कार्यक्रम का शुभारंभ हर्षा और मनीषा के द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा अणुव्रत जाति, वर्ग, नस्ल, समुदाय से ऊपर है। अणुव्रत से विद्यार्थी, शिक्षक, नेता, डॉक्टर, इंजीनियर सभी वर्गों के लोग जुड़े हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि अणुव्रत का प्रचार-प्रसार युवाओं एवं राजनेताओं में होना चाहिए, ताकि सभी देशवासी अणुव्रत से परिचित हो सकें।

अणुविभा के अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी ने कहा आदमी को बेहतर बनाने में अणुव्रत दर्शन ही कारगर है।

इस अवसर पर मुंबई डोंबिवली अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र को महादेवलाल सरावगी फाउंडेशन के आर्थिक सौजन्य से आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण पुरस्कार दिया गया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया के हाथों डोंबिवली अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के संयोजक आलोक भट्टाचार्य को यह पुरस्कार प्रदान किया गया।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अहिंसा प्रशिक्षण के स्वरूप पर प्रकाश डाला।

बालोतरा अणुव्रत समिति को अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष स्व. सीताशरण शर्मा की स्मृति में दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ अणुव्रत समिति सम्मान प्रदान किया गया।

अधिवेशन के समापन समारोह का शुभारंभ मुनि महावीर द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ।

अणुव्रत महासमिति के महामंत्री मगनलाल जैन ने प्रतिवेदन की प्रस्तुति दी तथा डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने आगामी वर्ष को अणुव्रत विकास वर्ष घोषित करने हेतु आचार्य महाप्रज्ञ से निवेदन किया।

अणुव्रत प्रवक्ता राजेन्द्र सेठिया ने अणुव्रत कार्यक्रमों की प्रशंसा की।

अणुव्रत महासमिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष निर्मल रांका कोयम्बटूर ने भविष्य में सभी के सहयोग से अणुव्रत के स्वर को तीव्र करने का संकल्प व्यक्त किया।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा दक्षिण भारत अणुव्रत का मुख्य केन्द्र बने। आचार्य तुलसी ने दक्षिण भारत में पैदल अणुव्रत यात्रा कर अणुव्रतमय बनाया था। समय के साथ-साथ दक्षिण भारत में अणुव्रत का स्वर कुछ मंद हुआ है। अब अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका जो दक्षिण भारत से हैं, के नेतृत्व में दक्षिण भारत में अणुव्रत का स्वर बुलंद होगा और दक्षिण भारत एक बार पुनः अणुव्रत आंदोलन का केन्द्र बनेगा। आचार्यश्री ने कहा कि अणुव्रत महासमिति के निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने गत 4 वर्षो में अणुव्रत का बहुत अच्छा कार्य किया है। युवाचार्य महाश्रमण ने अणुव्रत को जन-जन तक पहुंचाने की बात कही।